@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

September 2017

Rotary

Vol.35, Issue 3 Price Rs 35 | Annual Subscription Rs 420

सैम एफ ओवरी

(1941–2017)

BETTER SERVICES PVT. LTD.

www.better.in

CREATIVE DESIGNS

EXCELLENT QUALITY

GREAT PRICES

LICENSEE SINCE 1975

OFFICIAL LICENSED VENDOR OF ROTARY INTERNATIONAL

HEADQUARTER ADD. : Better Services Pvt. Ltd., 22 Meghna, 64 S. V. Road, Santacruz West, Mumbai 400 054, India

Tel : 022 2649 1143 / 2649 1826 • Email : better@betterservices.org • Website: www.better.in

विषयसूची

14 अलविदा सैम ओवरी

रोटरी इंटरनैशनल के बेहद प्यारे और कद्दावर नेता के अंतिम संस्कार का भावपूर्ण और हृदयविदारक वृत्तांत।

20 मंडल EMG तथा CSR चैयरों के लिये एक कार्यशाला

एक प्रशिक्षण सत्र जिसने मंडल ईएमजी और सीएसआर अध्यक्षों को मंडल और क्लब परियोजनाओं के लिए उपलब्ध धन के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद की।

34 रोटरेक्टरों का रिचार्ज

रोटरेक्ट नेतृत्वकर्ताओं के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम को इसलिए बनाया गया ताकि वे ऐसे श्रेष्ठ रोटेरियन बने जो समुदायों में सकारात्मक बदलाव ला सकें।

24 गवर्नर के रूप में सफल होने का मंत्र

एक विविध प्रशिक्षण कार्यक्रम में पीआरआईपी के. आर. रविन्द्रन डीजीओं और डीजीईओं को पालन करने के लिए दिशा-निर्देश देते है एवं पार की जाने वाली चुनौतियां बताते है।

32 एक टी.बी. मुक्त भारत की ओर

पीआरआईडी वाई पी दास ने दिल्ली में एक विशेष प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया जिसमें रोग से निपटने की जरूरत पर मंडल गवर्नरों को संवेदनशील बनाया गया।

40 मौखिक स्वच्छता पर मंडल 3232 ने गिनीज़ रिकॉर्ड बनाने का प्रयास किया

इस मेगा समारोह में, 23,600 बच्चों की मदद से रो ई मंडल 3232 ने मौखिक स्वच्छता और सामूहिक हाथ धोने के बारे में जागरूकता फैलाई।

46 उन्हें फिर से अपने पैरों पर खड़ा करना

नवजात शिशुओं में क्लबफुट विकृति का पता लगाने के लिए CURE इंटरनेशनल के साथ दिल्ली के क्लुबों ने की पार्टनर्सशिप।

60 काउच है, तो यात्रा होगी

अर्जेन्टीना भर में यात्रा के दौरान लेखक के कॉच सर्फिंग एडवेंचर का एक वर्णन।

42 मलूटी के गौरव का पुनरूद्धार

अस्सी बरस के गोपालदास मुखर्जी की वजह से झारखंड के एक गांव मलुटी के मूर्ति के मंदिरों को एक नया रूप मिला।

कवर पे : स्वर्गीय रोटरी अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष एलेक्ट सैम ओवरी।

चित्र: के विश्वनाथन

एस कृष्णाप्रतीश द्वारा रूपरेखा

उड़ीसा का कौशल विकास

उड़ीसा के कुशल युवाओं को प्रेरित करता हुआ, लेख *उड़ीसा का कौशल विकास* उत्कृष्ट है। उड़ीसा की युवा पीढ़ी मेधावी एवं काम और प्रगति के प्रति समर्पित है। आईटी और अन्य क्षेत्रों के अलावा, बहुत से शिक्षित एवं प्रतिभावान उड़ियाई आईएएस और आईपीएस जैसी लोक सेवाओं में है।

दुर्भाग्यवश, उड़ीसा के पास कुशल युवाओं का उपयोग करने एवं उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में नियुक्त करने के लिए बहुत अधिक संसाधन नहीं है। यह लेख उड़ीसा के युवाओं को प्रेरणा एवं परिकल्पना प्रदान करता है। *रोटरी समाचार* केवल एक पत्रिका नहीं है बल्कि यह विविध विषयों को पढ़ने एवं उनके बारे में ज्ञान को बढ़ाने के लिए एक सुविधाजनक पुस्तकालय भी है। बधाईयाँ।

पीआरएन चंद्रा मौली, रोटरी क्लब बेरहामपुर मिडटाउन - मंडल 3262

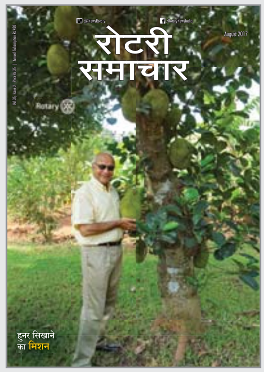

उड़ीसा के 'संत' मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने सुब्रतो बागची को उड़ीसा कौशल विकास प्राधिकरण का अध्यक्ष चुन (अगस्त, कवर स्टोरी) एकदम सही निर्णय किया है। जैसा कि पूर्व आईटी प्रमुख स्वयं कहते है, यह उनके लिए एक 'मनचाहा कार्य' है, इससे अधिक हम क्या आशा कर सकते है?

निजी क्षेत्र में भी, सेंचूरियन ग्रुप, उसकी ग्रामतरंग परियोजना के माध्यम से, अद्भुत एवं प्रशंसनीय कौशल विकास कार्यक्रमों का संचालन कर रहा है।

सुजाता पटनायक, उड़ीसा

उड़ीसा के कौशल विकास में सुब्रतो बागची एक बढ़िया काम कर रहे है। वर्तमान सरकार के मिशनों में से एक मिशन यह है कि प्रशिक्षण एवं कौशलों को प्रदान करने, विशेषरूप से गरीबों को, के लिए कौशल विकास को युद्ध स्तर पर किया जाना चाहिए। इस लेख से रोटेरियन उनके मंडलों में समान प्रकार की परियोजनाओं को करने एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में कौशल विकास केन्द्रों को स्थापित करने के लिए प्रेरित होने चाहिए।

टी. डी. भाटिया, रोटरी क्लब दिल्ली मयूर विहार, मंडल 3012

अगस्त अंक में उड़ीसा का कौशल विकास लेख इस बात का श्रेष्ठ उदाहरण है कि कैसे भारत के प्रत्येक राज्य में कौशल विकास को औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से रोटरी क्लबों द्वारा सरकार के साथ साझेदारी में आयोजित किया जा सकता है। ये परियोजनाएं रोटरी की युवा सेवा मार्ग के अंतर्गत आती है।

ग्रीक दर्शनशास्त्रियों अरस्तू और प्लेटो द्वारा बताए गए आत्मसंयम, बुद्धिमानी, धैर्य और विनम्रता के चार गुणों को सुब्रतो बागची ने उनके कौशल विकास केन्द्रों में एक संपूर्ण सकारात्मक रवैये के साथ अंतर्निविष्ट किया है।

हालाँकि, चार तरीका परीक्षण को लागू करके, रोटरी नेतृत्वकर्ता भी इस कौशल विकास को युवा सेवा के मार्ग से ले जा सकते है।

के. एम. के. मूर्ती, रोटरी क्लब सिकंदराबाद - मंडल 3150

सब कुछ दिमाग में है

मैं 82 साल का हूँ और मैं कुछ 18 वर्ष पहले रोटरी से जुड़ा। मैं जुलाई अंक के *हम सभी समय यात्री है* लेख से प्रभावित हुआ। लेखक संध्या राव कहती है, वाइन को याद कीजिये: जितनी पुरानी होती है उतना अच्छा उसका स्वाद होता है। या अचार, जितनी देर गलता है, उतना अधिक स्वादिष्ट होता है। *एंटनी एंड क्लियोपैट्रा* में शेक्सपियर के शब्दों का उल्लेख करते हुए: उम्र उसे नहीं मुरझा सकती, ना ही रिवाज़ उसकी अनंत विविधता को पुराना कर सकते है, वह सही कहती है, आप 'युवा' हो सकते जब आप 'बूढ़े' हो या 'बूढ़े' हो सकते जब आप 'युवा' हो। आप जन्म लेते है, ''आप जीते है और आप समय की यात्रा करते है... यह सब एक दिमाग का खेल है, है ना?'' कितना सुन्दर सिद्धांत है; मैं संध्या के लेखन की प्रशंसा करता हूँ और पूरा निबंध बहुत अच्छे से लिखा गया था।

रॉबिन गुप्ता द्वारा किताब की समीक्षा में (*दी मैरिज दैट शूक इंडिया*), मैं यह देखकर हैरान था कि महात्मा गाँधी एक ऐसे कुटिल नेता के रूप में सामने आए जिन्होंने इस बात की वकालत की कि हिन्दुओं को मुस्लिमों से शादी नहीं करना चाहिए। यह पढ़कर अच्छा लगा कि रूटी पेटिट ने शीर्ष अंग्रेजी अफसरों के सामने झुकने से माना कर दिया था। शायद यह इस्लाम की शिक्षा के कारण था जिसके तहत अल्लाह के अलावा मुस्लिमों को किसी के भी सामने नहीं झुकना चाहिए। यह मुझे 1980-81 की एक घटना की याद दिलाता है जब मैं तमिलनाडू में ग्रामीण विकास विभाग में एक अफसर था। पार्टी के संसद एवं विधायक हमेशा मुख्यमंत्री के पैर छूते थे, केवल एक युवा मुस्लिम मंत्री को छोड़कर। उसे 'दूसरों के समान आचरण' नहीं करने के लिए पद से हटा दिया गया।

एस. मुनियांदी,
रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट - मंडल 3000

किताब समीक्षाओं का अभिनन्दन

मुझे *मिस्टर एंड मिसेज़ जिन्नाह* की समीक्षा प्यारी लगी। लेकिन किताब स्पष्ट रूप से इस बात का उल्लेख करती है कि रूटी जिन्नाह की मौत के आधिकारिक कारण को व्यक्त करने वाला कोई चिकित्सीय रिकॉर्ड नहीं है। 50 वर्ष बाद

कांजी द्वारकादास ने यह घोषणा की कि उन्होंने आत्महत्या की थी जिस पर, फिर भी, विचार नहीं किया जा सकता। *किताब समीक्षा* को एक स्थायी विशेषता बनाएं।

एच. एस. खुराना,
रोटरी क्लब लुधियाना – मंडल 3070

उत्कृष्ट सम्पादकीय

आपने हमेशा प्रत्येक माह कला का एक मनोहर नमूना, रोटरी समाचार, प्रदान किया है और जून अंक हर मायनों में उच्च ऊर्जा वाला था। सम्पादकीय पौधा रौंपो, क्रांति शुरू करो ने मुझे भावुक कर दिया क्योंकि यह विषय हमेशा से मेरे दिल के करीब रहा है। आपने पाठकों को जोशीले पर्यावरणविदों जैसे चाँदी प्रसाद और सुन्दरलाल बहुगुना का जिक्र करके एवं यह बताकर मंत्रमुग्ध किया कि कैसे उन्होंने नाज़ुक हिमालय क्षेत्र में वनों की कटाई रोकने के लिए गाँव की महिलाओं को उत्तेजित किया। मैं इस लेख द्वारा दिए गए गहन संदेश की प्रशंसा करता हूँ।

कर्नल (सेवानिवृत्त) सी. पी. गोपीनाथन, रोटरी क्लब वादकनचेरी – मंडल 3201

एटलांटा में रोटरी संस्थान के शताब्दी वर्ष को कवर करती हुई जुलाई सम्पादकीय वास्तव में अच्छी थी। सम्पादकीय को लिखने की कला सुन्दर एवं प्राकृतिक थी जिसने मुझे सम्मेलन में शारीरिक रूप से मौजूद होने का एहसास कराया। माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स की सम्मेलन में उपस्थिति और दुनिया से पोलियो को मिटाने में उनकी स्वेच्छा से की गयी सेवा प्रकाश डालने योग्य थी। उनका भाषण वास्तव में प्रेरणादायक था। इस महान कार्यक्रम के साथ में टीआरएफ ट्रस्टी कल्याण बैनर्जी का 75वां जन्मदिवस था और स्वादिष्ट भारतीय व्यंजनों के साथ दक्षिण एशिया रिसेप्शन रोटरी के सभी वीवीआईपी व्यक्तियों को आकर्षित कर रहा था।

संध्या राव का उत्कृष्ट लेख – हम सभी समय यात्री है – जीवन की वास्तविक सच्चाई को दर्शाता है जिसने मुझे इस प्रतिक्रिया को लिखने के लिए प्रेरित किया। हालाँकि नवम्बर में मैं 85 वर्ष का हो जाऊंगा, फिर भी मैं 58 वर्ष का महसूस करता हूँ और मेरे क्लब सदस्य मुझे 'युवा व्यक्ति' पुकारते है क्योंकि मैं क्लब की सभी गतिविधियों में हिस्सा लेता हूँ।

जी. वी. सयागवी, रोटरी क्लब दवानगेरे विद्यानगर – मंडल 3160

जुलाई अंक मुझे समय पर प्राप्त हुआ और मैंने उसमें अनेक शिक्षाप्रद लेखों को पाया, जिसमें एटलांटा सम्मेलन के लेख शामिल थे। रोई अध्यक्ष इयान रिसले का पत्र – संवहनीय सेवा में सर्वश्रेष्ठ – रोटेरियनों को प्रोत्साहन देता है।

के. देवराजन, रोटरी क्लब कोयम्बटूर ईस्ट – मंडल 3201

रोटरी जगत की एक बड़ी हानि

आरआईपीई सैम ओवोरी के निधन पर पीआरआईपी राजेंद्र साबू, आरआईडी सी. भास्कर और सम्पादकीय की श्रद्धांजलियों को पढ़कर हम भावुक एवं द्रवित हुए। यह केवल नोराह, उनके तीन बच्चों एवं नाती-पोतो की ही नहीं बल्कि पूरे रोटरी जगत की अपूरणीय हानि है। हमनें अच्छे मूल्यों एवं जीवन में उच्च आदर्शों वाले एक अच्छे नेतृत्वकर्ता को खोया है। विभिन्न विषयों में उनकी अकादमिक उत्कृष्टता और रोटरी के लिए उनके गहरे प्रेम के साथ, वह एक अनमोल रोई अध्यक्ष होते। खेद होता है कि चिकित्सीय विज्ञान में इतनी प्रगति के बावजूद, ओवोरी ने पैर की एक सर्जरी में जटिलताओं के कारण दम तोड़ दिया। यह उचित था कि उन्हें राजकीय सम्मान के साथ दफ़नाया गया।

आर. श्रीनिवासन,
रोटरी क्लब मदुरई मिडटाउन – मंडल 3000

टीआरएफ की मदद से रोटरी अच्छा करती है का एक और उदाहरण है लेख *डायलिसिस हुई सस्ती*, रोटरी क्लब मद्रास वेस्ट, मंडल 3232, की डायलिसिस इकाई गरीबों की मदद कर रही है क्योंकि डायलिसिस की कीमतें बहुत अधिक है।

न. जगथीसन, रोटरी क्लब एलुरु, मंडल 3020

अध्यक्ष-मनोनीत सैम ओवोरी के शोकसंतप्त परिवार को मेरी दिली सहानुभूति। यह वास्तव में रोटरी जगत का एक बड़ा नुकसान है। लेकिन ओवोरी की विरासत जीवित रहेगी। भारतीय रोटेरियन गर्व महसूस कर सकते है कि उनमें से एक, राजश्री बिड़ला, 11 मिलियन डॉलर से अधिक के योगदान के साथ टीआरएफ की सबसे बड़ी दानकर्ता है। मुंबई के एक पोलियो पीड़ित विष्णु की कहानी बताता हुआ उनका भाषण हृदय विदारक था। भारत से पोलियो को मिटाने में रोटरी द्वारा किये गए अच्छे कार्य के लिए धन्यवाद।

बाकि सभी लेख एवं रोटरी क्लब गतिविधि की तस्वीरें देखने योग्य थी। सभी वर्ग के पाठकों की रूचि को ध्यान में रखते हुए, पाठकों को हर माह रोचक लेख प्रदान करने के लिए बधाईयाँ।

एम. टी. फिलिप,
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन – मंडल 3211

सदस्यता नाज़ुक है

हमारे रोई अध्यक्ष ने सदस्यता को अधिक महत्व दिया है, विशेषरूप से महिला सदस्यता को। हमनें रोटरी सेंट्रल कलकत्ता, मंडल 3291, में इस पर बलपूर्वक काम किया है और वर्ष 2017-18 में अब तक संपूर्ण सदस्यता में 22 प्रतिशत की वृद्धि हासिल कर ली है जिसमें महिला सदस्यों की संख्या में 500 प्रतिशत का उछाल आया है। 30 जून, 2017 में 83 से, अगस्त 2017 में यह 101 हो गयी है, जिसमें 10 प्रतिशत सदस्य महिलाएं है। निदेशक (सदस्यता) राजेश अग्रवाल और मंडल सदस्यों को एक बड़ा धन्यवाद।

गिरीश गनेरीवाला, अध्यक्ष,
रोटरी क्लब सेंट्रल कलकत्ता – मंडल 3291

अपने विचार संपादक को भेजें: rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com **पर ई-मेल करें।**

Governors Council

RI Dist 2981	DG	P S Ramesh Babu
RI Dist 2982	DG	Dharmesh R Patel
RI Dist 3000	DG	P Gopalakrishnan
RI Dist 3011	DG	Ravi Choudhary
RI Dist 3012	DG	Sattish Singhal
RI Dist 3020	DG	G V Rama Rao
RI Dist 3030	DG	Dr K Sunder Rajan
RI Dist 3040	DG	Dr Zamin Hussain
RI Dist 3053	DG	Rajkumar Bhutoria
RI Dist 3054	DG	Maullin Manubhai Patel
RI Dist 3060	DG	Ruchir Anirudh Jani
RI Dist 3070	DG	Parvinder Jit Singh
RI Dist 3080	DG	T K Ruby
RI Dist 3090	DG	Bagh Singh Pannu
RI Dist 3110	DG	Vinay Kumar Asthana
RI Dist 3120	DG	Ranjeet Singh
RI Dist 3131	DG	Abhay Gadgil
RI Dist 3132	DG	Vyankatesh Vithal Channa
RI Dist 3141	DG	Prafull J Sharma
RI Dist 3142	DG	B M Sivarraj
RI Dist 3150	DG	J Abraham
RI Dist 3160	DG	Madhu Prasad Kuruvadi
RI Dist 3170	DG	Anand G Kulkarni
RI Dist 3181	DG	M M Chengappa
RI Dist 3182	DG	G N Prakash
RI Dist 3190	DG	Asha Prasanna Kumar
RI Dist 3201	DG	Vinod Krishnan Kutty
RI Dist 3202	DG	Sivashankaran P M
RI Dist 3211	DG	Suresh Mathew
RI Dist 3212	DG	Chinnadurai Abdullah
RI Dist 3231	DG	Jawarilal Jain K
RI Dist 3232	DG	R Srinivasan
RI Dist 3240	DG	Sunil Saraf
RI Dist 3250	DG	Vivek Kumar
RI Dist 3261	DG	Harjit Singh Hura
RI Dist 3262	DG	Ajay Agarwal
RI Dist 3291	DG	Brojo Gopal Kundu

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakhar	RI Dist 3232
PRID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RID	C Basker	RI Dist 3000

Executive Committee Members (2017–18)

DG B M Sivarraj — RI Dist 3142
Chair – Governors Council

DG R Srinivasan — RI Dist 3232
Secretary – Governors Council

DG Abhay Gadgil — RI Dist 3131
Secretary – Executive Committee

DG Vivek Kumar — RI Dist 3250
Treasurer – Executive Committee

DG P Gopalakrishnan — RI Dist 3000
Member – Advisory Committee

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road
Egmore, Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail : rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by Mukesh Arneja at Thomson Press (India) Ltd, Plot A-9, Industrial Complex, Maraimalai Nagar 603209, India and published by Mukesh Arneja on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

संपादक
का संदेश

स्त्री के प्रति द्वेष-भाव और पितृसत्ता से मुक्ति

लाल किले की प्राचीर से अपने स्वतंत्रता दिवस के सम्बोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक नया नारा दिया *भारत जोड़ो*। साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार और आतंकवाद से मुक्त नये और आधुनिक भारत की अपनी परिकल्पना की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक देशवासी को इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए मेहनत करनी होगी। गाय के संरक्षण के नाम पर समाज में बढ़ रही गैर कानूनी सजा पर कड़ाई जताते हुए प्रधानमंत्री ने दृढ़तापूर्वक कहा ''धर्म के नाम पर हिंसा कोई खुशी की बात नहीं हैं। भारत में इसे बर्दाश्त नहीं किया जायेगा'' उन्होंने कहा कि ''हमारा नया उद्देश्य भारत जोड़ो है। सच है, हमारे सपनों के भारत की उदार प्रकृति, इसकी बहुरंगी संस्कृति और विभिन्न रंगों और धागे से बुनी विविधतापूर्ण सामाजिक संचरना को आज एक सूत्र में बांधे रखने की महत्ती आवश्यकता है।

लेकिन, इन सबके साथ-साथ आज के भारत को और कल भी, एक और स्वतंत्रता की आवश्यकता है और वह है स्त्री के प्रति द्वेष-भाव और पितृ सत्ता से मुक्ति। गौरतलब है, कि हाल ही एक खौफनाक घटना घटी। चण्डीगढ़ में एक युवती वर्णिका कुण्डू का आधी रात के बाद दो लोगों ने पीछा किया और बाद में इन अपराधियों ने उसकी शाम को ड्रिंक करते हुए फोटो प्रचारित कर उसे शर्मसार करने का प्रयास किया। वर्णिका के समर्थन में युवा भारतीय महिलाओं की जिस तरह की तीव्र और आक्रोश भरी प्रतिक्रिया सामने आई, इस बात का स्पष्ट संकेत है कि भारत वास्तव में बदल रहा है। जब वर्णिका को यह कटु अनुभव हुआ कि दो लोगों ने उसकी कार को रोका और खिड़कियों पर प्रहार कर गेट खोलने का प्रयास किया, तो उसने उनके खिलाफ पुलिस में पीछा करने और अपहरण करने के प्रयास की शिकायत दर्ज करवाई। उसने बड़ी ही बहादुरी से यह दिखा दिया कि आधुनिक भारत की महिला इस तरह के प्रहारों से विचलित और भयभीत नहीं होगी। अपने साथ बीते इस डरावने वाकये को अपने फेसबुक पेज पर विस्तार से बताते हुए अंत में वर्णिका ने इस बात के प्रति आभार प्रकट किया कि उसके साथ कहीं किसी जगह बलात्कार और हत्या जैसी वारदात नहीं हुई।

ज़ाहिर तौर पर इस सम्बन्ध में विशेष रूप से पुरूषों की तरफ से बहुतायत में व्याख्यान सामने आने ही थे। उदाहरणार्थ एक ने कहा, ''लड़की को रात के 12 बजे बाद घर से बाहर कहीं जाना चाहिये। इतनी देर रात को कार क्यों चला रही थी? हमें हमारी चिंता खुद करनी चाहिये।'' इन बातों का 29 वर्षीय उत्साही महिला ने एक टेलीवीजन साक्षात्कार में मुँह तोड़ जवाब दिया कि यह केवल मुझे या मेरे परिवार को देखना है कि ''मैं क्या करती हूँ और कहाँ जाती हूँ। यदि यह सब पुरूषों की तरह नहीं है, तो यह भी कभी भी असुरक्षित नहीं है कि मै दिन के 12 बजे बाहर जाऊँ या दिन देर रात 2 बजे या तड़के 4 बजे।'' युवा भारतीय महिलाओं ने इसके तुरन्त बाद त्वरित प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सोशियल मीडिया, ट्विटर पर आधी रात में ड्रिंक करते हुए सेल्फी पोस्ट की। जिसमें यह दर्शाया गया कि वे शाम को देर तक अच्छे टाइम का आनन्द उठा रही हैं। यह सब एक समय ट्विटर पर काफी ज्यादा टेऱंड की गई *#AintNoCindrella* के साथ-साथ चला। एक महिला ने ड्रिंक के साथ अपनी तस्वीर डाली और कहा ''यह कल अर्द्धरात्रि की है, जब मैंने दिल्ली में बीयर पी। आप भी मुझे ज्वाइन कीजिए *#AintNoCindrella* एक ने कहा ''पीछे धकेलने वाले प्रिय भारत, मैं वही करूंगी जो मुझे अच्छा लगेगा... दिन हो या रात। ऐसा कभी मत सोचना कि तुम्हें मुझे रोकने का अधिकार है।'' एक अन्य महिला ने लिखा, ''रात के 1.45 बजे हैं, और मैं बाहर दिल्ली की सड़कों पर छोटे कपड़ों में हूँ, रोको मुझे, यदि रोक सकते हो।''

ये ट्विट्स, इनके लाइक्स और पुनः किए गए ट्विट्स की संख्या सैंकड़ों से शुरू होकर हजारों तक पहुँच गई थी, जिनमें हास-परिहास, बहादुरी, दृढ़निश्चय और हठधर्मिता थी। यह भी स्पष्ट था कि इन सब महिलाओं में पीड़ित महिला को बदनाम करने के प्रयास को लेकर आक्रोश था, न कि इस बात के लिए नहीं कि दोषियों को सजा मिले। इस घटना से एक निष्कर्ष और निकल कर सामने आया कि इन युवा महिलाओं ने उन तस्वीरों को भी पोस्ट करने में संकोच नहीं किया जो कभी भी या सामान्यतः सार्वजनिक रूप से साझा नहीं की जाती हैं। कल्पना कीजिए कि इस तरह का समर्थन पीड़ित जवान महिला के मनोबल का क्या करता है, यह सीधा-सीधा दर्शाता है कि वह अकेली नहीं हैं, सैंकड़ों अन्य महिलायें उसके साथ खड़ी होकर हमारे देशवासियों को यह स्पष्ट संदेश देंगी कि भारत अब वास्तव में अब बदल रहा है, और स्त्री के प्रति द्वेष-भाव और पितृसत्ता का सीधा विरोध किया जायेगा। ब्रेवो!

लैंगिक मोर्चे पर सबसे खुशी की बात यह है कि सर्वोच्च न्यायालय ने तीन तलाक जैसे जघन्य कृत्य असंवैधानिक ठहराया है, जिससे पीढ़ी दर पीढ़ी असहाय मुस्लिम महिलायें पीड़ित थी जिन्हें उनके पति अपनी मर्जी और शौक के आधार पर तलाक दे देते थे। कई बार तो छिछोरेपन से मोबाईल पर मैसेज, ईमेल, या Whatsapp पर भी तलाक दे दिया जाता।

रशीदा भगत

अध्यक्ष
की ज़बानी

टोरंटो में सभी के लिए कुछ खास

प्रिय साथी रोटेरियनों,

किसी भी रोटरी सम्मेलन की सबसे खास बात वहाँ मौजूद लोगों की विविधता होती है। चाहे आप ब्रेकआउट सत्र के लिए जा रहे हो, हाउस ऑफ़ फ्रेंडशिप में घूम रहे हो, या फिर खाने के लिए बैठे हो, आपको दुनिया के हर कोने के लोग मिलेंगे, हर तरह की राष्ट्रीय पोशाक में, लगभग हर भाषा बोलने वाले। यह बहुत ही मजेदार है, और यह एक बड़ा हिस्सा है जो रोटरी को महान बनाता है: कि हम कितने भी अलग हो सकते है फिर भी हम अपने आप को एकसाथ पाते है।

जोशीले समुदाय की वह भावना जो रोटरी के लिए इतनी महत्वपूर्ण है टोरंटो को भी परिभाषित करती है, जो 2018 रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए हमारा मेज़बान शहर है। टोरंटो मेरे पसंदीदा शहरों में से एक है। यह वह जगह है जहाँ आधी जनसंख्या अन्य देशों से है, जहाँ पर 2.8 मिलियन रहवासियों द्वारा 140 से अधिक भाषाएँ बोली जाती है, और जहाँ पर कोई भी सहायता करने के लिए इतना अधिक व्यस्त नहीं दिखाई देता है। एक साफ, स्वच्छ और स्नेहपूर्ण होने के साथ ही, आकर्षक ओंटारियो झील तट, प्रसिद्ध रेस्टोरेंटों, अनोखे एवं विचित्र संग्राहलयों, और घूमने के लिए आसपास के रोचक क्षेत्रों के कारण टोरंटो घूमने के लिए एक शानदार जगह है।

वर्ष 2018 सम्मेलन पहले ही हमारे सबसे अच्छे सम्मेलनों में से एक होने का वादा करता है। हमारी सम्मेलन समिति और मेजबान संगठन समिति प्रेरक वक्ताओं, शानदार मनोरंजन, आकर्षक ब्रेकआउट सत्रों, और शहर भर में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों की व्यवस्था करने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है। टोरंटो में सभी के लिए कुछ ना कुछ होगा, और जूलिएट और मैं - आपको वह करने के लिए प्रोत्साहित करते है जो हम कर रहे होंगे - आनंद के लिए अपने परिवार को भी साथ लाए। अगर आप जल्दी योजना बनाते है, तो आपका सम्मेलन का अनुभव और भी अधिक किफ़ायती हो जाएगा: आरंभिक रियायती पंजीयन की अंतिम तिथि (ऑनलाइन पंजीयन के लिए अतिरिक्त छूट है) 15 दिसम्बर है।

जितना भी टोरंटो रोटेरियनों को प्रदान करता है, उनमें असली चीज़, बेशक, सम्मेलन खुद है। यह एक वार्षिक अवसर है, अपनी रोटरी बैटरियों को फिर से चार्ज करने का, यह देखने का कि दुनिया का शेष रोटरी जगत किस मुकाम पर है, और आने वाले वर्ष के लिए प्रेरणा प्राप्त करने का। अधिक जानकारी के लिए *riconvention.org* पर जाए - और 2018 रोटरी सम्मेलन टोरंटो में हर स्थान से प्रेरणा प्राप्त कीजिये।

इयन एच.एस. राय्सली
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल, 2017-18

रो इं निदेशक

का संदेश

साक्षरता को प्रोत्साहित करें, परिवर्तन का सूत्रपात करें

प्रिय रोटेरियनों,

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि सभी क्लबों ने अपने अनेकों सदस्यों को बनाए रखा होगा, साथ ही अगस्त में नए सदस्यों को शामिल किया होगा। मैं सभी नए रोटेरियनों का स्वागत करता हूँ और उनसे सेवा और फैलोशिप के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने का अनुरोध करता हूँ। चूँकि सितंबर आधारभूत शिक्षा और साक्षरता का महीना है, यह अपने समुदायों के स्कूलों पर एक नज़र डालने का समय है। केवल जब हम ऐसा करेंगे, तभी हमारे क्लब सीखने के परिणामों को सुधारने, सामुदायिक लाभ बढ़ाने और शिक्षण पद्धतियों को प्रभावित करने की आवश्यकता को समझेंगे, खासकर प्राथमिक विद्यालयों में। प्राथमिक शिक्षा में साक्षरता के स्तर और शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए राज्य और केंद्र सरकारों के पास पर्याप्त बजट आवंटन उपलब्ध है - यहाँ चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि इन निधियों का व्यय अच्छी तरह से किया जाएं ताकि ठोस परिणाम प्राप्त हो सके।

प्राथमिक विद्यालयी स्तर पर साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए, हमें उन विद्यालयों में प्रयासों को बढ़ाने की जरूरत हैं जो पहले से ही उचित प्रकार से सीखने की प्रक्रिया में हैं। जैसा कि पोलियो उन्मूलन के दौरान, जहां हमने रोटरी ने पहुंच से बाहर के समुदायों की पहचान की और उन्हें शिक्षित किया और प्रारंभिक प्रतिरक्षण के महत्व के बारे में समझाया, और इस प्रकार उनकी सफलता में योदान देना चाहिए।

मैं जानता हूँ कि कुछ दशक पहले संपूर्ण विश्व में कार्यात्मक साक्षरता के लिए रोटरी द्वारा कितना जोर दिया गया था। हम अपने स्थानीय समुदायों के कमजोर प्राथमिक साक्षरता स्तरों तक पहुंचे और उन्हें समझाएं कि बुनियादी शिक्षा और कार्यात्मक साक्षरता सरकार की विभिन्न लाभकारी योजनाओं में सामुदायिक भागीदारी को सक्षम बनाने में कितना लाभप्रद है। हमें प्रौढ़ साक्षरता पर भी ध्यान देने की जरूरत है और हमारे कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से इसे मदद दिया जा सकता है।

दोस्तों, यहां रोटेरियन कार्ल सैंडर्स की प्रेरणादायक कहानी है जो अपने उम्र के पचासवें पड़ाव पर हैं, उनके नाम को पिछले वर्ष पीआरआईपी कल्याणदा द्वारा *रोटरी समाचार* में भेजा गया था। कार्ल सैंडर्स केनोशा, यूएसए में एक छोटा व्यवसाय संचालित करते है। कुछ वर्ष पहले, एक व्यापार सहयोगी ने कार्ल को केनोशा रोटरी क्लब, मंडल 6270 में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया था। कार्ल ने सोचा कि यह व्यवसाय के लिए अच्छा होगा और वे एक सदस्य बन गये। वह बहुत अच्छी तरह से पढ़ नहीं सकते थे। वह स्कूल छोड़ने से पहले तक बमुश्किल नौवीं कक्षा तक की पढ़ाई पूरी कर पाए थे। उन्हें एक साथी रोटेरीयन से स्थानीय साक्षरता परिषद के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। कार्ल ने उन्हें अपनी समस्या के बारे में बताया और रोटेरियनों ने कार्ल को साक्षरता परिषद के संपर्क में रखा, जिन्होंने उनकी मदद की - इतना कि कार्ल अब रोटरी क्लब के पूर्व अध्यक्ष हैं!

क्लबों में एक साक्षरता कार्यक्रम की स्थापना करना एक बेहतर शुरुआत होगी। अपने स्थानीय स्कूलों में बुनियादी और कार्यात्मक साक्षरता प्रशिक्षण कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए दीर्घकालिक प्रतिबद्धता आवश्यक है। अब रोटरी क्लब को अपनी परियोजनाओं को चालू वर्ष से आग रखने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए, डीजीएन और नवनिर्वाचित क्लब अध्यक्ष से समर्थन प्राप्त करने का प्रयास करें और साथी रोटेरीयनों और इच्छुक परोपकारी लोगों से दीर्घकालिक वित्तीय सहायता के स्रोतों को प्राप्त करने का प्रयास करें, जैसे सरकारी अनुदान, प्रतिभागी शुल्क, या वित्तपोषण (नकद/अन्य प्रकार जैसे शिक्षण सहायक सामग्री, फर्नीचर आदि)।

आइए हम सेवा कार्यों के लिए रोटरी के भागीदारों को आमंत्रित करें। आइए हम उन्हें अपने साक्षरता कार्यक्रमों में शामिल करें। प्रत्येक रोटरी क्लब ने कम से कम एक रोटरी ग्राम कोर्प्स, रोट्रेक्टर क्लब और इंटरेक्ट क्लब को प्रायोजित किया है। इन समूहों के सदस्यों को शामिल करने और उन्हें एक छोटे से तरीके से अपनी खुद की साक्षरता परियोजनाएं संचालित करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

याद रखें कि 8 सितंबर को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस प्रत्येक क्लब के लिए अपनी परियोजना को बढ़ावा देने का एक अवसर है। क्लब उस दिन नेतृत्व करते हुए साक्षरता स्वयंसेवकों को पुरस्कार प्रदान कर सकते हैं ताकि निष्पादित किए गये कार्यक्रमों/परियोजनाओं के बारे में स्थानीय प्रिंट/दृश्य मीडिया में प्रचार किया जा सके और और साक्षरता के प्रति जागरूकता को बढ़ावा दिया जा सके।

स्थानीय समुदायों को शामिल करते तथा अपना योगदान देते हुए रोटरी समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन का सूत्रपात कर सकता है!

C. Bh

सी भास्कर

निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

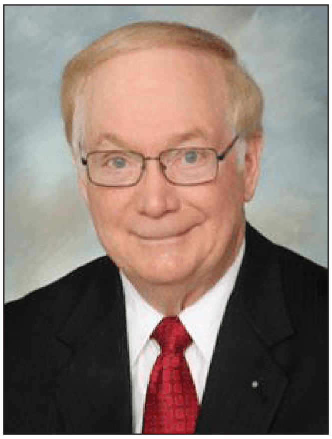

इतिहास रचने की
उलटी गिनती शुरू

इतिहास रचने की उलटी गिनती'' एक ऐसा वाक्य है जिसे मैं विशेषतौर पर पसंद करता हूँ। वे शब्द ना केवल रोटरी के महान एवं महत्वपूर्ण पोलियो प्रयास के बारे में बताते है - कुछ ऐसा जिसे मानव अनुभव में केवल एक बार हासिल किया गया - बल्कि यह भी बताते है कि समापन रेखा कितने करीब है।

पोलियो उन्मूलन के लिए रोटरी और हमारे रणनीतिक साझेदार संगठित है। हमारी 2016 की विधायी परिषद् ने इस बात की पुष्टि करने के लिए मतदान किया कि पोलियो उन्मूलन सर्वोच्च दर्जे का लक्ष्य है। हाल ही में जिनेवा में आयोजित 70वें विश्व स्वास्थ्य सम्मेलन में, विश्व स्वास्थ्य नेतृत्वकर्ताओं ने पोलियो उन्मूलन के लिए अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। हमारी कोशिशों के बारे में समाचार हर जगह नज़र आते है। दुनियाभर में परियोजनाएं निरंतर चलती है - जैसे मंडल 6930 की वार्षिक 'दुनिया का सबसे बड़ा भोज' परियोजना - जो अनुदान संचयन, समर्थन, और स्वयंसेवक भर्ती जैसी रोटेरियनों की प्राथमिक जिम्मेदारियों पर ध्यान केन्द्रित करती है।

ज़रा सोचिये: पोलियो का अगला मामला अंतिम मामला हो सकता है। परन्तु हमें सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि वह अंतिम मामला हमारे काम का अंत नहीं है। बल्कि, तब तो काम और भी ज्यादा कठिन हो जायेगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन दुनिया को पोलियो मुक्त तब घोषित कर पाएगा जब कम से कम तीन वर्षों तक दुनिया भर में एक भी पोलियो का मामला सामने नहीं आएगा।

उस दौरान, प्रचंड टीकाकरण और निरीक्षण की कार्यवाही जारी रखनी होगी। टीकाकरण के पहलू पर, बच्चों को पोलियो के टीके मिलते रहेंगे। निरीक्षण के पहलू पर, पोलियो की वापसी के चिन्हों की निगरानी करना अत्यावश्यक है। जैसे-जैसे मामलों की संख्या एवं मरीजों में दिखाई देने वाले लक्षणों में गिरावट आ रही है, यह निरीक्षण तेजी से अधिक महंगा होता जा रहा है।

इसी कारण रोटरी ने पोलियो से लड़ने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को बढ़ाकर 50 मिलियन डॉलर प्रति वर्ष कर दिया है और बिल एंड मेलिंडा गेट्स संस्थान ने रोटरी अनुदान के अपने 1 के लिए 2 मैच को अगले तीन वर्षों के लिए आगे बढ़ा दिया है। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए, हमें आपकी पहले से अधिक आवश्यकता है। अगर रोटेरियन प्रतिवर्ष अपने अनुदान संचयन के लक्ष्य को प्राप्त कर लेते है, तो कुल राशि 450 मिलियन डॉलर हो जाएगी। एटलांटा सम्मेलन में, दुनियाभर के राष्ट्रों और प्रमुख दानकर्ताओं ने इस लकवाग्रस्त कर देने वाली बीमारी को खत्म करने की वैश्विक लड़ाई में उत्साह भरने के लिए 1 बिलियन डॉलर से अधिक दान करने का संकल्प लिया, जिसमें रोटरी के प्रतिवर्ष 50 मिलियन डॉलर शामिल है। अब हम सभी के पास उन संकल्पों को पूर्ण करने का एक महत्वपूर्ण कार्य है।

इस सब के कारण ही मैं आपसे पोलियो अभियान के लिए कुछ योगदान देने के लिए कहता हूँ - चाहे वह प्रत्यक्ष दान हो, अपने समुदाय में अनुदान संचयन हो, या आज के मीडिया के विभिन्न मंचों का उपयोग कर पोलियो की कहानी बताना हो। साथ ही, एक अधिवक्ता बनकर अपने सरकारी अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के लिए लिखें कि वे अपने संकल्पों को पूर्ण करें और प्रतिबद्धताओं पर कायम रहे, और कॉर्पोरेट नेताओं तक पहुंचकर उनसे पोलियो उन्मूलन के लिए उनका समर्थन जारी रखने के लिए कहे। हमारी कार्य-सूची में पोलियो को सबसे ऊपर रखने के लिए अपने विचार साझा करने और आप क्या कर रहे है यह बताने के लिए मुझे *Paul.Netzel@rotary.org* पर लिखें। हमें हमारी ''इतिहास रचने की उलटी गिनती'' के लिए आपकी पहले से अधिक आवश्यकता है।

पॉल ए. नेटज़ेल
फाउंडेशन न्यास अध्यक्ष

रोटरी समाचार में अपनी प्रतिष्ठित परियोजना प्रकाशित करवाइए

ऐसे रोटेरियन और रोटरी क्लब, या मंडल, जो सुनियोजित एवं ध्यानपूर्वक निष्पादित की गयी परियोजनाओं का बीड़ा उठाते है जिनसे लोगों की ज़िंदगियाँ परिवर्तित होती है एवं स्थानीय समुदाय लाभांवित होता है, वे अन्य रोटरी क्लबों को भी अपने बारे में ज्ञात करवाना चाहते है। आप में से बहुत से लोग सोचते है कि ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है परियोजना को *रोटरी समाचार* में प्रदर्शित करना, जो कि 1.15 लाख रोटेरियनों, लगभग 1,000 पुस्तकालयों, शैक्षणिक संस्थानों, डॉक्टरों के प्रतीक्षा कक्ष, क्लीनिक, इत्यादि में प्रसारित होती है और हर महीने लगभग 4 लाख पाठकों द्वारा पढ़ी जाती है।

रोटरी समाचार में हम इस बात से सहमत है कि बड़ी परियोजनाओं के निष्पादन में रोटेरियनों द्वारा लगाए गए कठिन परिश्रम एवं धन को आपकी पत्रिका में पर्याप्त रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए। लेकिन हमारी समस्या यह है कि ज्यादातर हमें ऐसी परियोजनाओं की कोई जानकारी नहीं होती है। निश्चित ही आप सूचना एवं विपणन के महत्व को समझते है। जबकि अधिकतर समय हम नियमित कल्याणकारी परियोजनाओं, जो समुदाय के लिए आवश्यक है, से घिरे हुए होते है, जैसे कि रक्त दान शिविर या एक वाहन भेंट करना या मोतियाबिंद की जांच, हम अक्सर बड़ी, बेहतर एवं अनोखी परियोजनाओं से बस इस सरल कारण से चूक जाते है कि किसी ने भी हमें उसके बारे में नहीं बताया था।

तो यहाँ पर आपके संचार को सही स्थान पर लाने का एक निमंत्रण है; अपने क्लब से किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिष्ठित परियोजनाओं के बारे में *रोटरी समाचार* से बात करने का कार्य सौंपे। यदि आप सोचते है कि उन्हें बाकि के रोटरी जगत के साथ साझा किया जाना चाहिए, तो कृपया कर लिखिए, या परियोजनाओं के विभिन्न चरणों की जानकारी को क्रमबद्ध कीजिये, पत्रकारिता या रिपोर्ट लिखने के मौलिक मानदंडों को ध्यान में रखते हुए।

- उत्पत्ति - परियोजना के बारे में कब विचार किया गया।
- कारण - क्यों इसकी योजना बनाई गयी; बेशक स्थानीय समुदाय की आवश्यकता की पूर्ती के लिए। यह आवश्यकता क्या थी?
- पैसा कैसे इकट्ठा किया गया; क्या यह एक टीआरएफ अनुदान था?
- चुनौतियाँ - क्या पैसा इकट्ठा करना कोई समस्या थी? क्या सरकारी मंजूरी अपेक्षित थी; इन्हें कैसे हासिल किया गया। अन्य चुनौतियाँ और कैसे उनके समाधान ढूंढें गए।
- निष्पादन - समय सीमा जिसके अंदर परियोजना पूर्ण की गयी; विभिन्न चरण।
- लाभार्थी - *रोटरी समाचार* में आपके क्लब की परियोजना के शामिल होने का सबसे अच्छा मौका होगा यदि आप हमें मानव हित की कहानियाँ देंगे... लाभार्थियों की तस्वीरें एवं उनसे बातचीत।
- तस्वीरें - एक तस्वीर 1,000 शब्दों के बराबर होती है। परियोजना एवं उसके लाभार्थियों की अच्छी, क्रियाशील तस्वीरें लीजिये।
- परियोजना के नायक - परियोजना में पूरे जोश के साथ शामिल रोटेरियनों पर प्रकाश डालिए एवं व्यक्त कीजिये, यदि वे क्लब नेतृत्वकर्ता नहीं है और मौन कार्यकर्ता है तो भी।
- चूंकि रोटरी अधिक महिलाओं एवं युवा सदस्यों को शामिल करने के लिए उत्सुक है, ऐसे समूहों द्वारा की गयी परियोजनाओं के बारे में हमे बताइए।

एक बार यह सब जमा लेने पर, अपनी परियोजना का दौरा करने के लिए हमें आमंत्रित कीजिये। याद रखिये कि हमारे पास प्रति माह केवल एक पत्रिका है और इसमें जगह की बहुत अधिक मांग है। इसलिए, जैसा कि एक आरएनटी ट्रस्टी ने हाल ही में संपन्न हुई एक बैठक में ध्यान दिलाया था, अंतर कीजिये कि क्या जीएमएल के लिए उपयुक्त है, और क्या रोटेरियनों के लिए राष्ट्रीय पत्रिका में भेजा जाना चाहिए।

कम्बल, किताबें या बेंच बांटने जैसी सभी प्रकार की गतिविधियों को भेजने के बजाय, हमें पत्रिका के लिए अपनी सर्वश्रेष्ठ परियोजना भेजिए।

अंत में, हम केवल विशाल परियोजनाओं को ही नहीं खोज रहे है जिनमें वैश्विक अनुदानों से सैकड़ों हजारों डॉलर की लागत लगी हो। यहाँ तक कि एक छोटी परियोजना जिसमें एक अनोखा विचार हो, और जो स्थानीय समुदाय को एक सरल, अलग समाधान दे सके, का स्वागत है। क्योंकि आखिरकार, छोटा केवल खूबसूरत ही नहीं होता, बल्कि आसानी से अनुकरणीय भी होता है।

अवश्य अपने सुझाव भेजिए:

rushbhagat@gmail.com पर संपादक को

jaishri67@gmail.com पर वरिष्ठ सहायक संपादक को

संपादक

Rotary International Service Above Self Award Winners

Rotary

The 2016–17 recipients of the Service Above Self Award, Rotary International's highest honour for individual Rotarians have been announced.

This award recognises Rotarians who have demonstrated exemplary humanitarian service, especially those who have helped others through personal volunteer work and active involvement in Rotary.

2981	Narayanasamy Govindaraj
3000	Samuel Christdoss Savariraj
3011	Ramesh Chander
3030	Juhal Chiraniya
3040	Tarun Mishra
3052	Ramesh Agrawal
3053	Radhe Shyam Rathi
3060	Prafall Bhatt
3070	Gurjeet Singh Sekhon
3080	Ashok Chhokra
3090	Vijay Arora
3110	Shailendra Raju
3131	Marutrao Jadhav
3132	Ismail Patel
3141	Balkrishna Inamdar
3142	Hemant Jagtap
3150	Vasu Dev Malladi
3170	Mahesh Raikar
3190	Nagendra Kurugoilu Setty
3211	Thomas Vavanikunnel
3262	Dilip Patnaik
3291	Hira Lal Yadav

District Wise TRF Contributions as on July 2017

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus*	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions
India					
2981	12,274	50	0	0	12,324
2982	1,219	0	609	0	1,828
3000	2,605	78	0	0	2,683
3011	16,853	100	(5,662)	0	11,290
3012	7,278	2,191	0	0	9,470
3020	1,624	0	0	0	1,624
3030	203	20,724	1,050	0	21,977
3040	0	0	0	0	0
3053	0	0	0	0	0
3054	70,000	102	0	0	70,102
3060	1,759	0	0	0	1,759
3070	515	0	0	(500)	15
3080	1,826	0	0	0	1,826
3090	0	0	0	0	0
3110	695	0	0	0	695
3120	965	508	0	0	1,473
3131	31,097	(4,900)	2,625	16,000	44,822
3132	6,272	113	0	0	6,384
3141	112,839	1,256	0	0	114,095
3142	55,468	0	0	0	55,468
3150	8,343	16	7,813	0	16,171
3160	16,188	0	0	0	16,188
3170	9,587	5,060	0	0	14,648
3181	1,844	94	0	0	1,938
3182	757	0	19,217	0	19,974
3190	777	0	0	16	793
3201	14,757	0	17,764	0	32,521
3202	742	240	0	0	982
3211	1,644	0	0	(10,000)	(8,356)
3212	90,867	102	0	0	90,969
3231	4,372	0	31,250	6,000	41,622
3232	14,139	2,000	200	0	16,339
3240	6,029	0	0	555	6,584
3250	5,684	0	0	0	5,684
3261	1,305	100	0	0	1,405
3262	333	0	0	0	333
3291	313	(27)	323	0	609
India Total	**500,944**	**27,806**	**75,189**	**12,070**	**616,009**
3220 Sri Lanka	12,577	10,067	0	1,217	23,861
3271 Pakistan	0	17,886	0	0	17,886
3272 Pakistan	129	5,000	0	1,000	6,129
3281 Bangladesh	38,699	0	0	5,000	43,699
3282 Bangladesh	3,600	100	0	0	3,700
3292 Nepal	3,604	0	15,534	0	19,138
South Asia Total	**559,553**	**60,859**	**90,723**	**19,288**	**730,422**
World Total	**7,647,513**	**1,337,117**	**700,104**	**1,616,051**	**11,300,785**

** Excludes Bill and Melinda Gates Foundation.* *Source: RI South Asia Office*

Häcker

kitchen. germanMade.

DELHI	MUMBAI	BENGALURU	KOCHI	COIMBATORE	CHENNAI	HYDERABAD	AHMEDABAD	LUDHIANA	JAIPUR	INDORE	THRISSUR
9313134488	9322987229	9740999350	9895058285	9500210555	9442081111	9700058285	9879538977	9815048222	9414058718	9425803599	7025991000

E-mail: info@hacker-kitchens.com
Website: www.haecker-india.com / www.haecker-kuechen.com

अलविदा सैम ओवरी

के आर रवींद्रन

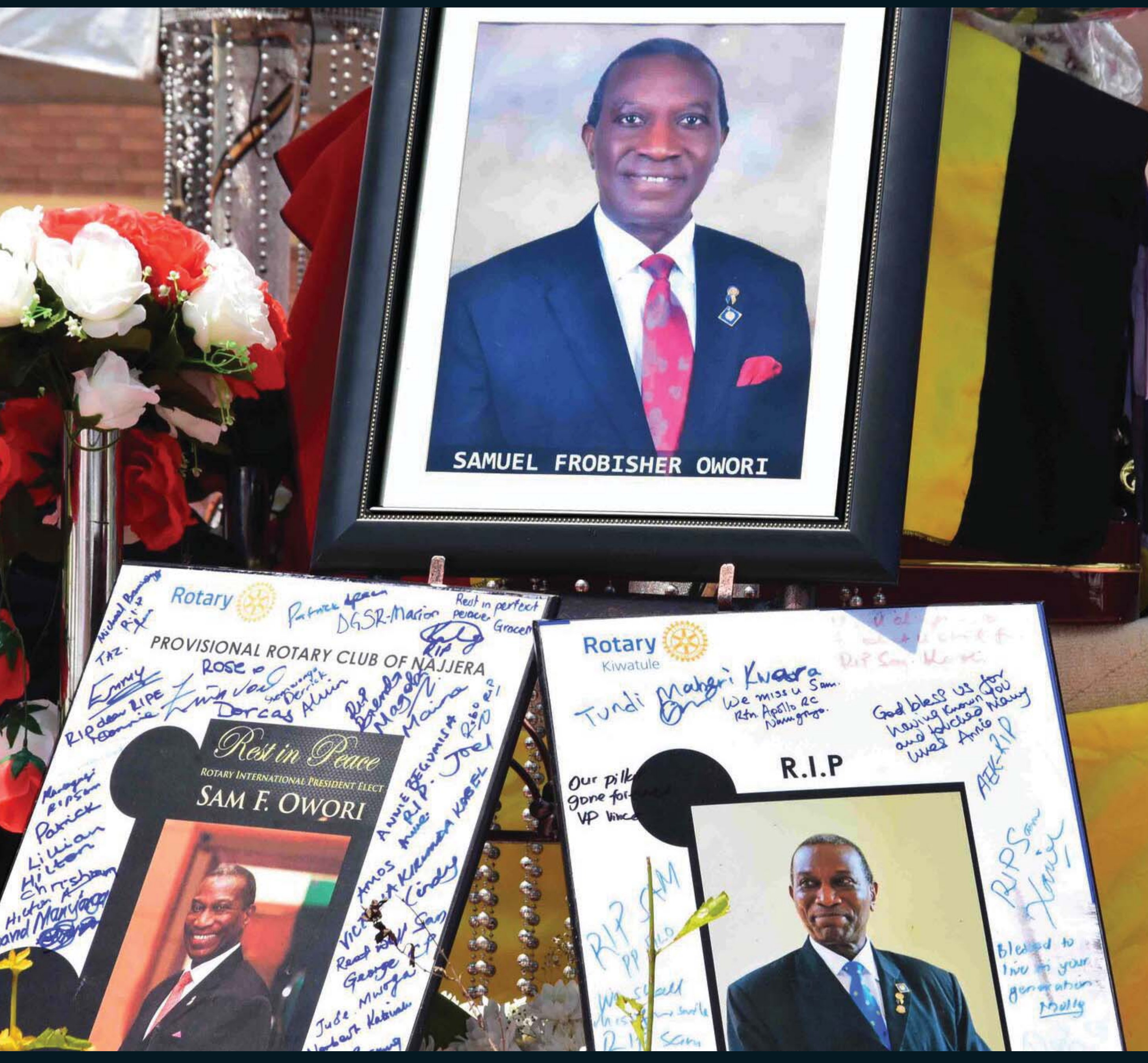

रोटरी इंटरनैशनल के बेहद प्यारे और कद्दावर नेता के अंतिम संस्कार का भावपूर्ण और हृदयविदारक वृत्तांत

रोटरी क्लबों से श्रद्धांजलि की बाढ़।

शुक्रवार, 28 जुलाई को जब हमारी गाड़ी युगांडा के टोरोरो कस्बे के एक छोटे गाँव में पहुँची तो शाम के छह बज चुके थे। एनटेब्बी एयरपोर्ट पर उतरने के बाद कंपाला से यहाँ तक का सड़क से सफ़र लगभग चार घंटे का था। युगांडा के रोटेरियंस ने उदारदिली से हमारे लिए एक पुलिस एस्कॉर्ट का बंदोबस्त कर दिया था जिससे कंपाला से टोरोरो तक की व्यस्त सड़क पर हम अपना सफ़र ज़रा जल्दी पूरा कर पाए। यह सड़क कीन्या से युगांडा होते हुए काँगो जानेवाला पूर्व अफ्रीका का प्रमुख मार्ग है। हमारी यह यात्रा भी बिना घटना के पूरी नहीं हुई क्योंकि रास्ते में हम खुद कई कारोंवाली एक दुर्घटना का हिस्सा बन चुके थे। उस घटना ने हमें बुरी तरह हिला ज़रूर दिया था, लेकिन शुक्र है कि किसी को कोई गहरी चोट नहीं पहुँची।

टोरोरो तक का सफ़र तय करने के कुछ ही मिनटों बाद रोटरी इंटरनैशनल के पूर्व अध्यक्ष राजेन्द्र साबू और मैं किडेरा गाँव में ओवरी के घर पहुँच गए। घर के बजाय शायद मुझे रियासती भवन कहना चाहिये क्योंकि असलियत में वह एक विशाल प्रांगण था जिसमें उनके पिता और परिवार के अन्य सदस्य भी रहे और बड़े हुये थे। सैम के 14 भाई-बहन थे।

सैम और नोरा ने हाल ही में यहाँ अपना नया घर बनाया था, वह घर जिसमें सैम कभी रहे ही नहीं। शायद उन्होंने और नोरा ने सेवा निवृत्ति के बाद यहाँ बसने की योजना बनाई हो। लेकिन अब जैसा कि नियति का फ़रमान है और किस्मत का फ़ैसला, उन्हें उनकी अंतिम यात्रा पर और स्थाई विश्रामस्थल तक ले जाने से पहले अस्थाई रूप से यहाँ आराम करवाया जायेगा।

घर तक चलकर जाते हुए हम देखते हैं कि अंदर और बाहर दोनों ही जगह बहुत से लोगों का जमघट है। जैसा कि अपेक्षा थी, निराशा और हताशा का माहौल है। चारों तरफ़ शोक फ़ैला हुआ है।

घर के अन्दर पुरुष एक संलग्न बरामदे में बैठे हैं, जबकि महिलाएं घर के अन्दर हैं, बिल्कुल वैसे ही जैसे हमारी संस्कृति में होता है। उनकी देह को एक बंद ताबूत में युगांडा और रोटरी के ध्वजों में लपेटकर ड्रॉइंग रूम (स्वागत कक्ष) के बीच में रखा गया है। जब वे हमें शव दिखाने के लिये ताबूत को खोलने की कोशिश करते हैं तो हम विनम्रता से हल्के से अपने सिर हिलाकर इंकार कर देते हैं। हम अपने दोस्त को वैसे ही याद रखना चाहते हैं जैसे हम उन्हें जानते थे; मुस्कुराता चेहरा, हमेशा शांत, निर्मल और आश्वस्त करनेवाला। हम नोरा के साथ बैठते हैं। वे अपने एकाकीपन में साहस का और सहनशक्ति में प्रबलता का परिचय दे रही हैं। वे थकी लगती हैं और उनकी आँखें रीती हुई हैं मानो आँसू सूख गये हैं। वे लगभग एक सप्ताह से उस व्यक्ति के पार्थिव शरीर के साथ हैं जो दशकों तक उनके जीवन का प्रेमबिन्दु हुआ करता था।

वे हमारे साथ उन आखिरी पलों को बाँटती हैं - टेक्सस के डैलेस इलाके में एक वैकल्पिक, बिना किसी खतरे का, अपेक्षाकृत छोटा सा ऑपरेशन। किसी को आशंका नहीं थी कि उससे अचानक ये सारी जटिलताएं पैदा हो

नोरा हमारे साथ उन आखिरी पलों को बाँटती हैं - एक वैकल्पिक, बिना किसी खतरे का, अपेक्षाकृत छोटा सा ऑपरेशन। उनके स्थान पर जो कोई भी होता तो यही पूछता, आखिर क्यों? वे सिर्फ़ यही कहती हैं, ऊपरवाले की यही मर्ज़ी थी।

जाएंगी जो जानलेवा सिद्ध होंगी। उनके स्थान पर जो कोई भी होता तो यही पूछता, आखिर क्यों? लेकिन वे सिर्फ़ यही कहती हैं, ऊपरवाले की यही मर्ज़ी थी।

बाहर अगले दिन के अंतिम संस्कार के लिये की जा रही सारी तैयारियाँ हमें दिखाई दे रही हैं। जैसे अन्धेरा घिरने लगता है, हम 20 मिनट की दूरी पर स्थित अपने साधारण होटल के लिये प्रस्थान करते हैं।

आज 29 जुलाई, शनिवार का दिन है। सैम की देह वाले ताबूत को उनके घर से बाहर लाये जाने के कुछ देर पहले ही हम वहाँ पहुँचते हैं। सैनिक घर से लेकर उसे बाहर बड़े आँगन में आते हैं जहाँ ताबूत को ऊँचाई पर बने एक स्टैंड पर रखने के लिये एक विशेष छत्र बनाया गया है। शामियाने बनाये गए हैं और चारों ओर बैठने का इंतज़ाम किया गया है। साफ़ साफ़ चिन्ह लगाये गए हैं यह संकेत देने के लिये कि कौन सी सीट सरकारी मेहमानों के लिये हैं, कौन सी रोटरी के वीआईपी लोगों के लिये, कौन सी रिश्तेदारों के लिये हैं, कौन सी गाँववालों के लिये, आदि। यह एक छोटे क्रिकेट पिच की तरह है जहाँ सारे दर्शक बाउंडरी लाइन के बाहर हैं। मैदान पूरा भर गया है।

कास्केट को अंतिम समारोह के लिए लाया जा रहा है।

पीआरआईपी गण राजेंद्र के. साबू और के आर रवींद्रन अंतिम संस्कार समारोह में।

नोरा एक लंबी सफ़ेद पोशाक में हैं, खुद को गरिमा और संतुलन से संभाले हुए। उनके बेटे एड्रिन, बॉनी और डैनियल उनके पास बैठते हैं। छह सैनिकों का गार्ड ऑफ़ ऑनर दस्ता बंद ताबूत की दोनों ओर सावधान की स्थिति में खड़ा हो जाता है।

मंत्रियों सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हैं; और आसपास के गाँवों के बहुत से लोगों की भीड़ भी जमा है। युगांडा के राष्ट्रपति योवेरी मुसेवेनी ने पहले दिन कंपाला में हुए समारोह में, जहाँ सैम का शव राष्ट्र की संसद में दर्शनार्थ रखा गया था,

हम अपने दोस्त को वैसे ही याद रखना चाहते हैं जैसे हम उन्हें जानते थे; मुस्कुराता चेहरा, हमेशा शांत, निर्मल और आश्वस्त करनेवाला।

अपना एक प्रतिनिधि भेजा था। इससे पहले सैम की दुखद मौत की खबर मिलते ही युगांडा के राष्ट्रपति ने डैलेस में नोरा से फ़ोन पर बात भी की थी।

पास्ट प्रेसिडेंट राजा कहते हैं कि मृत्यु में भी सैम रोटरी को मान दिला गए।

रोटरी इंटरनैशनल के वाइस प्रेसिडेंट डीन रोर्स भी कंपाला में हुए दोनों समारोहों - संसद एवम् ऑल सेंट्स नाकासेरो की चर्च सर्विस - में शामिल थे।

समारोह के संचालक द्वारा हमारा नाम बुलाये जाने पर हम ताबूत पर गुलाब और कुमुदिनी (लिली) फूलों की पुष्पमाला चढ़ाने के लिये चलते हैं। उसके बाद कई भजन गाये जाते हैं और भाषण दिये जाते हैं। इलाके के राजा, उप प्रधानमंत्री, पादरी, डिस्ट्रिक्ट गवर्नर, पास्ट प्रेसिडेंट राजा और मैं हम सब बोलते हैं। रोटरी इंटरनैशनल के पास्ट प्रेसिडेंट राजा का भाषण भावनाओं और भावुकता भरा है। वे सैम के साथ अपने लंबे रिश्ते और उन घटनाओं के बारे में बोलते हैं जिन्होंने उन्हें छू लिया था। वे कहते हैं कि हम यहाँ इसलिये नहीं आये कि रोटरी ऐसा चाहती थी बल्कि इसलिये आये कि हम अपने

नोरा ओवरी परिवार के सदस्यों के साथ।

पीआरआईपी राजेन्द्र के साबू, आरआईपीई सैम ओवरी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए।

विदा हुए दोस्त और एक महान नेता को श्रद्धंजलि देने के लिये दिल से मजबूर थे।

प्रादेशिक राजा, उप प्रधानमंत्री, अन्य मंत्री, और सभी पादरियों को मिलाकर कोई भी ऐसा वक्ता नहीं है जिसने सैम की प्रशंसा करते वक्त रोटरी के काम और दुनिया को बेहतर बनाने की उसकी कोशिशों के लिये संस्था की तारीफ़ न की हो। अफ्रीका के रोटेरियन और उनके रोटरी नेता यूँ तो दुनिया के सामने हिम्मत दिखा रहे हैं लेकिन उनकी पीड़ा, उनका कष्ट और उनकी भावना कि हम अकेले रह गये हैं उनके चेहरों पर साफ़ दिखाई दे रही है।

और अब वक्त है उस आखिरी यात्रा का जो सैम को उनके अंतिम विश्रामस्थल तक ले जायेगी।

हम अर्थी के आगे, धीमे और सधे कदमों से चलते हुए कब्रिस्तान में उनके पिता की कब्र से ज़रा सी दूरी पर आ पहुँचते हैं। इतनी भारी भीड़ बिल्कुल अनुशासित और गरिमापूर्ण है। हर वक्त सभ्यता बनी रही है। ताबूत को अर्थी पर से सैनिक उठाकर एक यांत्रिकी पट्टे पर रखते हैं जो सही वक्त पर ताबूत को कब्र में नीचे ले जायेगा।

पास्ट प्रेसिडेंट राजा कहते हैं कि मृत्यु में भी सैम रोटरी को मान दिला गए।

कब्र के चारों ओर छह सैनिक हैं - दोनों तरफ़ तीन-तीन - जो दिवंगत नेता को छह तोपों की सलामी देने की तैयारी कर रहे हैं। नोरा और बच्चे, करीबी दोस्त, वीआईपी और कुछ हम लोग, पास में खड़े हैं और पीछे भीड़ इकट्ठा हो गयी है। अतिथि अपना सिर झुका लेते हैं। दबी सिसकियों की आवाज़ मुझे सुनाई दे रही रही है। सैनिक एक साथ तोपों की सलामी देते हैं।

पादरी पूजा करते हैं, एक भजन गाया जाता है और ताबूत के ऊपर से ध्वज हटा दिये जाते हैं। अब सैम को अलविदा कहने का वक्त आ गया है और मशीन धीरे-धीरे ताबूत को कब्र की ज़मीन पर रख देती है। हम ताबूत के ऊपर गुलाब की पंखुड़ियाँ छितराते हैं। मिट्टी मिट्टी में विलीन हो रही है - सैम फ्रॉबिशर ओवरी, रोटरी इंटरनैशनल के प्रेसिडेंट इलैक्ट को दफ़ना दिया गया है।

जेनेसिस 3:19. इन द स्वैट ऑफ़ दाइ फ़ेस शैल्ट दाउ ईट ब्रैड, टिल दाउ रिटर्न अंटु द ग्राउंड; फ़ॉर आउट ऑफ़ इट वास्ट दाउ टेकन; फ़ॉर डस्ट दाउ आर्ट, एंड अंटु डस्ट शैल्ट दाउ रिटर्न।

जब हम कब्र से घर जाने के लिये मुड़ते हैं मुझे शेक्सपियर के हैमलेट और इन शब्दों की याद आती है: *''गुडनाइट, स्वीट प्रिंस; एंड फ़्लाइट्स ऑफ़ एंजेल्स सिंग दी टु दाइ रेस्ट;* (गुडनाइट प्यारे राजकुमार; फ़रिश्ते तुम्हें अब गा कर विश्राम करवाएंगे)।''

लेखक पूर्व रो ई अध्यक्ष हैं।

चित्र : इब्राहिम बागलाना, युगांडा से एक रोटरैक्टर।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

14th JJS JAIPUR JEWELLERY SHOW
Ruby
...Red, Rare, Royal
the December show
JECC, JAIPUR
22-25 DECEMBER 2017
JAIPUR JEWELLERY SHOW
Gold Souk, TF-01, Third Floor, Adjoining Hotel Lalit, Jawahar Circle, Jaipur – 302017, Tel.: +91 141 4035900 / 2725648
E-info@jaipurjewelleryshow.org W-www.jaipurjewelleryshow.org

मंडल EMG तथा CSR चैयरों के लिये एक कार्यशाला

अतुल देव

EMGA गण अशोक पंजवानी और के पी नागेश।

अंचल 4,5, तथा 6A के अंतर्गत आने वाले मंडलों के एचऋ तथा CSR के चैयरों के लिये दिल्ली में एक सुव्यवस्थित कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें हाजिरी संख्या भी अच्छी रही। कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक थे EMGAगण पीडीजी अशोक पंजवाणी तथा पीडीजी के पी नागेश। रोटरी इंटरनैशनल दक्षिण एशिया कार्यालय (RISAO) से निपुणक दल की सहायता से, सत्र में मंडल तथा क्लब परियोजनाओं को कार्यांवित करने के लिये उपलब्ध निधिकरण के सभी पहलुओं को विस्तृत तरीके से विवरित किया गया।

टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने रोटरी द्वारा परियोजनाओं के निधिकरण में EMGF तथा CSR दोनों की अहमीयत पर जोर दिया। उन्होने कहा EMGF – Endowment and Major Gifts Fund – (एंडोमंट एंड मेजर गिफ्टस् फंड) का काम था मंडल तथा क्लब परियोजनाओं में सहायता करना।

जहाँ तक CSR का सवाल है, यह अच्छी बात है कि शाँति तथा संघर्ष समाधान को छोडकर, रोटरी के सभी संकेंद्रण क्षेत्र की परियोजनायें CSR निधि के स्वीकृत उपयोग के अनुरूप पाये गये हैं। ''ऐसे श्रोतों को ढूँढकर, उनका उपयोग करना हमारे मंडलों और क्लबों की जिम्मेदारी है जो रोटरी के साथ सहभागिता करना चाहते हो। किस्मत से रोटरी ने अपनी एक ऐसी छवि बना ली है कि निगम, खासकर बहु राष्ट्रीय कंपनियों को, रोटरी क्लबों/मंडलों के साथ सहभागिता करने से हिचकिचाहट नहीं होगी'' उन्होने कहा।

आगाह करते हुये गुप्ता ने भागियों को परियोजनाओं के संचालन में उच्च मानक बनाये रखने की अहमीयत के बारे में याद दिलाया। उन्होने स्पष्ट कह दिया कि रोटरी लाभार्थिंयों से किसी तरह के निधिकरण की प्रत्याशा नहीं करता है और ना ही उम्मीद करता है। उन्होने जोर देकर कहा कि ''रोटरी फाऊँडेशन से मिले निधिकरण की सहायता से परियोजनाओं को योजित करते हुये या उन्हे कार्यांवित करते हुये अपने लाभार्थियों से निधि या अंशदान की माँग ना करें।''

उन्होने भागियों को कंफ्यूशियस के एक जाने माने कथन के बारे में याद दिलाते हुये कहा – ''मैं जरा खिडकी के पास बैठ जाऊँ ताकि मैं इस बडी दुनिया को देख पाऊँ।'' रोटेरियनों को चाहिये कि बाहर की बडी दुनिया की ओर दखें।

रो इं के निदेशक सी भास्कर यह देखकर खुश हुये कि मंडलाध्यक्षों ने CSR तथा EMGA के लिये मंडल चैयर नियुक्त करने के उनके सुझाव पर प्रतिक्रिया दिखलायी। यह कार्यशाला खास तौर पर इन तीन अंचलों में स्थापित स्थानीय नियुक्तियों के लिये आयोजित किया गया जिन्होने रो इं बोर्ड पर प्रतिनिधित्व किया हैं।

रोटरी परियोजनाओं के निधिकरण के लिये इन दो अति महत्वपूर्ण श्रोतों की अहमीयत पर जोर देते हुये उन्होने चाहा कि मंडल, इन दो बेहद मूल्यवान श्रोतों को उचित तरीके से संस्थागत कर दें। अब जब कि सरकार ने CSR की संकल्पना को शुरू किया है, मानवता परियोजनाओं के लिये बडी निधि उपलब्ध करा दी जायेगी। लेकिन, उन्होने जोर देते हुये कहा, कि इन परियोजनाओं के कार्यांवयन में देखे जाने वाले प्रबंधन से संबंधित मुद्दों को बारीकी से परखा जायेगा और ''किसी भी हालत में हम निधियों का दुरूपयोग होने ना दें। इनका केवल उन परियोजनाओं के लिये उपयोग किया जायें जिनके लिये उन्हे दिया गया होता है। परियोजनाओं के कार्यांवयन

पिछले साल केवल कुछ हज़ार डॉलर के लिये टीआरएफ को देय में हम दूसरे स्थान पर थें, इस साल तीसरे स्थान पर आनेवाले देश को हमने 3 मिलियन डॉलर से पीछे छोड़ दिया है।

टीआरएफ ट्रस्टी
सुशील गुप्ता

बायें से: आरआरएफसी कमल संघवी, आरआईडी सी भास्कर, टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता और अंचल 3 और 6 A के EMGA अज़ीज़ मेमन।

के बाद जो रकम बची हो उसे जरुरी अनुमोदन के बाद अगली परियोजना के लिये रख लिया जाये या उसे टीआरएफ को ही वापिस लौटा दिया भी जाये, लेकिन किसी भी हालत में इसका कहीं और उपयोग नहीं किया जाये।''

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिये योजना को विवरित करते हुये रो इ निदेशक भास्कर ने कहा कि इस कार्यशाला को तीन हिस्सों में आयोजित किया जायेगा। पहले, भागियों को रोटरी फाऊँडेशन से तथा मंडल CSR चेयरों व मंडल EMG चैयरों की बुनियादी भूमिका से परिचीत कराया जायेगा। इसके बाद, इन पहलुओं पर RISAO के कर्मचारी विस्तृत प्रस्तुतियाँ पेश करेंगे। आखिर में, आकस्मिक सत्र में, भागियों को 2रे सत्र में चर्चित सैध्दाँतिक पहलुओं को सम्मिलित करने वाले अभ्यासों में प्रशिक्षित किया जायेगा।

RISAO के प्रादेशिक प्रमुख राजीव रंजन ने, दक्षिण एशिया कार्यालय की भूमिका के बारे में एक संक्षिप्त रूपरेखा पेश की। टीआरएफ के ज्येष्ठ प्रबंधक संजय परमार ने,

टीआरएफ को 20.01 मिलियन अमरीकी डॉलर के अंशदान के साथ भारत दूसरे स्थान पर

रशीदा भगत

अंचल 4, 5 व 6-A के DEMG चैयरों, CSR चैयरों के लिये आयोजित प्रशिक्षण सत्र में टीआरएफ के ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने बडे उत्साह और नाज़ के साथ ऐलान किया कि रोटरी फाऊँडेशन के शताब्दिक वर्ष में भारतीय रोटेरियनों ने मानदंड को बढा दिया है और टीआरएफ के लिये अंशदान को एक नयी ऊँचाई तक पहुँचाया है – कुल 20.01 मिलियन डॉलर का अंशदान! ''और पिछले साल के समान, भारत दुनिया भर में दूसरे स्थान पर है।'' एक बार फिर जापान तीसरे स्थान पर था। लेकिन सबसे प्रोत्साहक बात यह थी कि जब कि पिछले साल ''हम चंद हज़ार डॉलर से दूसरे स्थान पर आये, इस साल तीसरे स्थान के देश को हमने 3 मिलियन डॉलर से पीछे छोड़ दिया दिया है।''

कुल रकम 20.01 मिलियन डॉलर का पूरा हिसाब बतलाते हुये गुप्ता ने कहा पिछले साल भारतीय रोटेरियनों ने एंडौमंट निधि के जरिये 2.3 मिलियन डॉलर, टर्म गिफ्ट (आवधिक उपहार) के जरिये 2.2 मिलियन डॉलर, पोलियो उन्मूलन के लिये 1.9 मिलियन डॉलर इकठ्ठा किये और भारत ने 24 AKS सदस्य दिये।

गुप्ता ने कहा भारतीय रोटेरियनों के आगे CSR निधि के रूप में एक बेहद बडा अवसर खडा है जिसे कानून के तहत लाभ कमाने वाले निगमों के लिये आदेशात्मक बना दिया गया है। पिछले साल रोटेरियनों ने 2 मिलियन डॉलर का लक्ष्य निर्धारित किया था लेकिन उससे कम रकम यानि केवल 1.6 मिलियन डॉलर ही हम जुटा पाये। वर्तमान वर्ष के लिये 4 मिलियन डॉलर का लक्ष्य निर्धारित किया गया और मंडल 3110 तथा 3131 ने जो संकेत दिया है उसे देखते हुये उन्हे उम्मीद थी कि हम इस लक्ष्य को पार कर जायेंगे। उन्होने भागियों से अर्ज किया कि वें ''बहु राष्ट्रीय कंपनियों को तलाशें, क्यों कि उनमे से ज्यादातर कंपनियों ने CSR को नहीं अपनाया है और रोटरी उत्कृष्ट विश्वसनीयता के साथ एक उत्कृष्ट सहभागी है। आपको तो बस मानदंड को कुछ ऊपर उठाना है!'' और फिर ऐसे अनेक निगम थें जिनके पास निधि तो थी लेकिन अपनी खुद की परियोजनायें कार्यांवित करने के लिये जरुरी इतर साधन नहीं थे सो वें रोटरी के साथ सहभागिता करना चाहेंगे क्यों कि उसकी विश्वसनीयता ऐसी है।

डिस्ट्रिक्ट लीडर्स को प्रबंधन पर चेतावनी

के विश्वनाथन

टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता

हाल ही में भारत के रोटरी लीडर्स, डिस्ट्रिक्ट EMG, CSR चेयर और डिस्ट्रिक्ट गवर्नर्स कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। एक रोटरी ज़िले में नेतृत्व के मुद्दे पर उठे विवाद का ज़िक्र करते हुए टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने 'रायट एक्ट' के बारे में बताया। उन्होंने कहा, ''इस तरह की संदिग्ध गतिविधियों में संलिप्त नहीं हों। यहाँ आये हुए हम सभी रोटरी का झंडा धारण करते हैं और हमारे देश की बदनामी नहीं होनी चाहिये। आज हर व्यक्ति कह रहा है कि भारत बढ़िया और विशाल प्रोजेक्ट्स कर रहा है पर इस तरह की गतिविधियों से हमारी छवि ख़राब होती है। जाइये और अपने अपने डिस्ट्रिक्ट में भी इस बात को प्रसारित कीजिये।''

ट्रस्टी गुप्ता ने ये भी कहा कि हम पूर्व में किये कार्यों को नहीं बदल सकते परन्तु ''अब अगर कोई बात सामने आती है तो हम निश्चित ही उसकी जांच करेंगे और दोषी पाए जाने पर दण्डित भी करेंगे। आज के बाद कुछ भी अप्रिय घटित होता है तो उसकी पूरी ज़िम्मेदारी आप और सिर्फ आप पर होगी।''

वे बोले ''यहाँ *रोटरी समाचार* की संपादक रशीदा भगत मौजूद हैं और मैं चाहता हूँ की वे इस घटना का उल्लेख मैगज़ीन में ज़रूर करें।''

गुप्ता ने रोटेरियंस से आग्रह किया की किसी भी अच्छे प्रोजेक्ट्स को करते समय हमेशा तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए। ''पहली, सर्वेक्षण द्वारा यह सुनिश्चित करें की समाज क्या चाहता है और वही प्रोजेक्ट करें न की वो जो आप चाहते हैं। दूसरी, वह प्रोजेक्ट बिना किसी रुकावट के निरंतर चलता रहे और तीसरी यह की CSR से प्राप्त राशि का दुरुपयोग न हो। यदि ऐसा हुआ तो यह रोटरी जगत के लिए बहुत बड़ी क्षति होगी।''

रशीदा भगत

रो इं के मुख्य कार्यालय में फाऊँडेशन की कार्यशैली तथा मंडल व क्लबों की सहायता में प्रादेशिक दक्षिण एशिया कार्यालय की भूमिका को विवरित किया।

इंटरनैशनल फंडरेज़िंग की प्रबंधिका शकुंतला राहा ने विवरित किया कि किस तरह एंडौमेंट, (वृत्तिदान निधि), टर्म गिफ्ट, मेजर गिफ्ट तथा बिक्वेस्ट आदि को रो इं पाकर, उनका उपयोग किया करता था। उन्होने यह भी विवरित किया कि किस तरह, विभिन्न दाताओं को, विभिन्न स्तरों पर, उनके अंशदानों के लिये मान्यता दी गयी।

पीडीजी विनोद बंसल तथा CSR की कार्यभारी तथा प्रबंधिका जयश्री जयरामन् ने कंपनीयों के नये अधिनियमों में CSR के प्रावधानों तथा इस कार्यक्रम के अंतर्गत लाभांवित होने वाले कार्यक्रमों के प्रकार के बारे में समझाया। इस प्रशिक्षण सत्र में इस बात की पुष्टि की गयी कि इतने सालों में अपनी विश्वसनीयता को स्थापित कर देने के बाद इस तरह के निधिकरण अवसरों से रोटरी, सबसे ज्यादा लाभाँवित हो पायेगा।

टीआरएफ, RISAO के समन्वयक रॉय जॉन ने उस प्रक्रिया के बारे में विवरित किया जिसे क्लबों और मंडलों को ग्लोबल ग्राँट के लिये आवेदन करते समय अपनाना होगा। ये आवेदन पत्र स्पष्ट थे और क्लबों और मंडलों को चाहिये कि सख़्ती से इनका पालन करें। गलत सूचना देने से किसी भी अनुदान के लिये टीआरएफ को भेजे गये आवेदन को नामंज़ूर कर दिया जायेगा।

> इस तरह की संदिग्ध गतिविधियों में संलिप्त नहीं हों। हमारे देश की बदनामी नहीं होनी चाहिये। आज हर व्यक्ति कह रहा है कि भारत बढ़िया और विशाल प्रोजेक्ट्स कर रहा है पर इस तरह की गतिविधियों से हमारी छवि ख़राब होती है।
>
> टीआरएफ ट्रस्टी
> **सुशील गुप्ता**

RISAO के प्रबंधकपद विभाग के सहायक व्यवस्थापक, राजेश आनंद ने टीआरएफ द्वारा जारी किये गये निधि के उचित प्रबंधन की अहमीयत पर जोर दिया। उन्होने स्पष्ट कह दिया कि रोटरी किसी भी परियोजना के लिये लाभार्थी से किसी तरह के अंशदान को स्वीकार नहीं करता। यानि किसी लाभार्थी से परियोजना निधि में योगदान करने की या आँशिक-दाता बनने की प्रत्याशा करने की पूरी तरह से मनाही है। मंडलों/क्लबों को सलाह दी जाती है कि वें परियोजना के निधिकरण के लिये आवेदन करते हुये किसी तरह के निजी हित के खिलाफ नजर रखें। निधि के लिये आवेदन करने वाली परियोजनायें रोटेरियनों से व्यक्तिगत तौर पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में संबध्द ना हो, उन्होने कहा।

दो मंडल EMGA गण पीडीजी अशोक पंजवाणी तथा पीडीजी के पी नागेश ने दाताओं को विकसित करने चार-कदम की प्रक्रिया से भागियों को अभ्यस्त कराया। यें कदम थें: पहचान करना, विकसित करना, निवेदन रखना, दाता प्रबंधकपद। प्रशिक्षण सत्र के उद्देश्य, जैसा कि उन्होने तैयार किया था, इस प्रकार है:

- चार-कदम की निधिकरण प्रक्रिया में प्रत्येक कदम की पहचान करना
- एक अच्छा भावी दाता कौन होता है इसे समझना
- विकसित करने की बेहतरीन कार्यनीति को समझना ■

BECOME A SIGHT AMBASSADOR

National Eye Donation Fortnight (August 25 - September 8, 2017)

Rtn. Ian Riseley
RI President, 2017-18

Rtn. Asha Prasanna Kumar
District Governor, 2017-18

Rotary District 3190

ROTARY: MAKING A DIFFERENCE

NAYANA JYOTHI
Why destroy a gift? Donate.
www.nayanajyothi.org

Rotarians, Annes, Rotractors, Interactors and Inner Wheelers.

Your mobile got you your pizza
Your mobile got you your movie tickets
Your mobile got you and your family closer
Your mobile got you your own job
Your mobile got you and your friends together

Your mobile got you many things to make your life easier...

It's time that your mobile helped lakhs of blind people in our country.

Eye donation is not like Blood donation.
We can only pledge our Eyes! Someone has to help to donate.

BE THE SOMEONE, BECOME A SIGHT AMBASSADOR

To become a Sight Ambassador
SMS EYE to **99020 80011**

"There is no lovelier way to thank God for your sight than by giving a helping hand to those in the dark." - Helen Keller

In support of Eye Donation Cause:

ROTARY CLUBS OF DIST 3190, BANGALORE

- BASAVANGUDI
- CANTONMENT
- J P NAGAR
- NATIONAL PARK
- SOUTHWEST
- VIJAYANAGAR

www.nayanajyothi.org

गवर्नर के रूप में सफल होने का मंत्र

रशीदा भगत

एक विविध प्रशिक्षण कार्यक्रम में पीआरआईपी के. आर. रविन्द्रन डीजीयों और डीजीईयों को पालन करने के लिए दिशा–निर्देश देते है एवं पार की जाने वाली चुनौतियां बताते है।

मैं वर्ष 1987 के बारे में अक्सर सोचता हूँ जब मैं मेरे क्लब का अध्यक्ष था, शायद सबसे मजेदार काम जो मुझे कभी मिला, और अतीत का अवलोकन करने पर, मैं जानता हूँ कि यह मेरे जीवन का निर्णायक मोड़ था क्योंकि इसने रोटरी में आगे हुई सभी चीज़ों के लिए मुझे तैयार किया था।''

मंडल नेतृत्वकर्ताओं के लिए दिल्ली में आयोजित विविध प्रशिक्षण सत्र की एक बैठक में मंडल गवर्नरों (2018-19 के लिए) के अगले समूह को संबोधित करते हुए, पीआरआईपी के. आर. रविन्द्रन ने उन्हें एक केंद्रीय विचार बताया - रोटरी क्लबों में बनती है, ना ही मंडल में और ना ही इवेंसटन स्थित रोई मुख्यालय में। उन्होंने एक उद्धरण याद किया जो उन्होंने उनकी कॉलेज की रग्बी टीम से सीखा था - ''आपकी सफलता के आकार को आपकी इच्छा की ताकत से, आपके सपने के आकार से और किस तरह आप पूरे रास्ते निराशाओं को संभालते है, से नापा जाता है।''

अच्छे क्लब अध्यक्षों या डीजीयों को ऐसे ही एक सिद्धांत को उनके क्लबों/मंडलों को चलाने के लिए इस्तेमाल करना चाहिए। क्लबों पर दबाव या मांगों जैसे की टीआरएफ के लिए धन इकठ्ठा करना, अधिक सदस्यों को जोड़ना, बेहतर परियोजनाएं करना, इत्यादि को रखने से पूर्व, ''उन दिनों को याद कीजिये जब आप क्लब अध्यक्ष थे, और यह भी कि प्रत्येक क्लब की उसकी अपनी दैनिक समस्याएं होती है, उन दबावों के अलावा जो आप उन पर डालते है। और, यदि आप अधिक बलपूर्वक, या बहुत अधिक के लिए कहेंगे, तो आप सदस्यों को भगा देंगे।''

यहाँ तक कि क्लबों से युवा सदस्यों को ढूंढने के लिए कहने के दौरान भी, ''डीजीयों को क्लब नेतृत्वकर्ताओं को पुराने सदस्यों को पराया नहीं करने की सालाह देनी चाहिए जो अब हमारी रीढ़ है, या हाल ही में सेवामुक्त हुए सदस्यों को आँखों से ओझल नहीं होने देना चाहिए जिनके पास अभी भी देने के लिए बहुत कुछ है,'' रविन्द्रन के कहा।

यदि ऐसी संवेदनशीलताओं एवं कौशलों को उपयुक्त ढंग से इस्तेमाल किया जाए, तो ''आप ना केवल अधिक प्राप्त करेंगे और बहुत से लोगों तक पहुंचेंगे, बल्कि आप रोटरी को एक अलग स्तर तक ऊपर उठा देंगे।''

अच्छी परियोजनाओं को धन मिलेगा

रविन्द्रन की बातों को ध्यानमग्न होकर सुन रहे डीजीयों से उन्होंने कहा, कि अपनी रोटरी यात्रा एवं नेतृत्व के विभिन्न पदों के दौरान, उन्होंने ''सीखा की यदि आपके पास एक अच्छी परियोजना है, और आप उसका पेशेवर ढंग से संचालन करते है, तो पैसा इकठ्ठा करना कोई समस्या नहीं होती है।'' एक अच्छा परीक्षण श्रीलंका में चलायी गई स्कूल परियोजना थी ए- सुनामी के बाद 25 आधुनिक, सर्व-सुविधायुक्त स्कूलों के निर्माण करने की। परियोजना की लागत 12 मिलियन डॉलर थी; हमनें इसे 10 महीनों में इकठ्ठा किया और सभी स्कूलों का कार्य तीन वर्ष

के विश्वनाथन

मंडल नेताओं का एक भाग (दायें से) पीआरआईपी के आर रविंद्रन, आरआईडी सी भास्कर, माला भास्कर और पीडीजी संजय खन्ना।

के अंदर पूर्ण किया और अधिकांश पैसा गैर-रोटरी संस्थानों से आया।

इसी प्रकार, 1990 के दशक के मध्य में पोलियो प्लस आन्दोलन के शुरूआती चरण में, श्रीलंका को एक पूर्ण राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस (NID) के लिए 5 मिलियन डॉलर की आवश्यकता थी। इसमें से, 1.5 मिलियन डॉलर टीआरएफ से आये; ''शेष राशि को हमने स्वास्थ्य मंत्रालय के कार्यालय में पाँच दर्शकों - जापान, यूएस, यूके के राजदूतों और डब्ल्यूएचओ एवं यूनिसेफ के प्रतिनिधियों - की मौजूदगी में आयोजित एक बैठक में इकट्ठा किया,'' रविन्द्रन ने कहा।

डीजीइयों को यह याद रखने के लिए ज़ोर देते हुए कि धरती पर हमारा समय सीमित है, उन्होंने उनसे उनके कार्यकाल के एक वर्ष को अत्यधिक उत्पादकता से, समझदारी से, विचारपूर्वक एवं उदारतापूर्वक इस्तेमाल करने एवं उनके क्लब अध्यक्षों को भी ऐसा करने की सलाह देने के लिए कहा, इसके साथ ही एक परिवर्तन लाने के लिए उनकी प्रतिभा की पूरी ताकत लगाने के लिए कहा क्योंकि केवल रोटरी ही ऐसा कर सकती है। ''याद रखिये कि एक नया वर्ष आपकी प्रतीक्षा कर रहा है, वादों से भरपूर: हमारे जीवन की किताब में एक नया अध्याय, जिसके पन्ने खाली है, भरे जाने की राह देखते हुए।'' यह सुनिश्चित करना उन सभी पर निर्भर है कि यह अध्याय या तो ''उदार कार्यों, जिम्मेदारी, अच्छे से किये गए कार्यों, और एक अच्छी तरह जी गयी ज़िंदगी से; या एक के बाद एक दिन, सभी एक समान, साधारण से भरा जाए।''

पूर्व रोई अध्यक्ष ने डीजीयों को यह भी याद दिलाया कि प्रसिद्धि अस्थायी होती है, सम्मान स्थायी होता है।''विराट कोहली प्रसिद्ध है। यदि वह एक सीजन में रन नहीं बना पाता है तो वही भीड़ जिसने उसे प्यार किया था उसको धिक्कारेगी! यह प्रसिद्धि है। राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने सम्मान अर्जित किया था। जिसे वह उनकी कब्र तक ले गए और फिर अनंत काल तक। यह सम्मान है।''

उन्होंने उनसे सदा उस आदर्श का पालन करने के लिए कहा जो मंच से कभी नहीं बोलते है ''जिसे आप स्वयं अमल में नहीं लाते है। हमेशा कथनी को करनी बनाइये। अन्यथा आप एक राजनेता से बेहतर नहीं होंगे।''

रविन्द्रन ने याद किया कि रोई अध्यक्ष के रूप में उन्होंने हमेशा इस बात पर ज़ोर दिया कि रोटरी को एक व्यवसाय की तरह चलाया जाना चाहिए।''और जिन लोगों ने मुझसे कहा कि रोटरी व्यवसाय नहीं है,

लेकिन इसके जैसा कोई अन्य व्यवसाय नहीं है। हमारा व्यवसाय साक्षरता और स्वास्थ्य है; आजीविका और आशा है; और उनमें से बहुत से लोगो के लिए जिनकी हम मदद करते है, हमारा व्यवसाय चमत्कार है।

पीआरआईपी के. आर. रविन्द्रन

मैंने उनसे कहा, हाँ, यह है। लेकिन इसके जैसा कोई अन्य व्यवसाय नहीं है। हमारा व्यवसाय साक्षरता और स्वास्थ्य है; आजीविका और आशा है; और उनमें से बहुत से लोगो के लिए जिनकी हम मदद करते है, हमारा व्यवसाय चमत्कार है।''

इसलिए डीजीयों के रूप में उन्हें उनके अध्यक्षों से कहना होगा कि उनके पास केवल एक साल है ''जिंदगियों को बदलने के लिए और स्मारकों को बनाने के लिए जो हमेशा टिके रहेंगे - ग्रेनाइट या संगमरमर में उकेरे हुए नहीं, बल्कि पीढ़ियों की जिंदगियों एवं दिलों में उकेरे हुए। उन्हें बताइए कि हम वे है जो ऐसा कर सकते है। यह हमारा समय है; यह वापस नहीं आएगा, तो चलिए इसे पकड़ते है।''

एक अन्य बैठक में, रविन्द्रन ने 2017-18 मंडल गवर्नरों के हाल ही में तैयार किये गए समूह को प्रेरित किया कि वे ''रोटरी प्रबंधन के व्यावहारिक दायित्वों को उसी जोश एवं स्तर से निभाएं जैसे आप आपके पेशेवर जीवन में निभाते है।''

सदस्यों को अधिक से अधिक लाभ दीजिये

उन्होंने कहा कि उनकी कंपनी के सीईओ के रूप में, उन्होंने उनके शेयरधारकों को अधिक से अधिक लाभ देने के लिए हर फैसला लिया, नीतियों से कोई भी समझौता ना करते हुए। तो रोटरी के लिए इसे क्यों अलग होना चाहिए, उन्होंने पूछा। उन्होंने कहा, ''रोटरी नेतृत्वकर्ताओं के रूप में हम जो भी करते है, हर फैसला जो हम लेते है, उन सदस्यों की भलाई के लिए होना चाहिए जिनका हम प्रतिनिधित्व करते है और जिन्होंने हम पर विश्वास किया है। वही कुशलता और वही उत्पादकता जो हम रोटरी के बाहर ढूँढते है, उसे रोटरी के भीतर भी हर एक रोटेरियन द्वारा हठीले ढंग से ढूँढा जाना चाहिए।''

परन्तु डीजी रहते हुए उनके वर्ष के दौरान रोटरी को सर्वश्रेष्ठ देना काफी नहीं है। जवाबदेही अत्यंत आवश्यक है; ''आप सभी को काफी उचित भत्ता दिया जा रहा है। यह उस पैसे से आता है जो रोटेरियन देय शुल्क के रूप में चुकाते है।

यह उनका हक़ है कि वे उनके पैसे के अच्छे मूल्य की आशा करें।''

इसके अलावा, उन्हें हमेशा यह याद होना चाहिए कि उनके रोई निदेशक ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन उस लागत पर कर रहे है जिसे पुनः रोटरी सदस्यों द्वारा दिया जा रहा है। ''हमें उनके निवेश पर अच्छा लाभ दिखाने की जरूरत है, और यह लाभ बढ़ी हुई सदस्यता, या संस्थान को दान, या मीडिया स्थापन के संबंध में मापनीय होना चाहिए।''

और इन परिणामों को हासिल करने के लिए एक अच्छा प्रबंधन सिद्धांत है स्वयं को सर्वोत्तम लोगों से घेर लीजिये जो आपको मिले, और उन्हें उनका काम करने के लिए सशक्त बनाइये। मुझे आशा है कि आपने ऐसा किया है और केवल ऐसे लोगों को स्थापित नहीं किया है जिन्होंने मतदान में आपकी मदद की। ''कृपया कर लोगों को मित्रता या एहसानों के आधार पर मत चुनिए।''

इसके विपरीत, उन्हें शीर्ष पेशेवर लोगों एवं विशेषज्ञों को ढूँढना चाहिए जो उनके क्लबों में किसी ऑफर पर उपलब्ध है और उन्हें उनके दलों में शामिल करना चाहिए, विशेषरूप से रणनीतिगत नियोजन, संपर्क, वित्त जैसे क्षेत्रों में।

रविन्द्रन ने डीजीयों को उन संसाधनों का कुशलतापूर्वक इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित किया जो रोई ने उनके फायदे के लिए इकट्ठा किये है, जिनमें रोटरी क्लब सेंट्रल शामिल है और साथ ही उनके क्लबों को उन फायदों के बारे में शिक्षित करने के लिए भी प्रेरित किया जो रोटेरियन रोटरी वैश्विक रिवार्ड्स का इस्तेमाल करके प्राप्त कर सकते है, जिसके अंतर्गत रोटेरियन प्रख्यात सेवाओं, प्रतिष्ठानों, और दुनिया भर के संगठनों से छूट प्राप्त कर सकते है।

उन्होंने अंत में कहा, ''संक्षिप्त में, जिस चीज़ की उनसे अपेक्षा की गयी वह है अच्छा शासन, जवाबदेही और निपुणता;'' इन सभी को सुनिश्चित करके वे पूरे रोटरी जगत के लिए एक सही उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। ■

रोटरी भारत रोटरेक्टरों पर आश्रित है

वी. मुत्तुकुमारण

इस वर्ष मंडल 3232 में पचास नए रोटरेक्ट क्लब स्थापित हुए। हाल ही में चेन्नई में आयोजित हुए रोटरेक्ट स्वर्ण जयंती समारोह पर नए अध्यक्षों और सचिवों ने पीआरआईपी गेरी हुआंग से अपने प्रशस्ति-पत्र प्राप्त किये। जबकि 25 क्लबों ने अपने अधिकार-पत्र प्राप्त कर लिए है, बचे हुए क्लब रोई बोर्ड द्वारा प्रतीक्षित है।

भव्य आयोजन का उद्घाटन करते हुए, आरआईडी सी. भास्कर ने कहा, भारत अपने नेतृत्व में प्रत्यक्ष बदलाव के साथ परिवर्तन की प्रक्रिया में है और राष्ट्र-निर्माण में रोटरी की भूमिका पूर्वनिर्धारित हो जाती है जैसे ही यह रोटरेक्टरों को पोषित करती है जो अपने बहु-आयामी विशेषताओं के लिए जाने जाते है। उन्होंने रोटरेक्टरों को रोटरी मंच द्वारा दिए जाने वाले 'सीखने के अवसर' का पूर्ण लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा, ''आप अपने महाविद्यालयों में एवं दोस्तों के बीच प्रेरणास्रोत है। दुनिया में क्या हो रहा है यह जानने एवं सफल नेताओं से सीखने के लिए रोटरी आपको सक्षम बनाती है, और समुदाय में सार्थक परिवर्तन लाने के लिए आपको प्रेरित करती है। इसलिए, हमेशा नए परिवर्तन लाने के विचार के साथ वैश्विक नागरिकों की तरह सोचिये।''

पीआरआईपी गैरी हुआंग ने आरआईडी सी भास्कर (चरम दायें) और डी जी आर श्रीनिवासन (बीच में) की मौजूदगी में रोटरैक्टर्स को एक पुरस्कार प्रदान किया।

खड़े हो जाइये, गिनती में आइये

पीआरआईपी गेरी ने कहा, रोटरेक्टरों को याद रखना चाहिए कि वह कुछ बड़ी चीज़ का हिस्सा है और उन्हें समुदाय में परिवर्तन लाने के लिए कार्य करना ही होगा। हर रोटरेक्टर के पास एक विकल्प है कि वह कितना बड़ा प्रभाव लाना चाहता है या चाहती है। ''आप खड़े होकर गिनती में शामिल होना चाहते है, या अवसर को गंवा देना चाहते है, यह निर्णय आपको करना है'', उन्होंने कहा और उनके अनुकरणीय कार्य को ज़ारी रखने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया। साथ ही, ''स्वयं को चुनौती दे, वह करें जो रोचक हो ना कि वह जो सरल हो। केवल लगातार परिवर्तन लाते रहिये।''

रोटरेक्ट (रोटरी-इन-एक्शन) वर्ष 1968 में शार्लेट, नार्थ कैरोलिना में बना था, और रोई मंडल को विश्वास था कि रोटरेक्टर रोटरी के भविष्य को आकार देंगे। ''इसलिए, जब वे उनकी काबिलियत में नेतृत्वकर्ता बनने के लिए तैयार होते है, हम उनके सभी प्रयासों में उनकी मदद करना एवं समर्थन देना चाहते है'', पीआरआईडी पी. टी. प्रभाकर ने कहा।

COL ने रोटरेक्टरों का सहज रूप से रोटेरियनों में परिवर्तित होना आसान बनाया है और यह भारतीय युवाओं के सामर्थ्य का और अधिक उपयोग करेगा जो

रोटरी क्लब चेन्नई सेलेक्ट के रोटरीयन पीआरपी गैरी हुआंग द्वारा अपन क्लब का चार्टर प्रप्थ करते हुए। चित्र में डीजी आर श्रीनिवासन, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, डीजीएन जी चंद्रमोहन, आईपीडीजी नटराजन नागोजी, मंडल महिला सदस्यता अध्यक्ष मंजूला वी कृष्णन और सदस्यता अध्यक्ष संगरं भी शामिल हैं।

देश की 1.2 बिलियन जनसंख्या का 70 प्रतिशत है। फुटबॉल सनसनी पेले के शब्दों को दोहराते हुए: 'मुझे किसी देश के युवा दिखाइए, मैं उस देश का भविष्य बताऊंगा', प्रभाकर ने इस तथ्य को प्रकाशित किया कि एक अकेले मंडल में रोटरेक्टरों की संख्या के मामले में मंडल 3232 दुनिया का सबसे बड़ा मंडल है।

डीजी आर. श्रीनिवासन ने कहा, ''रोटरेक्ट उसके सदस्यों को अच्छे अनुभवों से तराशता है, आपको आगे लाता है और आपको एक चौतरफा नेतृत्वकर्ता बनाता है। हम अपनी परियोजनाओं एवं सामुदायिक पहलों को लागू करने के लिए रोटरेक्टरों पर बहुत अधिक निर्भर है।''

पीडीजी आई.एस.ए.के. नाज़र ने याद किया कि मंडल में रोटरी गतिविधियों में बढ़त वर्ष 2013-14 से हुई जब रोटरेक्टरों ने हाई-5 में एक गिनीज़ कीर्तिमान स्थापित किया और उसके बाद अगले वर्ष एक अन्य कीर्तिमान माय फ्लैग, माय इंडिया में स्थापित किया। उत्सवों की शुरुआत में विशाल 25 मिनट के ध्वज मार्च की सराहना करते हुए, उन्होंने कहा कि इसने ''एक वैश्विक सम्मलेन का वातावरण उत्पन्न कर दिया था।''

रोटरी की गतिविधियों का सार प्रस्तुत करते हुए डीआरआर सी. धनकोड़ी ने कहा कि वे रोटरेक्टरों के लिए एवं उनके द्वारा एक आरवायएलए, वर्ष में दो बार होने वाला एक प्रदर्शन कार्यक्रम, संचालित करने वाले प्रथम व्यक्ति थे। उन्होंने वर्ष 2007 में रोटेशिया, एक वैश्विक बैठक, की; वर्ष 2012 में एशियाई डीआरआर-निर्वाचित प्रशिक्षण संगोष्ठी (एडीईटीएस) *प्राइड* की; और *द वन*

पीआरआईपी गैरी हुआंग और आरआईडी सी भास्कर।

अंतर्राष्ट्रीय नाइट में कोरिन्ना हुआंग, माला भास्कर, महेश्वरी शिवशंकरन और सुजाता श्रीनिवासन।

शीर्षक वाले रोटरेक्ट ज़ोन इंस्टिट्यूट 2017 की मेजबानी की थी।

मुंबई, कोल्हापुर, मैसूर, उदुमलपेट और तिरुनलवेली के डीआरआर के अलावा, 1700 से अधिक रोटरेक्टर एवं 300 रोटेरियन कार्यक्रम में उपस्थित थे।

नौ नए रोटरी क्लब

उस शाम, पीआरआईपी गेरी ने नौ नए रोटरी क्लबों का उद्घाटन किया - पाँच अधिकृत क्लब एवं अन्य चार रोई मंडल से अधिकार-पत्र प्राप्त करने की प्रतीक्षा में। उन्होंने कहा, ''मैं 31 वर्ष की उम्र में 40 साल पूर्व रोटरी से जुड़ा था, और मैं मेरे क्लब का सबसे युवा सदस्य था जहाँ औसत आयु 50 वर्ष की थी। लेकिन भारत में, युवा रोटेरियनों के डीजी बनने एवं अन्य नेतृत्वकर्ता के पदों पर शीघ्रता से पहुँचने के मौके अधिक है क्योंकि अब आपको युवा सदस्य मिल रहे है।''

दो दिवसीय कार्यक्रम - *ग्रैंड्योर* - के आयोजन के लिए श्रीनिवासन एवं उनके दल की प्रशंसा करते हुए, पीआरआईडी पी. टी. प्रभाकर ने याद किया कि 34 ज़ोन में से, दक्षिण भारत को सम्मिलित करने वाले ज़ोन-5 ने, पीआरआईपी गेरी के अध्यक्ष के कार्यकाल (2014-15) के दौरान जुड़े कुल 70,000 रोटेरियनों में से 63 प्रतिशत का योगदान दिया था। उन्होंने आगे कहा, पिछले पाँच वर्षों में, रोटरी भारत ने सदस्यता बढ़त के मामले में प्रथम स्थान हासिल किया है और संस्थान को दान देने के मामले में यह यूएस के बाद दूसरे स्थान पर है।

अंतर्राष्ट्रीय रात

पीआरआईपी गेरी को सम्मानित करने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय रात्रि का आयोजन किया गया जिसका मुख्य उद्देश चेन्नई में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को पोलियो उन्मूलन में पिछले 33 वर्षों में रोटरी द्वारा किये गए जबर्दस्त कार्य को प्रदर्शित करना था। कार्यक्रम के अध्यक्ष एल. नीलकांतन ने कहा, ''यह एक ऐसा कार्यक्रम था जिसमें ताइवान, मलेशिया, कोरिया, श्रीलंका, मॉरिशस, जर्मनी और स्पेन के राजनायकों एवं व्यापार प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया था, और हमारे पास यूएस, जापान और रूस के प्रवासी व्यावसायिक समुदाय के प्रतिनिधि थे।''

पोलियो उन्मूलन के क्षेत्र में वर्ष 1985 से 2017 तक दुनिया भर में रोटेरियनों द्वारा किये गए व्यापक कार्य को एक वीडियो फिल्म द्वारा अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों को समझाया गया।■

संक्षिप्त में

- मंडल 3232 के पास 121 रोटरेक्ट क्लब और 26,000 रोटरेक्टर है, दुनिया में किसी भी अकेले मंडल के लिए सबसे अधिक। 50 नए क्लबों के जुड़ने के साथ, वर्तमान संख्या 171 है।
- हाई-5 और *माय फ्लैग, माय इंडिया* में रोटरेक्टरों द्वारा 2013-14 में बनाए गए दो गिनीज़ कीर्तिमान है।
- आरआईडी भास्कर ने कहा कि रोटरेक्ट जगत के क्रियाकलापों एवं आयोजनों को प्रकाशित करने के लिए जल्द ही *रोटरेक्ट समाचार*, एक डिजिटल पत्रिका, ज़ारी होगी।

एक विजयी
रोटरी-सीएसआर का सम्मिश्रण

वी. मुत्तुकुमारण

रोटरी क्लब भुवनेश्वर मीडोज (मंडल 3262) द्वारा, एक महान प्रयास - 'सहायता', पीडीजी अश्विनी कुमार कर के दिमाग की उपज - के अंतर्गत न्यू इंडिया एश्योरेंस कम्पनी के सीएसआर कोष की मदद से चार सामुदायिक परियोजनाएं पूर्ण की गई। 200 देहाती महिलाएं; स्कूलों के 3000 छात्र; 26 पोलियो-पीड़ित; और एक रोटरी नेत्र अस्पताल इस परियोजना के लाभार्थी थे।

मई 2016 में मुंबई स्थित सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के मुख्य कार्यालय में कर द्वारा सभी चार उप-परियोजनाओं के लिए दिए गए विस्तृत प्रस्तुतीकरण के बाद उपक्रम ने अपनी सीएसआर गतिविधि के हिस्से के रूप में पूरे रू 37.68 लाख की निधि को मंजूर किया। पहली बार, मंडल में ''मिसाल तैयार करते हुए किसी क्लब ने इतनी बड़ी परियोजना कार्यान्वित की है। जो पूरी तरह सीएसआर द्वारा प्रायोजित थी,'' पीडीजी अश्विनी कार ने कहा।

पीडीजी अश्विनी कार, क्लब द्वारा प्रदान किए गए दोहरी डेस्क पर बैठे छात्रों के साथ।

महिलाओं के लिए 'नारी समृद्धि'

क्लब ने एक गैर सरकारी संगठन 'कृषि जीविका निर्माता कंपनी' के साथ नयागढ़ जिले के धनचेंगेड़ा गाँव की 200 महिलाओं में से प्रत्येक को आठ फल देने वाले पौधे देने का करार किया है। सहायता के हिस्से के रूप में, यह गैर सरकारी संगठन पेड़ों को बड़ा करने में गाँव की महिलाओं की सहायता करेगा।

उन्होंने कहा, ''प्रत्येक महिला कम-से-कम रू500-600 प्रतिमाह कमाएगी। हमने उन्हें पौधों के साथ 8 किलो वानस्पतिक खाद भी दी है।'' मिनी मोहान्टी, एक लाभार्थी, रोटरी को धन्यवाद देते हुए कहती है, अपने पति से रोजाना के खर्चों के लिए पैसे मांगने के बजाय, ''अब, एक सीमित मात्रा में ही सही, लेकिन मैं कमाने की आशा कर सकती हूँ। मैं मेरे बच्चों की जरूरतों का ध्यान भी रख सकती हूँ।

एक अन्य लाभार्थी, मंजुलता मोहान्टी, आश्वस्त महसूस करती है कि साल भर फलदार पेड़ों की कमाई से वह अपनी मूल जरूरतों का ध्यान रख सकेगी। उनमें से ज्यादातर या तो अनपढ़ या स्कूल छोड़ी चुकी, लेकिन आर्थिक सहायता से वंचित थी।

स्कूलों के लिए दोहरी मेज़

परियोजना ने 27 स्कूलों में 1,000 दोहरी मेज़ देने में मदद की। कर कहते है, ''मैंने 23 अन्य रोटरी क्लबों को भी अपने गोद लिए हुए स्कूलों, जो हैप्पी स्कूलों में तब्दील होने की प्रक्रिया में है, में मेज़ों का वितरण करने के लिए राज़ी किया।'' स्कूलों को बालासोर, भद्रक, केओंझर, बेरहामपुर, कटक, पुरी और धनकनाल ज़िलों से चुना गया जिनमें प्राथमिक शिक्षा के लिए बुनियादी सुविधाओं की कमी थी।

सहायता ने 26 विकलांगों को व्हीलचेयर और तिपहिया साइकलें, एवं बालासोर में रोटरी नेत्र अस्पताल को एक एम्बुलेंस भी प्रदान की ताकि गाँव के मरीजों की जाँच की जा सके और उन्हें आगे के उपचार के लिए अस्पताल लाया जा सके।

क्लब के गोद लिए हुए स्कूल में पीआरआईडी शेखर मेहता की अध्यक्षता में आयोजित एक बैठक में लाभार्थियों को चलने-फिरने के सहायक, दोहरी मेज़ और एम्बुलेंस प्रदान की गई। तत्कालीन डीजी नारायण नायक और न्यू इंडिया एश्योरेंस के डीजीएम एस. बेहेरा भी मौजूद थे।

सीएसआर परियोजनाओं का विस्तार

कर को एनटीपीसी के वित्त निदेशक की तरफ से और 1,000 दोहरी मेज़ों को प्रदान करने एवं सरकारी स्कूलों में छात्राओं के लिए सेनेटरी नैपकिन बेचने वाली मशीनों को स्थापित करने के लिए सीएसआर निधि देने के लिए भी साधारण तौर पर मंजूरी मिल गई है। ''हम पहले चरण में इसे 100 स्कूलों में स्थापित करना चाहते है, और लागत रू 60 लाख हो सकती है,'' उन्होंने कहा।

सहायता परियोजना की महान सफलता का सार प्रस्तुत करते हुए, नायक ने कहा, यह एक महान विचार है ''जिसने हमें जबर्दस्त ख्याति प्रदान की और हमारी सार्वजानिक छवि को बढ़ाया है।''

क्लब ने तिरतोल की प्रमोदिनी रौल, एक एसिड हमले की पीड़िता, जिसने अपनी दोनों आंखें खो दी थी, की दृष्टि पुनः बहाल करने के उपचार के लिए रू 50,000 अपने कोष से दान दिये।■

रोटरी इन्टरनेशनल के भावी अध्यक्ष

बैरी रैस्सीन वर्ष 2018-19 के लिए और मॉर्क मैलोनी 2019-20 के लिए रोटरी इन्टरनेशनल के अध्यक्ष हैं।

आर आई पी ई बैरी रैस्सीन

रोटरी इन्टरनेशनल के निर्वाचित अध्यक्ष बैरी रैस्सीन रोटरी क्लब, ईस्ट नासाऊ, न्यू प्रोविडेंस, बहामास के सदस्य है। एक अध्यक्ष के रूप में उनका उद्देश्य है कि रोटरी की 'पब्लिक इमेज' को मजबूती मिले और डिजीटल साधनों के आधिकारिक प्रयोग से इसकी पहुँच का दायरा बढ़े। ''जब भी कोई यह जानेगा कि रोटरी क्लब इतना अच्छा काम कर रहे है, तो वह अपने आप रोटरी में भागीदार बनने का प्रयास करेंगे। और, अब हमें रोटरी की सदस्यता में वृद्धि के लिए ऐसे अलग तरह के मॉडल स्वीकार करने चाहिए जो उन लोगों को भी हमसे जुड़ने का अवसर दें, जो हमारे लक्ष्यों को हासिल करने में सहयोगी बनना चाहते हैं।'' उनका कहना है, ''मैं हमारे युवा कार्यक्रमों को आगे बढ़ाना चाहता हूँ, विशेष रूप से रोट्रेक्ट को रोटरी में परिवर्तित करना ताकि युवा पेशेवर रोट्रेक्ट क्लब रोटरी क्लबों में बदल सकें।''

अब हमें रोटरी की सदस्यता में वृद्धि के लिए ऐसे अलग तरह के मॉडल स्वीकार करने चाहिए जो उन लोगों को भी हमसे जुड़ने का अवसर दें, जो हमारे लक्ष्यों को हासिल करने में सहयोगी बनना चाहते हैं।

आर आई पी ई बैरी रैस्सीन

रैस्सीन ने फ्लोरिड़ा विश्वविद्यालय से स्वास्थ्य एवं अस्पताल प्रशासन में एम.बी.ए. किया है, और वे अमेरिकन कॉलेज ऑफ हैल्थ केयर एक्सीक्यूटीव्स की फैलोशिप लेने वाले बहामास के प्रथम व्यक्ति है। वे हाल ही डॉक्टर्स हॉस्पिटल हैल्थ सिस्टम की 37 वर्ष की सेवा के बाद सेवानिवृत्त हुए हैं, और अभी भी वहाँ सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं। वे अमेरिकन हॉस्पिटल एसोसिएशन के आजीवन सदस्य हैं, और क्वालिटी काउन्सिल ऑफ द बहामास, हैल्थ एजूकेशन काउन्सिल एण्ड एम्पलॉयर्स कम्फेडरेशन सहित अनेक संगठनों में बोर्ड सदस्यों के रूप में सेवायें दे चुके हैं।

वर्ष 1980 से रोटेरियन रैस्सीन ने रोटरी में निदेशक और रोटरी फाउण्डेशन बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया है। वे रोटरी इन्टरनेशनल के ट्रेनिंग लीडर और पूर्व रोटरी इंटरनेशनल अध्यक्ष के.आर. रवीन्द्रन के सहायक के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। उन्हें 'स्वयं से ऊपर सेवा पुरस्कार' से सम्मानित किया जा चुका है, इसके अलावा वर्ष 2010 में हेती में आये भूकम्प के बाद वहाँ रोटरी द्वारा संचालित राहत कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाने पर उन्हें विभिन्न मानवीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है। वे और उनकी पत्नी इस्थर मेजर डॉनर हे, और रोटरी फाउण्डेशन बेनेफेक्टर हैं। रैस्सीन को सैम एफ ऑवेरी के स्थान पर निर्वाचित किया गया है। ऑवेरी का रोटरी इन्टरेनशनल के निर्वाचित अध्यक्ष के रूप में जुलाई में सप्ताह के कार्यकाल में ही निधन हो गया था।

मॉर्क डेनियल मैलोनी, अमरीका के अलबामा राज्य के रोटरी क्लब, डेकाटर के सदस्य हैं। यदि कोई और उम्मीदवार चुनौती नहीं देता है, तो वे एक अक्टूबर को रोटरी इन्टरेनशनल के मनोनीत-अध्यक्ष घोषित कर दिये जायेंगे।

पेशे से अटॉर्नी, मैलोनी का कहना है कि ''क्लब, ऐसा स्थान है, जहाँ रोटरी होती है।'' उनका लक्ष्य है कि क्लबों को सामुदायिक स्तर पर मजबूत किया जाकर, रोटरी की सेवा करने वाले संगठन की संस्कृति को संरक्षित रखा जाए और इसकी उन्नति के लिए नये क्षेत्रों में सम्पर्क किया जाए।

उनका कहना है, ''पोलियो उन्मूलन के बाद रोटरी की पहचान बड़ी होगी और हमारे पास बहुत अवसर होंगे। हमारे अन्दर वह क्षमता है कि हम अच्छा कार्य करने वले विश्व स्तर के शक्ति केन्द्र बन सकते हैं। वे भी रोट्रेक्ट पर फोकस करना चाहते है। उनका मानना है, ''रोटरी अच्छे रोट्रैक्टर्स को खो रही है।''

मैलोनी लॉ फर्म ब्लैकबोर्न, मैलोनी एण्ड स्कूर्पअ एलएलसी के प्रमुख है, यह फर्म कर-निर्धारण, सम्पत्ति-नियोजन और कृषि कानूनों के क्षेत्र में कार्य करती है। उन्होंने अमेरिका के मध्य पश्चिमी और दक्षिण पूर्वी क्षेत्रों में कृषि सम्बन्धी बड़े ऑपरेशन का प्रतिनिधित्व किया है और उन्होंने अमेरिका बार एसोसिएशन की कृषि में कर-निर्धारण सम्बन्धी समिति की अध्यक्षता भी की है। वे अमेरिका बार एसोसिएशन, अलाबामा स्टेट बार एसोसिएशन और अलबामा लॉ इंस्टीट्यूट के सदस्य है।

मैलोनी डेकाटर के धार्मिक समुदाय में भी सक्रिय रहे हैं। वे अपने चर्च की वित्तीय समिति और स्थानीय कैथोलिक स्कूल के बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इसके अलावा उन्होंने कम्युनिटी फाउण्डेशन ऑफ ग्रेटर डेकाटर के अध्यक्ष, मॉरगन काउंटी मील्स के चैयरमेन, यूनाइटेड वे ऑफ मॉरगन काउंटी और डेकाटर-मॉरगन काउंटी चैम्बर ऑफ कॉमर्स के निदेशक के रूप में भी अपनी सेवायें दी है।

वर्ष 1980 से रोटेरियन मैलोनी ने रोटरी इन्टरनेशनल के निदेशक, ट्रस्टी, रोटरी फाउण्डेशन के उपाध्यक्ष, रोटरी इन्टरनेशनल अध्यक्ष के सहायक, जोन कॉर्डिनेटर, फ्यूचर विजन के लीडर और 2014 में सिडनी कन्वेंशन समिति के प्रमुख के रूप में सेवायें दी है।

मॉर्क डेनियल मैलोनी

उन्होंने ऑपरेशन रिव्यू कमेटी और रोटरी पीस सेन्टर कमेटी में भी सेवायें दी हैं। उन्हें रोटरी फाउण्डेशन साइटेशन और प्रतिभाशाली एवं विशिष्ट सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। मैलोनी और उनकी पत्नी गे पॉल हेरिस फेलो, मेजर डॉनर और बीक्वेस्ट सोसाइटी सदस्य है।

रोटरी इन्टरनेशनल अध्यक्ष निर्वाचित और रोटरी इन्टरनेशनल अध्यक्ष नामित का चयन करने वाली समिति में :एनी एल मैथ्यू (अध्यक्ष), रोटरी क्लब कोलम्बिया ईस्ट (अमरीका), एन-ब्रिट एजेबोल, रोटरी क्लब फालून-कॉपरवेगन, (स्वीडन), ऑरसेलिक बलकान, रोटरी क्लब इस्तांबुल-कारकॉय (तुर्की), जेम्स एन्थनी ब्लैक, रोटरी क्लब डनून (स्कॉटलैण्ड), जॉन टी. ब्लाइंट, रोटरी क्लब सेबॉस्टोपॉल (अमरीका), फ्रेंक एन. गोल्डबर्ग, रोटरी क्लब ओमाहा-सबअर्वन (अमरीका), एन्टानिओ हलॉज, रोटरी क्लब क्यूरीटीबा-लोटे (ब्राजील), जैकसन एस.एल. हेस्ट, रोटरी क्लब ताइपे सनराइज (ताइवान), हॉल्गर नैक, रोटरी क्लब हरजोग्टम लॉन बर्ग-मोन (जर्मनी), मासाहिरो कुरोदा, रोटरी क्लब हचीनो, साउथ (जापान), लेरी ए लसैफोर्ड, रोटरी क्लब कंसास सिटी प्लाजा (अमरीका) पी.टी. प्रभाकर, रोटरी क्लब, मद्रास सेन्ट्रल (भारत), एम.के. पांडुरंगाशेट्टी, रोटरी क्लब, बैंगलोर (भारत), एंडी स्मालवुड, रोटरी क्लब गल्प वे-हॉबी एयरपोर्ट, ह्यूस्टन (अमरीका), नॉर्बर्ट टर्को, रोटरी क्लब एजेसियो (फ्रांस), योशीमाशा वाटानेव, रोटरी क्लब कोजिका (जापान) और संग कू युन, रोटरी क्लब सेई ह्यांग (कोरिया) शामिल थे।

© rotary.org

भव्य सैर

जब आप 2018 रोटरी अंतराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए 23 से 27 जून तक टोरंटो में होंगे, तो आप नियागारा-ऑन-द-लेक, नियागारा नदी के मुहाने पर स्थित एक खूबसूरत शहर की यात्रा के लिए कुछ समय निकालना पसंद करेंगे। अनेक पर्यटक 80 मील की दूरी तय कर यहाँ पहुँचते हैं और 19वीं शताब्दी की इमारतों में बुटीक और कैफे के साथ पंक्तियों में खडे.छायेदार मार्गों में टहलने, या निकट स्थित अनेक विश्व-स्तरीय वाइनरी में से एक में विभिन्न प्रकार के शराब का स्वाद लेते हैं।

सिर्फ 14 मील दूर, आप विश्व के सबसे बडे. पर्यटक आकर्षणों में से एक को देखने का आनंद उठा सकते है। नियाग्रा झरना तीन झरनों का सामूहिक नाम है जो कनाडा-यू.एस. की सीमा पर फैला हुआ है। कनाडा में होर्सेशू झरना देखने आने वाले पर्यटक अनेक गतिविधियों का आनंद उठा सकते हैं जिनमें झरने के बीच से होकर नाव की सवारी और झरने के नीचे स्थित सुरंगों का भ्रमण करना शामिल है।

एक अन्य विकल्प स्ट्रैटफ़ोर्ड की एक दिन की यात्रा है, जो टोरंटो से सिर्फ 95 मील दूर स्थित है। यह महाद्वीप के सबसे बडे. शास्त्रीय रेपर्टरी थिएटर कंपनी का घर है, जो अप्रैल से अक्टूबर तक एक दर्जन से अधिक प्रोडक्शन पेश करता है। स्ट्रैटफ़ोर्ड फेस्टिवल शेक्सपियर के कार्यों को विशेष रूप से रेखांकित करता है।

कनाडा में इस छोटे से शहर में बेहतरीन रेस्तरां हैं। बीयर प्रेमियों और कोकोहॉलिक्स के आंनद उठाने के लिए भी टेस्टिंग टूर्स उपलब्ध हैं। और आप कनाडा के तरल सोना, मेपल सिरप से बनाई गई कृतियों का नमूना भी प्राप्त कर सकते हैं।

— *रंडी ड्रुज़िन*

2018 टोरंटो में आयोजित होने वाले रोटरी सम्मेलन के लिए *riconvention.org* पर पंजीकरण करें।

एक टी.बी. मुक्त भारत की ओर

रशीदा भगत

टीबी की उत्तरजीवी एक युवा नंदिता वेंकटेसन को, पीआरआईडी यशपाल दास की अध्यक्षता में संपन्न हुए एक टीबी मुक्त भारत की ओर सेमिनार में एकत्रित हुए मंडल गवर्नरों का पूरा ध्यान मिला, जब उसने अपने ''पेट के बड़े घावों की तुलना भयानक कट्टप्पा से की। आपके पेट में एक राक्षस, एक कट्टप्पा बैठा हुआ है, एक राक्षस जिसे आप देख भी नहीं सकते।'' सेमिनार का आयोजन 'रोटरी भारत राष्ट्रीय टीबी नियंत्रण एवं जागरुकता समिति' द्वारा 'इंटरनेशनल यूनियन फॉर टूबर्क्योलोसिस एंड लंग डिजीज' के साथ साझेदारी में किया गया था।

टीबी के साथ उसके 18 महीने में एक बार नहीं बल्कि दो बार हुए युद्ध का विवरण देते हुए, नंदिता ने कहा कि उसकी छह सर्जरियां हुई थी, वह प्रतिदिन 15 विभिन्न दवाइयां ले रही थी, इतना सब बिना किसी लाभ के। ''वह एक अंतहीन बुरा स्वप्न था; मैं अस्पताल में तीन महीने तक ज़िंदगी और मौत से जूझ रही थी। मैं लगातार 12 घंटों तक तेज शारीरिक दर्द के कारण रोती रहती थी।'' कुछ दवाइयों के कारण मैंने मेरी 80 प्रतिशत सुनने की शक्ति खो दी और अब मैं दोनों कानों से 90-95 प्रतिशत तक बहरी हूँ।

टूबर्क्योलोसिस के साथ लड़ाई ने मुझे मेरी युवा अवस्था में अवसादग्रस्त कर दिया था। तब मैं केवल 23 साल की थी। और सभी लोगों, उसके डॉक्टरों ने भी, उसे उसकी बीमारी के बारे में किसी से भी बात करने से मना कर दिया वरना उसे अलग कर दिया जायेगा। आखिरकार, 2015 में उसने खुलकर बात की, इस बात का एहसास होने पर कि उसे दूसरे बचने वालों से भी बात करनी होगी। शीघ्र ही उसने उनको दी जा रही टीबी की दवाइयों के दुष्प्रभावों पर चर्चा करते हुए उन्हें सलाह देना शुरू किया। इस सब से ज्यादा, उसने आगे कहा, सभी टीबी से ठीक होने वालों को बोलने की जरूरत पर सलाह दी जानी चाहिए, क्योंकि किसी को भी, जरूरी नहीं गरीब व्यक्ति को ही, टीबी हो सकती है।

वह एक अंतहीन बुरा स्वप्न था; मैं अस्पताल में तीन महीने तक ज़िंदगी और मौत से जूझ रही थी। मैं लगातार 12 घंटों तक तेज शारीरिक दर्द के कारण रोती रहती थी।

टीबी की उत्तरजीवी
नंदिता वेंकटेसन

पी आर आई डी वाई पी दास और आर आई डी सी भास्कर।

आज वह एक संवाददाता के तौर पर काम कर रही है।

साल 2017-18 के मंडल गवर्नरों के लिए विशेष रूप से संचालित कार्यक्रम में, पीआरआईडी यशपाल दास, जो रोटरी टीबी नियंत्रण समिति के प्रमुख भी है, ने टीबी की जागरुकता फैलाने एवं भारत सरकार के साथ हाथ मिलाकर वर्ष 2025 तक भारत को टीबी मुक्त करने के लिए काम करने हेतु डीजीयों से वचन मांगा। उन्होंने डीजीयों से मंडल में एक या दो ऐसे लोगों को नियुक्त करने पर ज़ोर दिया जो टीबी के बारे में जागरूकता फैलाने पर काम करने में रूचि रखते हो।

रोई निदेशक सी. भास्कर, दक्षिण पूर्वी एशिया के णछखजछ के क्षेत्रीय निदेशक डॉक्टर जेमी टोंसिंग, णड-खऊ के डॉक्टर रुबेन, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के डॉक्टर निशांत कुमार और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के आर्थिक सलाहकार अरुण कुमार झा ने, सहभागियों को निरोध्य एवं साध्य टीबी की खौफनाक बीमारी के बारे में जागरूक करने के लिए भीड़ को संबोधित किया।

बैठक में सामने आयी एक खतरनाक बात यह थी कि दुनिया भर के टीबी के मरीज़ों का 25 प्रतिशत हिस्सा भारत में रहता है, और भारत में प्रत्येक मिनट एक व्यक्ति की टीबी से मौत होती है।

इस बात को प्रभावी ढंग से कहने के लिए कि टीबी का इलाज संभव है और दवाइयाँ मुफ्त में दी जाती है, नंदिता के साथ, सौरभ राणे ने भी बीमारी होने एवं उससे उबरने के उनके अनुभव को साझा किया।

UNION के वकालत एवं साझेदारी अफसर शिवा श्रेष्ठा ने रोटरी भारत टीबी नियंत्रण समिति के साथ UNION की साझेदारी के बारे में बात की और इस बारे में भी बात की कि कैसे इस साझेदारी जिसमें

दोनों पक्षों की ओर से कोई वित्तीय वचनबद्धता नहीं थी ने पिछले एक वर्ष में टीबी पर जागरुकता फैलाने के लिए प्रगति की।

बॉलीवुड आइकॉन अमिताभ बच्चन, स्वयं टीबी से बचने वालों में से एक, जो अब टीबी मुक्त भारत के ब्रैंड एम्बेसेडर है की वीडियो क्लिपों को प्रदर्शित किया गया।

मंडल 3190 की डीजी आशा प्रसन्नकुमार ने पीआरआईडी दास से पल्स पोलियो एनआईडी की तर्ज पर एक कार्यक्रम तैयार करने का अनुरोध किया जिसमें साल के कुछ दिन टीबी की जागरुकता फैलाने के लिए नियत हो। मंडल 3141 के डीजी प्रफुल्ल शर्मा ने कहा कि वह पीडीजी सुभाष कुलकर्णी से मदद मांगेंगे और आगे कहा, ''हम झुग्गी क्षेत्रों में टीबी की जागरुकता फैलाने के लिए काम करने की योजना बना रहे है।''

चित्र : के विश्वनाथन

टीबी की उत्तरजीवी नंदिता वेंकटेसन।

एक रोटरीयन की साहित्यिक उपलब्धि

टीम रोटरी न्यूज़

नव-निर्वाचित मंडल गवर्नर सायंतन गुप्ता, मंडल 3240, और डॉ बिना विश्वास ने, हाल ही में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी से राष्ट्रपति भवन में मुलाकात की। उन्होंने बंगाली गाथागीत, मेघनाद वध काव्य, का अंग्रेजी संस्करण प्रस्तुत किया, जिसे मूलतः 19वीं शताब्दी के बंगाली कवि माइकल मधुसूदन दत्त ने लिखा था। गुप्ता और बीना ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया है और इसे लिफी प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है।

यह बंगाली साहित्य रावण के पुत्र मेघनाद या इंद्रजीत के वध पर आधारित है, जिसका वध राम के भाई लक्ष्मण द्वारा भगवान शिव की पूजा करते हुए किया गया था। सबसे पहले सन 1861 ईस्वी में प्रकाशित प्रस्तुत पुस्तक की प्रशंसा रवीन्द्रनाथ टैगोर, ईश्वर चंद्र विद्यासागर और बांकिमचंद्र चटोपाध्याय जैसे महान विद्वानों ने की है।

डी जी इ सायंतन गुप्ता और बिना बिस्वास अपनी किताब भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रणाब मुख़र्जी को पेश करते हुए चित्र में गुप्ता की पत्नी रोटेरियन पुष्पिता और बिना बिस्वास के पति एयर कमोडोर के बिस्वास और किताब की प्रकाशक टीम भी मौजूद है।

गुप्ता जी ने कहा, ''महामहिम राष्ट्रपति मुखर्जी ने हमारे साथ पुस्तक के कुछ भागों पर चर्चा की और हमारे कार्य की सराहना की।'' अनुवादित संस्करण द्विभाषी है, जिसमें मूल बंगाली पांडुलिपि के साथ-साथ अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। रितुपर्णा बसु द्वारा स्थितयों का चित्रण कविता में दृश्यों को जीवंत बना देता हैं।

गुप्ता जी, जो मालदा में एक स्त्री रोग विशेषज्ञ है, ने 18 पुस्तकें प्रकाशित की है। बीना अंग्रेजी की एक प्रोफेसर है और उन्होंने अभी तक आठ पुस्तकें प्रकाशित की है।

चित्र सौजन्यः राष्ट्रपति भवन

रोटरेक्टरों का रिचार्ज

जयश्री

रोटरेक्ट नेतृत्वकर्ताओं के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम को इसलिए बनाया गया ताकि वे ऐसे श्रेष्ठ रोटेरियन बने जो समुदायों में सकारात्मक बदलाव ला सकें।

दक्षिण एशिया में 1.2 लाख रोटरेक्टरों के साथ, दुनिया के कुल 22 प्रतिशत रोटरेक्टर है, लेकिन इनमें से रोई को केवल 16 प्रतिशत की ही सूचना है। ''मेरे ख़याल से, हम रोटरेक्ट की शक्ति का कम इस्तेमाल कर रहे है और उन्हें ऊँचा उठने एवं अच्छे नेतृत्वकर्ताओं के रूप में विकसित होने के लिए अवसर नहीं दे रहे है। दिल्ली स्थित दक्षिण एशिया कार्यालय में भी सटीक रोटरेक्ट आंकड़े नहीं है, और ना ही उनके पास रोटरेक्टर-से-रोटेरियन बने लोगों के आंकड़े है।''

इन शब्दों के साथ रोई निदेशक सी. भास्कर ने मंडल रोटरेक्ट प्रतिनिधियों (डीआरआर) और मंडल रोटरेक्ट समिति अध्यक्षों (डीआरसीसी) के लिए हाल ही में रोटरेक्ट की स्वर्ण जयंती का उत्सव मनाने के लिए हैदराबाद में आयोजित हुई उन्मुखीकरण बैठक की शुरूआत की।

उन्होंने कहा, ''स्वर्गीय सैम ओवोरी अक्सर कहा करते थे कि रोटरेक्टर रोटरी का जीवन बीमा है। हाँ, आप सभी रोटरी का भविष्य है। सही मार्गदर्शन के साथ, मुझे यकीन है, आप रोटरी की धरोहर को अगली पीढ़ी और अगली सदी तक लेकर जाएंगे। मैं सच्चे दिल से आप में से हर एक से यह आशा करता हूँ कि आप रोटेरियन बनकर अधिक समर्पण एवं जोश के साथ मानवता की सेवा करना ज़ारी रखें।''

उन्होंने आगे कहा, डीजी, डीआरआर एवं डीआरसीसी के मध्य तालमेल की कमी है जो कि रोटरी और रोटरेक्ट दोनों के लिए नुकसानदेह है। अफ्रीका में रोटरेक्टरों की सहभागिता का उल्लेख करते हुए, बस्कर ने कहा कि अफ्रीका एक अलग ज़ोन इसलिए बन गया है क्योंकि वहाँ रोटरेक्टर काफी सारी सेवा परियोजनाएं अपने हाथों में ले रहे है। ''ओवोरी ने अगुवाई की। उनमें रोटरेक्ट के लिए अत्यंत उत्साह था और वह उनके 2018-19 के कार्यकाल के दौरान इस पर अधिक ज़ोर देना चाहते थे।''

रोई निदेशक ने रोटरेक्टरों के प्रशिक्षण के लिए उसी प्रकार की संरचना की मांग की, जैसी प्रशिक्षण संरचना इस वर्ष मंडल नेतृत्वकर्ताओं के लिए मानकीकृत की गयी। उन्होंने डीआरआर को सलाह दी, ''इस बैठक से सन्देश को आगे ले जाइए और उन युवाओं की विशाल पलटन के मध्य एक तरंगनुमा प्रभाव को जन्म दीजिये जिनकी ऊर्जा अभी तक इस्तेमाल नहीं की गयी है।''

मेजबान डीजी जे. अब्राहम (मंडल 3150) ने कहा कि वह प्रसन्न है कि उनका रोटेरियनों की अगुवाई में एक रोटरेक्ट कार्यक्रम की मेजबानी करने का सपना सच हो गया है। उन्होंने कहा, एक मजबूत रोटरेक्ट बनाना और नेतृत्वकर्ताओं को तैयार करना यहाँ से ले जाने योग्य सर्वश्रेष्ठ बात है।

डीआरआर, रो ई निदेशक सी भास्कर के साथ एक सेल्फी लेते हुए ।

बाएं से: पीडीआरआर राजेश सुब्रमण्यान, संयोजक सैम पतिबंदला, आरआईडी सी भास्कर, आर सी एच राजेंद्र राय, ऐआरसी शरत चंद्र, रोटेरियन राम सीशु और आरआई इंटरैक्ट और रोटरेक्ट कमेटी के सदस्य कार्तिक किट्टू।

दो दिवसीय कार्यक्रम, जिसे समुचित रूप से नाम दिया गया *स्फूर्ति* (तेलगु में 'प्रेरित होना'), डीआरआर एवं डीआरसीसी के लिए एक प्रेरणादायक कार्यशाला, एवं एआरसी और आरसी के लिए रोटरेक्टरों की आकांक्षाओं एवं ताकत को समझने का एक बढ़िया अवसर था। इस कार्यक्रम में नेपाल (3292) और उत्तर-पूर्व (3240) के डीआरआर को मिलाकर 33 डीआरआर, 31 डीआरसीसी और आरसी अशोक गुप्ता एवं आरसी राजेंद्र राय के नेतृत्व में 12 एआरसी ने हिस्सा लिया।

कायक्रम संयोजक सैम पतिबंदला ने कहा, डीआरसीसी - ''जो अब तक एक औपचारिक पद था - रोटेरियनों एवं रोटरेक्टरों के मध्य की लापता कड़ी है। यदि आपकी समिति मजबूत है, तो आप चमत्कार कर सकते है।'' उन्होंने कहा, हैदराबाद बैठक तो और भी ख़ास है क्योंकि इसके जुड़वा सिकंदराबाद का रोटरेक्ट क्लब, नार्थ कैरोलिना के रोटरेक्ट क्लब के बाद दुनिया का दूसरा सबसे पुराना रोटरेक्ट क्लब है।

जब उन्होंने पूछा कि कितने डीआरसीसी के डीआरआर सह-अध्यक्ष है, तो केवल दो ही हाथ ऊपर उठे। उन्होंने कहा, ''यह अत्यावश्यक है कि सभी डीआरसीसी सह-अध्यक्षों के रूप में डीआरआर को नियुक्त करें और समिति में एक संतुलित रोटेरियन-रोटरेक्टर सदस्यता बनाए रखें।''

राय, एक पूर्व इंटरेक्टर एवं रोटरेक्टर, ने आठ बिन्दुएं बताई (बक्सा देखें) जो बेहतर रोटरी-रोटरेक्ट तालमेल में मदद करेंगी, जिनकी बस्कर ने एक सुझाव के साथ प्रशंसा की कि इन्हें सभी रोटरी क्लबों के साथ साझा किया जाए। दोनों सिद्धांतों - 'स्वयं से बड़ी सेवा' और रोटरेक्ट के 'सेवा के साथ साहचर्य'- के मध्य एक तालमेल है। ''हमें सेवा में साझेदारों की तरह एक साथ काम करना होगा और रोटरेक्टरों का केवल स्वयंसेवक के रूप में उपयोग नहीं करना होगा,'' राय ने कहा।

एक परिकल्पना का विकास

रोटरी क्लब बैंगलोर के रोटेरियन राम सेशु और मंडल 3190 के प्रेरक ने 'अपने स्वप्न को खोजिये' पर एक ऊर्जावान प्रस्तुति के माध्यम से दर्शकों को बांधे रखा। समूह को चार दलों में बांटकर उन्होंने उनका ध्यान केन्द्रित किया क्योंकि उन्होंने अन्य दलों के साथ कुछ सवालों के जवाब ढूँढने के लिए बातचीत की कि कैसे हम रोटरी-रोटरेक्ट रोटरी अनुबंध को उन्नत कर सकते है; कैसे हम युवा पीढ़ी के लिए रोटरेक्ट को अधिक आकर्षक बनाए; रोटरेक्टरों के लिए रोटरी को प्राकृतिक मंजिल बनाने के लिए तीन चीज़ें और; प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता बनाने के लिए उन्हें किस प्रकार से प्रशिक्षित किया जा सकता है, इत्यादि।

उनके स्वपन कथनों को तैयार करने में उनकी मदद करते हुए, सेशु ने कहा, आपकी परिकल्पना को इन प्रश्नों का जवाब देना चाहिए: ''आपको किस बात के लिए याद किया जाएगा; आपसे बात करके रोटेरियन कैसा महसूस करते है; सामाजिक मीडिया पर आप रोटरी की किस बात पर प्रकाश डालेंगे; इस वर्ष आप कौन सी सामुदायिक परियोजनाएं करेंगे।''

परियोजनाओं का एक मिश्रित बैग

जब डीआरआर को उन मुद्दों को कहने के लिए अवसर प्रदान किया उन्होंने एक सूची ज़ाहिर की, बिना किसी प्रतिबन्ध के, यहाँ तक कि उन्होंने रोई निदेशक को यह सुझाव भी दिया कि वह परिषद् से रोई कार्यक्रमों हेतु एक रियायती दर की अनुशंसा करें। जब एआरसी आई.एस.ए.के. नज़र ने रोटरेक्टरों द्वारा की गयी अभिनव परियोजनाओं की मांग की, वे एक मिश्रित बैग के साथ सामने आए। डीआरआर नागार्जुन (3202) ने कहा, ''एक दिल के मरीज के हृदय प्रत्यारोपण के प्रयोजन ने हमें वास्तव में उत्तेजित किया।'' रोटरेक्टर भी कोयम्बटूर के समीप तिरुपुर के आसपास के 13 आदिवासी गाँवों में समग्र

एआरसी आई एस ऐ के नज़र (दाएं से चौथे) द्वारा आयोजित एक इंटरैक्टिव सत्र।

पीडीजी एच. राजेन्द्र राय ने रोटरेक्टरों के साथ मिलकर काम करने के रिश्ते को स्थापित करने के लिए इन बिन्दुओं को दर्शाया:

- रोटरेक्टरों को अपना सेवा-में-साझेदार की तरह समझे
- उनकी दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में दखल ना दे। जब उन्हें जरुरत हो तभी मार्गदर्शन दे
- उनका शारीरिक गतिविधियों के लिए उपयोग ना करें; उनके रचनात्मक संसाधनों का प्रयोग अपनी परियोजनाओं को मजबूती देने के लिए कीजिये
- अपने क्लब की निधि का उपयोग करके उन्हें परियोजनाओं को संगठित करने दीजिये
- अधिक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों का आयोजन कीजिये
- उन्हें करियर मार्गदर्शन/अवसर प्रदान करने के लिए रोटरी के भीतर एक समर्थन प्रणाली की रचना कीजिये
- उत्कृष्ट रोटरेक्टरों को पहचानकर उन्हें पुरस्कृत कीजिये
- उन्हें सही मौके पर रोटरी से जुड़ने के लिए आमंत्रित कीजिये।

विकास को अंजाम दे रहे है; मंडल 3291 का उसका स्वयं का रोटरेक्ट भवन है। विश्वविद्यालय-आधारित क्लबों की स्थापना के बजाय समुदाय-आधारित क्लबों की स्थापना के रोटरेक्टरों के सुझाव की सराहना की गयी।

रोटरेक्टरों को आकर्षित करने की रणनीतियों पर चर्चा करने के दौरान, पीडीआरआर और रोटरी साउथ एशिया मल्टीडिस्ट्रिक्ट इनफार्मेशन आर्गेनाईजेशन के पूर्व अध्यक्ष राजेश सुब्रमण्यम ने उनके अनुभव को यह कहकर याद किया कि, ''हम रोटरेक्टरों को उनके मित्रों को बैठकों एवं परियोजना स्थलों पर लाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे, रोटरेक्टरों के रूप में, हमें कुछ संगठनों में नियोजन प्राथमिकता का लाभ भी मिलता है।'' जब उनके माता-पिता ने उनसे पूछा कि उनके लिए रोटरेक्ट में क्या है, तो उन्होंने उसका जवाब उन्हें एक पुरस्कार समारोह में आमंत्रित करके दिया। ''जब उन्होंने मुझे पुरस्कार प्राप्त करते हुए देखा, वे अत्यधिक रोमांचित हुए। वह कहते है कि रोटरेक्ट ने मुझे बेहतर के लिए परिवर्तित किया है। मैं बहुत असंगठित, अधीर और गैरजिम्मेदार हुआ करता था। लेकिन अब मुझे स्वयं पर और जो कुछ भी थोड़ा मैं समाज के लिए करता हूँ उस पर मुझे गर्व है,'' सुब्रमण्यम आगे कहते है।

सहायक गवर्नरों एवं सदस्यता प्रमुखों के साथ पूर्व की बैठकों में, आरआईडी भास्कर ने सदस्यता वृद्धि पर ध्यान केन्द्रित किया था। उन्होंने कहा, ''कार्यभार सौंपिये और अपने सदस्यों की संस्थान में उनकी रूचि को बरकरार रखने के लिए उन्हें व्यस्त रखिये; सही व्यक्ति को सही काम दीजिये। इस प्रकार से आप नेतृत्वकर्ताओं का विकास करेंगे। चूंकि अब भारत में रोटरी ने संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि कर ली है। अगर आपका दल प्रदर्शन नहीं करता है, तो उनसे घुमा फिराकर कहने के बजाए स्पष्ट रूप से कहिये।''

ग्रामीण क्लबों को ऐसे लोगों को अवश्य आमंत्रित करना चाहिए जो एक रोटेरियन बनना वहन कर सकते है, कॉर्पोरेट से रोटरी क्लबों द्वारा रिश्ते बनाना ताकि उनके सीएसआर कोष को समुदाय के विकास के लिए इस्तेमाल किया जा सके ऐसे कुछ अन्य मुद्दे थे जिन पर निदेशक भास्कर ने प्रकाश डाला। पोलियो कोष के लिए उदार धन की दरकार करते हुए, उन्होंने कहा, ''दुनिया भर के देश 'पोलियो समाप्ति अभियान' के लिए उदारतापूर्वक सहायता कर रहे है। यह आवश्यक है कि हम भारतीय, इस कार्यक्रम के सबसे बड़े लाभार्थी, अभियान के लिए अपनी सहायता में वृद्धि करें।''

रोटेरियन हरि किशन वाल्मीकि द्वारा स्वर्गीय आरआईपीई सैम ओवोरी की स्मृति में तैयार किये गए एक डाक स्मारक स्टाम्प को निदेशक द्वारा ज़ारी किया गया।

चित्र: जयश्री

जेल शॉप
प्रसन्नता का संचार कर रहा है!

अनुभा अग्रवाल

जयपुर सेंट्रल जेल, पूर्णतया सुधार गृह में विकसित हो रहा है। राजस्थान सरकार ने जेल बंदियों के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए एक अभिनव पहल की है जिसमे राजस्थान की समृद्ध और सांस्कृतिक विरासत के साथ बंदियों को पेशेवर कौशल प्रदान किया जायेगा।

अपने आप में पहला उपक्रम, ये है 'आशाएं' द जेल शॉप, जिसका उद्घाटन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया ने जनवरी 2017 में किया।

राजस्थान में अपनी तरह की पहेली इस जेल शॉप में सबसे विशेष बात यह है की यहाँ कला में जानकार, गैर सरकारी संगठनों, वस्त्र उद्योग से प्रसिद्ध डिजाइनरों के मार्गदर्शन में तैयार किए गए कलाकृतियां संग्रहीत हैं। यहाँ कि कपड़ा विशेषज्ञ मार्तण्ड सिंह, चित्रकार यशवंत श्रीवास्तव और बांग्लादेश की विख्यात बीबी रसेल व प्रख्यात डिज़ाइनर जोड़ी इब्राहिम और ठाकुर के मार्ग निर्देशन में बंदियों को प्रशिक्षित किया जा रहा है साथ ही NGO संगठन व NID अहमदाबाद के प्रोफेसर्स का भी प्रशिक्षण में योगदान है।

जब बीबी रसेल ने यहाँ बनाये हुए उत्पाद देखे तो वो अचंभित रह गयी और उन्होंने जेल अधिकारीयों को आश्वस्त किया की प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाले 'जयपुर हेरिटेज वीक' में 'आशाएं' के उत्पादों को मंच उपलब्ध कराएंगी।

सबसे महत्वपूर्ण कारक जो अन्य समान पहल से 'आशाएं' को अलग करता है वह शहर के बाजार में जेल परिसर के बाहर का स्थान है।यहाँ तैयार उत्पाद सिर्फ जयपुर ही नहीं बल्कि जोधपुर, अजमेर, भीलवाड़ा और उदयपुर जेल के करीब 2500 पुरुष और महिला बंदियों द्वारा तैयार किये गए हैं।

राजस्थान के गृह मंत्री गुलाब चंद कटारिया ने कहा 'आशाएं' का एकमात्र उद्देश्य बंदियों को व्यस्त रखने के साथ जीविका कमाने में सहायता करना है।जेल में 7 वर्ष से अधिक क़ैद और उम्र

बांग्लादेशी फैशन डिज़ाइनर बीबी रसेल (बीच में) जेल शॉप, जयपुर में।

राजस्थान के मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया बंदियों द्वारा विकसित आर्गेनिक सब्जियों के स्टॉल में, चित्र में डीजी (जेल) अजीत सिंह (चरम दायें) भी मौजूद है।

क़ैद काट रहे बंदि ये उत्पाद बना रहे हैं और इससे अर्जित आय बंदियों के कल्याण में ही प्रयोग ली जाती है ।जहाँ इन बंदियों को पूरे दिन काम करने के बाद रु 20 मिलते थे वहीं 'आशाएं' की प्रतिदिन बिक्री एक लाख रुपये से अधिक होने के कारण इन्हे रु 130 से रु 180 तक मिलते हैं जिसे सीधे उनके बैंक खातों में जमा कर दिया जाता है।

इससे बंदियों में सुरक्षा भाव और परिवार में सहयोग करने से स्वावलम्बन और आत्मसम्मान की भावना भी जागृत होती है।

राजस्थान पुलिस के डीजी अजीत सिंह ने कहा ''पहले इन उत्पादों की गुणवत्ता को ले कर संशय था और ये केवल सरकारी विभागों द्वारा ही खरीदे जाते थे परन्तु धीरे धीरे इनकी गुणवत्ता में सुधार किया गया।'' मुख्यमंत्री सलाहकार परिषद् की सदस्य मालविका सिंह ने जब इन उत्पादों को एक डिज़ाइनर शॉप में बेचना शुरू किया तो इन उत्पादों की बिक्री दिनोदिन बढ़ती गयी।

यहाँ बंदियों को चित्रकला, कलाकृति, गलीचा बुनाई, फर्नीचर और काष्ठ कला में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जोधपुर और उदयपुर जेल के बंदी शीट मेटल से बने उत्पादों में प्रवीण होते हैं और इससे अलमारी, कूलर आदि बनाये जाते हैं।

यह कला अब जयपुर के बंदियों को भी सिखाई जाएगी।

ख़ुशी की बात यह है की इन बंदियों को अच्छे आचरण और उत्पादन में भागीदारी से उनकी सज़ा 4 दिन से 3 महीने तक कम हो सकती है। तत्पश्चात उन्हें खुली जेल में स्थानान्तरित किया जा सकता है जहा वो उत्पादन में सहयोग कर थोक आपूर्ति बढ़ा सकते हैं।

इस पहल ने जनता के बीच जेल अधिकारीयों की सकारात्मक छवि का निर्माण किया है और कैदियों के लिए दयाभाव जागृत किया है।

कटारिया ने कहा इस पहल ने जनता के बीच जेल अधिकारीयों की सकारात्मक छवि का निर्माण किया है और कैदियों के लिए दयाभाव जागृत किया है।

यहाँ यह सब मिलता है

जेल शॉप के दो भाग हैं। पहले भाग में रज़ाई, चद्दर, मेजपोश, स्कर्ट, लहंगे, बंधेज के दुप्पटे, नेपकिन, अचार, मसाले, हैंडमेड पेपर बैग्स, महिला बंदियों द्वारा बनाये जाता है। दूसरे भाग में पुरुष बंदियों द्वारा तैयार फर्नीचर, कूलर, दरी, पेंटिंग्स आदि प्रदर्शित हैं। जेल शॉप की विशिष्ट बात ये है की इसकी बाहरी दीवारों पर बंदियों द्वारा बनाये गए भित्तिचित्र और पेंटिंग इसे और जीवंत और आकर्षक करती है। शहर के बीच और जेल परिसर में ही आशाएं' होना, इसे बाकी जेल दुकानों से पृथक करता है।

यहाँ रु 10 में एक लिफाफे से लेकर श्री कृष्ण की पेंटिंग भी रु 10000 में मिल जाती है। ज्यादातर लोग यहाँ पेंटिंग्स, फर्नीचर और दरी पसंद कर रहे हैं।

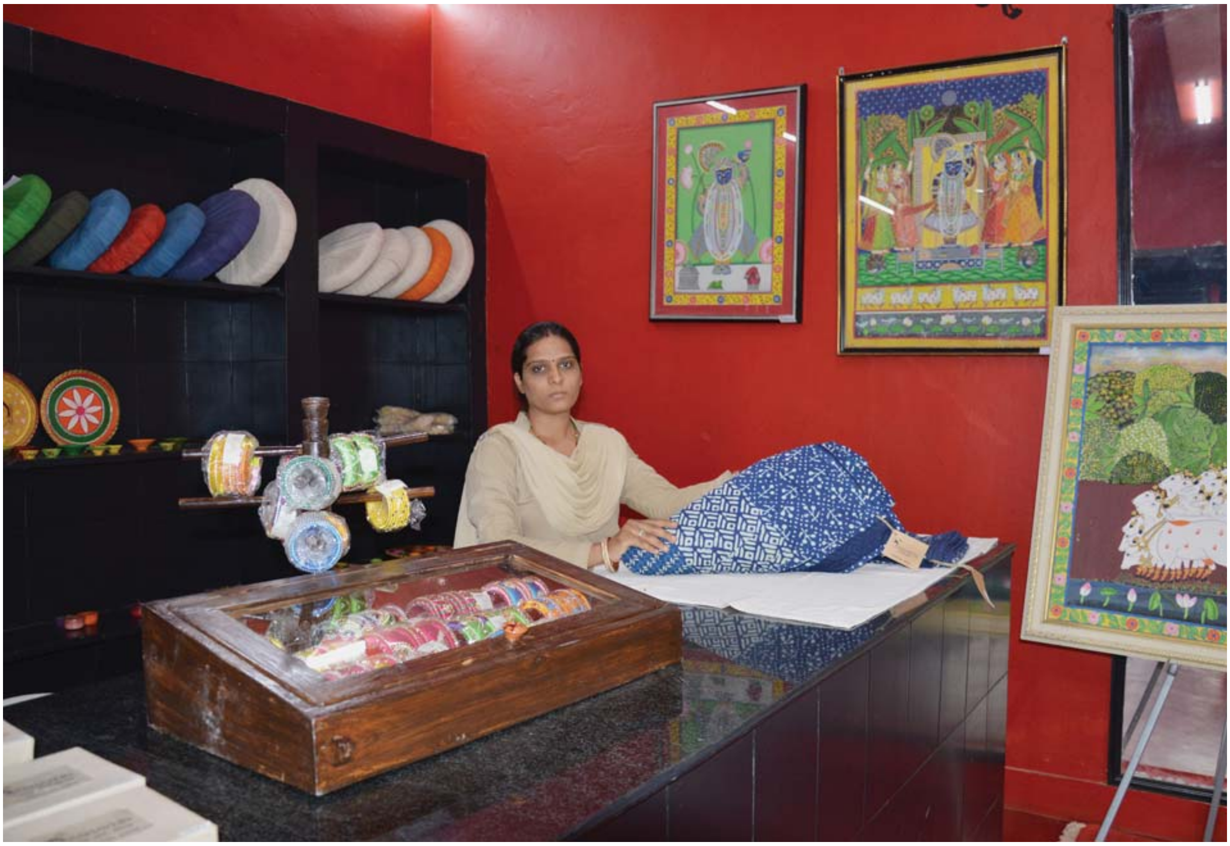

कांस्टेबल संपत्ती महिला बंदियों द्वारा डिज़ाइन किए कुछ उत्पादों को प्रदर्शित करती है।

एक गलीचा बुना जा रहा है ।

यहाँ पूर्णतया जैविक पद्धति से उगाई गई सब्ज़ियों की भी काफी मांग है। जेल अधीक्षक शंकर सिंह ने बताया की गत वर्ष यहां 190 क्विंटल सब्ज़ियों की पैदावार हुई जिसे यहाँ के भोजन में भी प्रयोग किया गया।

नाम के अनुरूप 'आशाएं ' बंदियों में आशा की नइ किरण लाइ है और साथ ही उन्हें कौशल भी प्रदान कर रही है। ऊ्रः अजीत सिंह ने कहा की ''6 माह की अल्प अवधि में इतना अच्छा प्रतिक्रिया मिलने की वजह से सरकार अन्य जेलों में भी इस तरह की दुकान शुरू करने की योजना बना रही है।''

सोशल मीडिया पर इसकी जानकारी और रूचि बढ़ने से न केवल घरेलू बल्कि विदेशी पर्यटक भी अग्रिम आर्डर दे रहे हैं। और कई बार तो विशेष रूप से पेंटिंग्स, फर्नीचर और कपड़े के आर्डर सप्लाई से भी अधिक हो जाते हैं।

लेखक रोटरी क्लब जयपुर, मंडल 3054 के सदस्य हैं।

मौखिक स्वच्छता पर मंडल 3232 ने गिनीज़ रिकॉर्ड बनाने का प्रयास किया

टीम रोटरी न्यूज़

ऊपर : (बायें से) डी जी आर श्रीनिवासन, पी डी जी आईएसएके नाज़र, आरआईडी सी. भास्कर, टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता, रोटेरियन गुणवती, मंडल WinS चेयर राम एन रामामूर्ती, पीआरआईडी पी.टी प्रभाकर, पीआरआईपी गैरी हुआंग और कोरीना।

अगस्त की 18 को देर रात में, जब मूसलधार बारिश का आनंद लेते हुए चेन्नईवासी नींद में खर्राटे भर थे, उसी समय दो रोटेरियनों के आँखों की नींद गायब थी। पीडीजी और मंडल 3232 के प्रशिक्षक आईएसएके नाज़र कहते है कि, "रात के दौरान हम कमरे से बार-बार बाहर निकलते और आसमान को निहारते थे... और हर बार देखते थे कि मूसलाधार बारिश हो रही है, और धीरे धीरे हमारे मन में संदेह का बादल उमरने लगा कि क्या हम कार्यक्रम को आयोजित करने की दिशा में आगे बढ.सकते हैं।"

रोटेरियन जिस कार्यक्रम की योजना बना रहे थे, उसे कार्यक्रम के माध्यम से वे अपना नाम गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज कराना चाहते थे, जिसका आयोजन श्री रामाचंद्रा यूनिवर्सिटी (एसआरयू) में अगली सुबह किया जाने वाला था। वे कहते है, "डीजी आर श्रीनिवासन को लगातार फोन पर फोन प्राप्त हो रहा था कि हम इस कार्यक्रम को आयोजित नहीं कर पाएंगे क्योंकि पूरा मैदान पानी से लबालब भर गया है, इसलिए हमें इसका आयोजन निरस्त कर देना चाहिए।"

परंतु श्रीनिवासन अपने निर्णय पर अटल थे और उन्होंने कहा कि "मुख्य अतिथि (पीआरआईपी गैरी

हुआंग) इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए ताइवान से आए है, साथ ही ट्रस्टी सुशिल गुप्ता, आरआईडी भास्कर और संपूर्ण भारत से अनेक गवर्नर भी इस कार्यक्रम में शामिल होने आएं है, इसलिए हम कार्यक्रम को रद्द नहीं कर सकते है। इसलिए आइए हम इसके आयोजन की दिशा में आगे बढ़ें। हम इसे संभाल लेंगे" नाज़र ने कहा।

हम सभी भौचक्कें रह गए, जब प्रकृति भी हमारी मदद करने के लिए आग आई और मंडल 3232 के विशाल सार्वजानिक छवि-निर्माण कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए मार्ग प्रशस्त किया। इस कार्यक्रम में 23,600 छात्रों ने WinS में परिकल्पित विधि से मौखिक स्वास्थ्य और स्वच्छता के साथ-साथ हाथ धोने की तकनीक का प्रदर्शन किया।

लगभग 4 बजे सुबह में वर्षा रूक गई, परंतु अब सबसे बड़ा कार्य मैदान से पानी को बाहर निकालना था। प्रतिबद्ध रोटेरियनों और अस्पताल के समर्पित कर्मचारियों ने जबर्दस्त मेहनत करते हुए आयोजन स्थल को सुबह 6 बजे तक तैयार कर दिया।

इसका सारा श्रेय उन बच्चों को जाता है, तो रात भर की वर्षा से विचलित नहीं हुए, और 5.30 बजे से ही झुंड के झुंड आने लगे। सुबह 7 बजे तक, आयोजन स्थल कार्यक्रम के लिए तैयार हो चुका था। सैकड़ों की संख्या में रोटेरियन और रोटरेक्टर्स कार्य में लग गए और चेन्नई के 100-से भी अधिक स्कूलों के हजारों बच्चों को व्यवस्थित रूप से तैयार कर दिया।

भारत में मुँह की बीमारी का बहुत ही प्रचलन है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य और पोषण परीक्षा सर्वेक्षण के अनुसार 2-11 वर्ष की आयु वर्ग के 42 प्रतिशत बच्चों में तथा 12-19 वर्ष आयु वर्ग के 59 प्रतिशत किशोरों के क्रमशः प्राथमिक दांतों और स्थायी दांतों में दंत क्षय की बीमारी होती है। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए, मंडल 3232 ने चेन्नई के बच्चों के बीच जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से इस महत्वाकांक्षी परियोजना के निष्पादन के लिए भारतीय दंत एसोसिएशन एसआरएमयू के दंत विज्ञान के संकाय के साथ गठबंधन किया है। और दर्शकों को एक ही समय में अपने दांतों को ब्रश करते हुए लगभग 23,600 बच्चों के शानदार प्रदर्शन को देखने का अवसर प्राप्त हुआ।

पीआरआईपी गैरी हुआंग, उनकी पत्नी कोरिना, टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता, आरआईडीसी भास्कर, पीआरआईडी पीटी प्रभाकर, पीडीजीएस, मंडल 3232 के साथ में पडोसी मंडलों से आने वाले डीजी, ने इस असाधारण गिनीज़ के प्रयासों पर अपनी प्रसन्नता का इजहार किया। ट्रस्टी गुप्ता के पास एक अतिरिक्त बोनस था; समूह के हाथ धोने के लिए अपने प्रिय जुनून का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा: "मैं बच्चों को अपने हाथों को लहराते हुए देख कर विशेष रूप से खुश था, क्योंकि इसने न केवल अपने दांतों को भी साफ़ रखने की आवश्यकता का संदेश दिया बल्कि अपने हाथों को साफ-स्वच्छ रखने के महत्व को रेखांकित किया!"

नियमित रूप से अपने दांतों को ब्रश करने के अलावा, बच्चों ने चेन्नई में हरित कवर को बढाने के लिए वृहद स्तर पर वृक्षारोपण करने का शपथ लिया, जो विगत वर्धा चक्रवात के कारण विनष्ट हो गया था और रोटरी की महत्वाकांक्षी परियोजना स्कूलों में Wash (WinS) के अनुसार परिकल्पित विधि के अनुसार अपने हाथों को साफ-स्वच्छ रखने का संकल्प लिया। इस परियोजना के अध्यक्ष डॉ तामिळ चेलवन, पीपी डॉ नंदकुमार, मेंटर, डॉ कंदस्वामी, डीन, डेंटल साइंसेज विभाग, एसआरएमयू, मंडल के रोटेरियन के बटालियन के समर्थन के साथ, इस विशाल आयोजन के लिए पिछले कई महीनों से कडी मेहनत कर रहे थे।

लेकिन फिर ऐसे विशाल जनसंपर्क कार्यक्रमों का आयोजन करना मंडल 3232 के लिए कठिन कार्य नहीं हैं। इसमें वर्ष 2013 में मानव हाथ का सबसे विशाल चित्र, सबसे विशाल मानव राष्ट्रीय ध्वज - *My Flag My India* - पीडीजी नाज़र द्वारा 2014 में आयोजित, और अब यह मौखिक स्वच्छता कार्यक्रम, शामिल है।

पीडीजी जी ओलिवन्नण से प्राप्त जानकारी के साथ

मलूटी के गौरव का पुनरूद्धार

जी. सिंह

मलूटी, कोलकाता से करीब 230 किलोमीटर बंगाल और झारखण्ड की सीमा पर अवस्थित एक अवर्णित गाँव है। हालांकि यह ग्राम झारखण्ड के दुमका जिला मुख्यालय के अन्तर्गत आता है, लेकिन यहाँ के मूल निवासी बंगाली हैं, जिनके पुरखे अनेक वर्ष पहले यहाँ आकर बस गये थे। गाँव के किनारे पर स्थित एक सँकड़ा पुल दोनों राज्यों की सीमा को अलग करता है।

छोटी पहाड़ियों से घिरा और हरे भरे मैदानों से से आच्छादित यह क्षेत्र यहाँ आने वालों का मन मोह लेता है। कल-कल बहती 'चिला' नदी की कानों में गूंजती सुमधुर ध्वनि आत्मा को, भागदौड़ भरी जिन्दगी से दूर, शांति की अनुभूति देती है।

मलूटी, को न केवल प्रकृति ने उपहार दिया है बल्कि उसकी पहचान अन्य बात से है। बहुत कम लोगों को पता होगा कि मलूटी गाँव को गुप्त काशी भी कहा जाता है, क्योंकि वहाँ 700 मीटर परिक्षेत्र में टेराकोटा से बने उत्कृष्ट 108 मंदिरों की श्रृंखला खड़ी है। हालांकि इनमें अब केवल 72 मंदिर बचे है, शेष मंदिर कई वर्षों से मरम्मत के अभाव और अपेक्षा के चलते मिट्टी के ढ़ेर में तब्दील हो चुके हैं।

मलूटी के मन्दिरों का अपना गौरवशाली इतिहास रहा है। यह गाँव सर्वप्रथम 15वीं शताब्दी ''नन कर राज'' (कर मुक्त राज्य) की राजधानी के रूप में चर्चा में आया। इसे 'मंदिर गाँव' के रूप में परिवर्तित करने

'वर्ल्ड हेरिटेज फण्ड' ने इस क्षेत्र को विश्व की 12 प्रमुख 'विलुप्तप्रायः सांस्कृतिक विरासत' में से एक घोषित किया है।

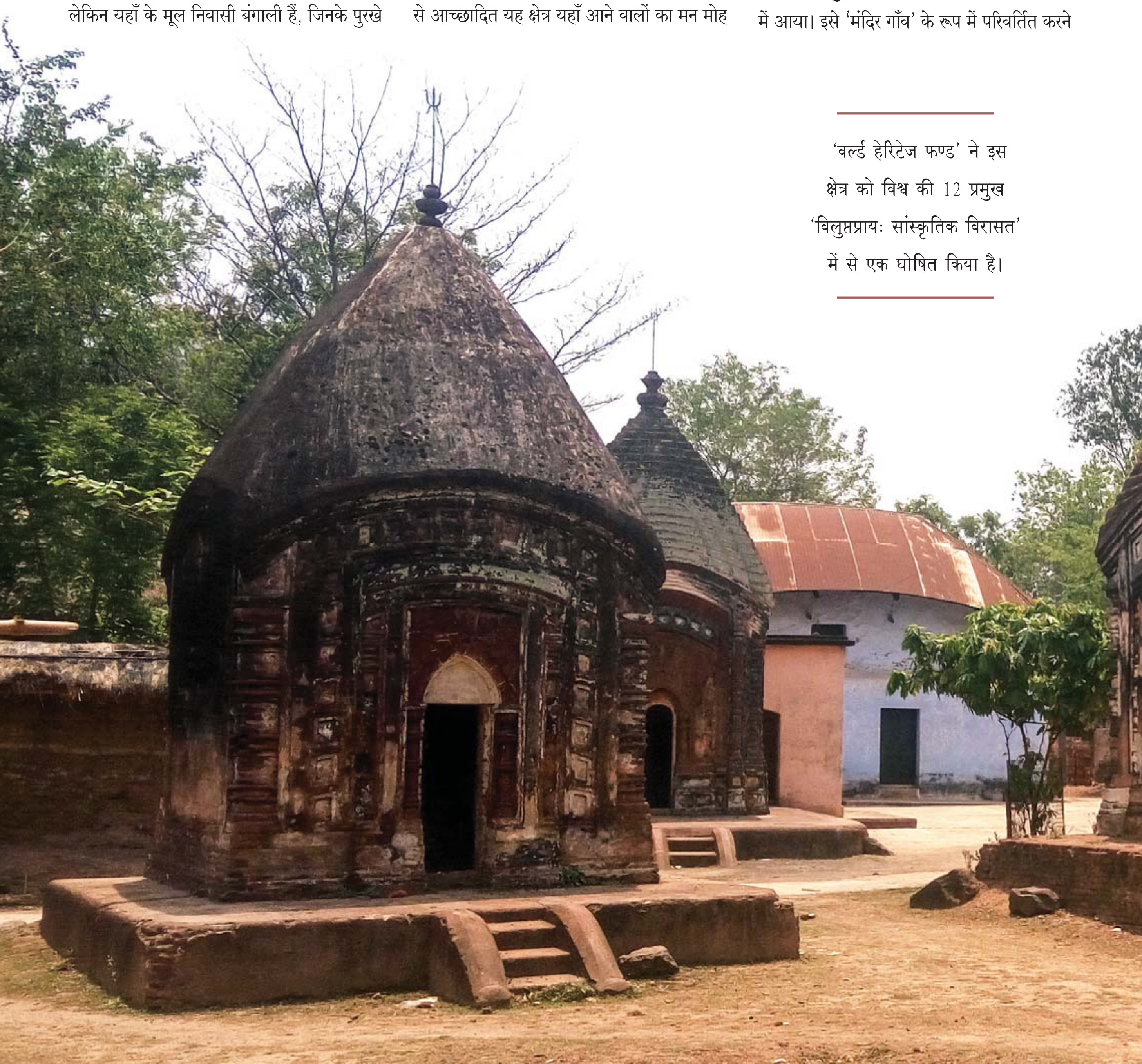

का श्रेय 'बज बसंत राजवंश' को जाता है, जिन्होंने महलों के निर्माण के बजाय मन्दिर बनाने के काम की प्रतिस्पर्द्धा की। इन मन्दिरों पर अंकित अभिलेख बंगाली, प्राकृत और संस्कृत मिश्रित भाषाओं में हैं। यहाँ उकेरे गये चित्र महाकाव्यों, देहाती जीवन और देवी देवताओं पर आधारित है। यहाँ शेष बचे हुए अधिकांश मंदिर भगवान शिव को समर्पित है, बाकी काली, दुर्गा और विष्णु भगवान के है। दिलचस्प तथ्य यह है कि मलूटी के मंदिरों के निर्माण में कोई विशिष्ट स्थापत्य शैली प्रयुक्त नहीं हुई है, बल्कि पूर्वी भारत की तमाम प्रसिद्ध वास्तु-कला देखने को मिलती है।

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि इस गाँव का वास्तविक नाम 'मेलाहाटी' है, जो उन 'माला' राजाओं से आया है जिन्होंने 17वीं और 18वीं सदी में बाँकुरा जिले के विष्णुपुरा पर शासन किया था।

समृद्ध और शानदार इतिहास होने के बावजूद इन मंदिरों के रख-रखाव और संरक्षण की तरफ गंभीरता से ध्यान नहीं दिया गया। उपेक्षा का आलम तो यह है कि वहाँ फैली वनस्पति की भीषणता ने इन मंदिरों के अस्तित्व को ही संकट में डाल दिया है। यह स्थिति यहाँ तक पहुँच गई थी कि 'वर्ल्ड हेरिटेज फण्ड' ने इस क्षेत्र को विश्व की 12 प्रमुख 'विलुप्तप्रायः सांस्कृतिक विरासत' में से एक घोषित किया है।

ग्रामवासियों ने भी इन मंदिरों के बचने की आस छोड़ दी थी। एक ग्रामीण संजय भट्टाचार्य ने कहा, ''हमने कई वर्षों तक संघर्ष किया, लेकिन कुछ भी हासिल नहीं हुआ। एक के बाद एक सरकारें इनके पुररूद्धार की दिशा में कोई भी कदम उठाने में नाकामयाब रहीं। हमें इस बात के लिए शर्म महसूस होने लगी कि मलूटी अपनी विरासत को खोने के कगार पर हैं, और हमने हमेशा प्रार्थना की कि इनको बेहतर बनाने के लिए कुछ हो।''

आखिरकार उनकी प्रार्थनाओं का असर सामने आया। वर्ष 2015 में नई दिल्ली में आयोजित गणतंत्र दिवस की परेड में मलूटी का नाम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के ध्यान में आया। मलूटी के मंदिरों पर आधारित झांकी को गणतंत्र दिवस की परेड में दूसरा स्थान हासिल हुआ।

यह राज्य के लिए महत्वपूर्ण अवसर था। इससे पहले चार बार ऐसे अवसर आये, लेकिन कुछ हासिल नहीं हुआ। यह विजय मलूटी के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव था, जिसके चलते मलूटी को राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि मिली। प्रधानमंत्री ने

मलूटी के टेराकोटा मंदिर।

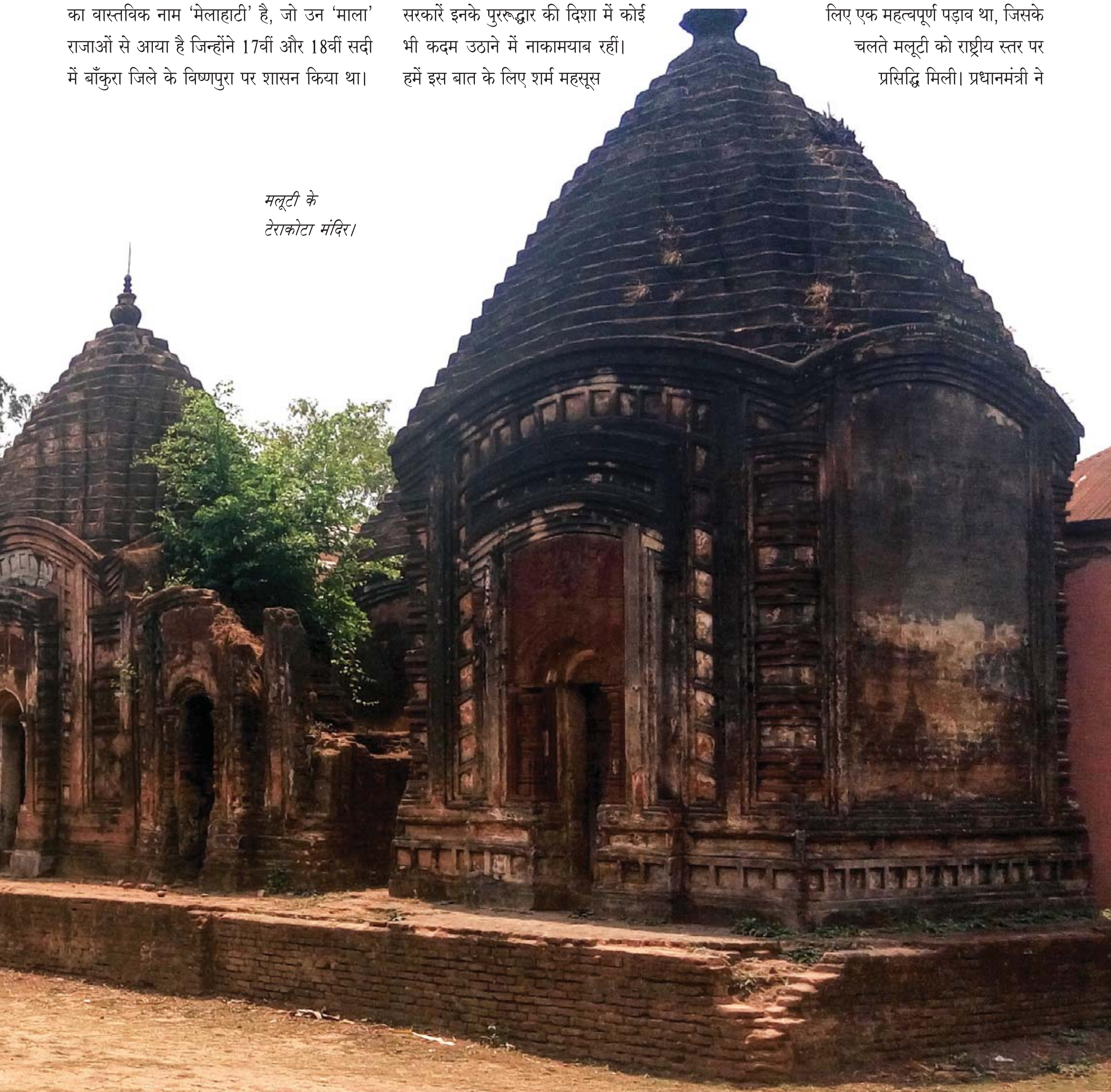

मैं चाहता हूँ कि ज्यादा से ज्यादा लोग मलूटी के मंदिरों को देखने आयें। मैं अपना जीवन जी चुका हूँ और चाहता हूँ कि मंदिरों के पुनरूद्धार का कार्य मेरे इन दुनिया को अलविदा कहने से पहले पूर्ण हो जायें।

गोपाल दास मुखर्जी

इन मंदिरों की दशा के बारे में जानकारी प्राप्त की, और इनके पुनरूद्धार के लिए तुरन्त 13 करोड़ की राशि स्वीकृत की। इन मंदिरों के संरक्षण, उन्नयन और नवीनीकरण के लिए जून 2015 को राज्य सरकार और भारत ग्रामीण विरासत एवं विकास ट्रस्ट (इंडियन ट्रस्ट फॉर रूरल हेरीटेज एण्ड डवलपमेंट) के मध्य एक अनुबंध पर हस्ताक्षर हुए।

इसके बाद 62 मंदिरों के संरक्षण का कार्य शुरू हुआ। बाकी 10 मंदिर सही अवस्था में पाये गये।

एक निरन्तर धर्मयुद्ध

मलूटी को चर्चा में लाने का श्रेय वायुसेना से सेवानिवृत्त अधिकारी गोपाल दास मुखर्जी (87) को जाता है। उन्होंने इन मंदिरों को सुरक्षित रखने के लिए पाँच दशक तक लगातार एक धर्मयुद्ध का नेतृत्व किया था। मुखर्जी ने इन मंदिरों की प्रसिद्धि के लिए निरन्तर कार्य किया। मिट्टी और घासफूस से बने अपने 135 वर्ष पुराने घर पर बैठे मुखर्जी, जिन्हें 'बोतू दा' भी कहा जाता है, ने बताया कि वे जब 1967 में सेवानिवृत्त होकर वापिस अपने गाँव आये तो उन्हें इन मंदिरों की दुर्दशा देखकर बहुत पीड़ा हुई। बढ़ती उम्र के बावजूद ऊर्जावान बोतू दा ने कहा ''इनकी दयनीय दशा देखकर मुझे बहुत दुख हुआ। ये साधारण ढ़ाँचे नहीं थे, बल्कि एक सैंकड़ों वर्षों की विरासत की परम्परा थी, जो उपेक्षित रही। मैंने भी प्रण लिया कि मेरे 'मंदिर-गाँव' को संरक्षित रखने के लिए जो कुछ भी करना होगा, वह मैं करूंगा।''

गोपाल दास मुखर्जी, एक निरन्तर धर्मयुद्ध।

उन्होंने नौकरी के लिए बाहर जाने के बावजूद गांव में ही रहने का निर्णय किया। वर्ष 1968 में वे गाँव की स्कूल के हैडमास्टर बन गये और इन मंदिरों के नवीनीकरण का कार्य शुरू कर दिया। उन्होंने बताया, मैं भागलपुर संभाग के अनेक वरिष्ठ अधिकारियों से मिला। (पहले यह गाँव बिहार राज्य के भागलपुर संभाग में था) और अधिकारियों को इन मंदिरों की दशा के बारे में बताता था मेरे प्रयासों का सकारात्मक परिणाम उस समय सामने आया, जब बिहार सरकार ने 1980 में इन मंदिरों की मरम्मत के लिए कुछ राशि स्वीकृति की, लेकिन कार्य बहुत धीमी गति से आरंभ हुआ और बाद में पैसों के अभाव में रूक गया। मैंने पुनरूद्धार के कार्य को गति देने के लिए अधिकारियों के बहुत चक्कर लगाये।

हमें इस बात के लिए शर्म महसूस होने लगी कि मलूटी अपनी विरासत को खोने के कगार पर हैं, और हमने हमेशा प्रार्थना की कि इनको बेहतर बनाने के लिए कुछ हो।

संजय भट्टाचार्य, एक ग्रामीण।

उनके इन प्रयासों को झारखण्ड सरकार ने पहचान की, और मुख्यमंत्री रघुवर दास ने 'बोतू दा' को 51 हजार रूपये और प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

जीवन के पतझड़काल में खड़े बोतू दा की आँखों में अब बस एक ही सपना है, ''मैं चाहता हूँ कि ज्यादा से ज्यादा लोग मलूटी के मंदिरों को देखने आयें। मैं अपना जीवन जी चुका हूँ और चाहता हूँ कि मंदिरों के पुनरूद्धार का कार्य मेरे इन दुनिया को अलविदा कहने से पहले पूर्ण हो जायें।'' उन्होंने यह कहा, उस समय सूरज पहाड़ी के पीछे अस्त हो रहा था और संध्याकाल आसमान को अपने आगोश में ले रहा था। ■

एक दिन में मंडल 3000 के रोटरियनों ने 30,000 पौधा लगाया

टीम रोटरी न्यूज़

मंडल स्तर पर विशाल पैमाने पर रक्त दान अभियान में एक दिन में 3,000 से अधिक रक्त यूनिट दान करने के दो महीने के भीतर, मंडल 3000 के 127 क्लबों ने अपना दूसरा नवरत्न परियोजना शुरू किया, जिसके दौरान 12 अगस्त को सिर्फ तीन घंटे में 30,000 पौधे लगाए गए। वृक्षारोपण अभियान के दौरान पौधा रोपण के लिए एक मिश्रित विधि - बीज, पौधे, बीज गेंद आदि, का उपयोग किया गया और यह सुनिश्चित करने के लिए कि नन्हें पौधें बड़े होकर वृक्ष बने, पौधों को तार की जाल लगाकर सुरक्षा प्रदान किया गया है। पौधों को पानी देने का भी कार्य संपन्न किया गया। सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाने के लिए इस परियोजना को जिला वन अधिकारी, अन्य प्रशासनिक प्रतिनिधियों और पुलिस कर्मियों की उपस्थिति में पूरा किया गया। इस कार्यक्रम में डीजी पी गोपालकृष्णन और प्रथम महिला जी नीलावती तथा अन्य रोटरियनों और स्कूलों, कॉलेजों और एनजीओ ने भाग लिया।

इसके अतिरिक्त, घर के पिछवाड़े में पौधा लगाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए घर-घर जाकर नन्हे पौधों का वितरण किया गया। वर्षा के देवता ने समय पर वर्षा कर अतिरिक्त बोनस प्रदान किया!

डीजीई के रूप में, गोपालकृष्णन ने स्वास्थ्य, स्वच्छता, पर्यावरण, शिक्षा और सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित करने वाला नवरत्न नामक सामुदायिक सेवा अभियान शुरू किया ताकि संस्था की सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाया जा सके। इन नौ परियोजनाओं में से एक है - प्रकृति का संरक्षण करना, और इस परियोजना के अंतर्गत विभिन्न क्लबों ने विभिन्न स्थानों- गांवों, कस्बों, स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, सरकारी कार्यालयों, मंदिरों और यहाँ तक कि त्रिची में केंद्रीय जेल में एक साथ वृक्षारोपण का कार्य संपन्न किया।

मंडल 3000 द्वारा आयोजित पौधें लगाने की परियोजना में पुलिस कर्मचारियों ने भी भाग लिया।

इस अभियान को सफलतापूर्वक निष्पादित करने के लिए क्लबों को प्रोत्साहित करने के लिए मंडल अधिकारियों ने संपूर्ण मंडल का दौरा किया। क्षेत्रीय समन्वयक, सहायक गवर्नर्स, जीईएमएस नवरत्न विशेष परियोजना निदेशक भास्करन और उनकी टीम ने आरआई अध्यक्ष इयान रिसेली के सपने को साकार करने के लिए कडी मेहनत की जिन्होंने वर्ष 2017-18 में 1.2 करोड़ वृक्ष लगाने का संकल्प लिया है। गोपालकृष्णन ने कहा कि यह परियोजना पौधों को रोपण के साथ नहीं रुकती है, बल्कि नियमित पर्यवेक्षण के माध्यम से आगे उनकी देखभाल की जानी चाहिए और जून 2018 में फॉलो-अप सर्वेक्षण किया जाएगा ताकि यह आकलन किया जा सके कि 30,000 पौधों में से कितने पौधें बाधाओं को पार करते हुए वृक्ष बनने में सफल रहे हैं।

डी जी पी गोपालकृष्णन (चरम बाये) और उनकी पत्नी जी नीलावती एक पौधे को लगाते हुए।

''यदि आप एक वर्ष के संदर्भ में सोचते हैं, तो एक बीज बोएं; अगर दस वर्षों के संदर्भ में सोचते है, वृक्ष लगाएं; यदि 100 वर्षों के संदर्भ में सोचते है, तो लोगों को पढ़ायें'', कन्फ्यूशियस, एक चीनी दार्शनिक ने कहा था। मंडल 3000 ने लोगों ने वृक्षारोपण करने और धरती को हरे रंग का आवरण प्रदान करने के लिए लोगों को शिक्षित करने के बारे में 100 वर्षों पहले सोचा है।■

उन्हें फिर से अपने पैरों पर खड़ा करते हुए

जयश्री

पांच माह की लिव्या मिरांडा, बाल स्वास्थ्य संस्थान (आईसीएच - चेन्नई में बच्चों का सरकारी अस्पताल) स्थित CURE अंतर्राष्ट्रीय क्लीनिक में परामर्शदाता यूनिस को एक अत्यंत मनमोहक मुस्कान देती है, जब वह उसके घुमावदार पैरों पर नन्हें फुट एबडक्शन ब्रेसेस (एफएबी) की लेस को बांधती है। लिव्या की माँ लोर्द मैरी की आँखों में आंसू आ गए जब उनके पति स्नेगन मिरांडा ने कहा, ''ये लोग महान है। इनको धन्यवाद, हमारी बच्ची के पैर धीरे-धीरे सीधे हो रहे है।'' परामर्श कक्ष के बाहर, नन्हीं देवश्री (नौ माह) अपनी माँ की गोद से बाहर निकलकर चलने का प्रयास कर रही है; ब्रेसेस उसको परेशान नहीं करते है।

लिव्या और देवश्री को क्लबफुट की बीमारी है और उन्हें उनके हड्डी के डॉक्टरों द्वारा CURE क्लीनिक भेजा गया है। वे तब से क्लीनिक आ रही है जब वे एक हफ्ते की आयु की थी। क्लबफुट एक जन्मजात दोष है जिसमें एक या दोनों पैर नीचे एवं अंदर की तरफ घूम जाते है, जिससे वे गोल्फ क्लब की भांति दिखाई देने लगते है।

आरआईडी मिकेल एहलबर्ग (बाएं से दूसरे) और उनकी पत्नी शार्लेट (चरम दाएं) ने दिल्ली में चाचा नेहरू अस्पताल में एक CURE क्लिनिक का उद्घाटन किया। इसके अलावा तस्वीर में (बाएं से) ललिता सुब्रमण्यम, पीडीजी रमन भाटिया, सुरेश वासुदेवा, रोटरी क्लब दिल्ली मिडटाउन के पूर्व अध्यक्ष और आईपीडीजी एन सुब्रमनियन शामिल हैं।

जबकि पोलियो से बचा जा सकता है पर उसका इलाज नहीं किया जा सकता, क्लबफुट का बचाव नहीं किया जा सकता लेकिन इसका इलाज किया जा सकता है।

जयश्री

छोटी देवश्री अपने फैब जूते के साथ चलने की कोशिश करती है।

CURE इंटरनेशनल इंडिया एक स्वैच्छिक संगठन है जो देशभर के सरकारी अस्पतालों/मेडिकल कॉलेजों में स्थापित किये गए अपने 254 प्राधिकृत क्लीनिकों द्वारा इस विकार का इलाज प्रदान करता है। यह संस्थान ओर्थोपेडीशियनों को 'पोंसेटी' विधि (बक्सा देखें) द्वारा मरीजों का इलाज करने का प्रशिक्षण देता है, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन, दि अमेरिकन अकैडमी ऑफ़ पेडियाट्रिक्स और पेडियाट्रिक ओर्थोपेडिक सोसाइटी ऑफ़ इंडिया द्वारा समर्थित है।

संतोष जॉर्ज जी., CURE इंटरनेशनल के निदेशक, कहते है कि हर साल भारत में जन्म लेने वाले 30 मिलियन बच्चों में से, 50,000 से ज्यादा बच्चें क्लबफुट के साथ जन्म लेते है। लगभग 38,000 बच्चे CURE क्लीनिकों में इलाज के लिए भर्ती हुए है और रोजाना औसतन 40-50 नए बच्चे आ रहे है।

आईसीएच पर पुनः लौटते हुए, बेउलह विध्याकुमारी, CURE की तमिलनाडु के लिए राज्य प्रबंधक, कहती है कि सरकार CURE को जगह और ढलाई सामग्री देकर सहायता करती है जबकि क्लीनिक माता-पिता को परामर्श, बच्चों के लिए वास्तविक सुधारात्मक उपचार और विशेष एफएबी जूते प्रदान करते है। वह कहती है, ''कश्मीर में स्थापित हमारी इकाई में जूते बनाये जा रहे है। नाप के आधार पर लागत रु. 1,000 से 1,200 के बीच पड़ती है। हम मरीजों से कोई शुल्क नहीं लेते लेकिन अगर वे स्वैच्छा से दान देते है, तो हम उसे स्वीकार कर लेते है।''

रोटरी की भूमिका

रोटरी पिछले साल से CURE की साझेदार है; यह सब दिल्ली में रोटरी क्लब साउथ, मंडल 3011, के अमरनाथ गोयल के विचार के कारण शुरू हुआ, और क्लब ने सफ़दरजंग अस्पताल में एक क्लबफुट क्लीनिक की स्थापना की। गोयल मंडल के क्लबफुट समिति के प्रमुख है। इसके पश्चात्, रोटरी क्लब दिल्ली मिडटाउन ने दो क्लीनिकों को प्रायोजित किया - एक सेंट स्टीफन्स अस्पताल में और दूसरा चाचा नेहरु बाल चिकित्सालय में। मंडल 3011 की क्लबफुट विकृति सुधार समिति के सलाहकार पीडीजी रमन भाटिया कहते है,

''पोलियो पुनरुद्धार कार्यक्रम की शुरुआत से हम सेंट स्टीफन्स से पिछले 15 सालों से जुड़े है। डॉक्टर मैथ्यू वरघीस, ओर्थोपेडिक्स विभाग के प्रमुख, CURE के तकनीकी निदेशक है और वह समस्त भारत के डॉक्टरों को पोंसेटी विधि में प्रशिक्षित करते है।''

तीन अन्य क्लब - रोटरी क्लब दिल्ली राजधानी, दिल्ली सेंट्रल और फरीदाबाद एनआईटी में से प्रत्येक ने कलावती सरन अस्पताल, एम्स और फरीदाबाद स्थित बी.के. अस्पताल में क्लबफुट क्लीनिकों को प्रायोजित किया है एवं उसके प्रभारी है।

इन क्लीनिकों की तीन साल तक देखभाल करने के लिए हाल ही में 127,000 डॉलर का वैश्विक अनुदान मंजूर हुआ है। रोटरी क्लब दिल्ली मिडटाउन अग्रणी क्लब है और पीडीजी एम्मा ग्रोएनेन के नेतृत्व वाला बेल्जियम का रोटरी क्लब अंतर्राष्ट्रीय साझेदार है। भाटिया कहते है, ''हम चाहते है कि अन्य मंडलों के क्लब भी CURE के साथ हाथ मिलाएं और अधिकतम बच्चों तक पहुँचने में मदद करें, क्योंकि CURE के क्लीनिक सभी 29 राज्यों में उपस्थित है''।

जयश्री

छोटे से मोहसिन मलिक (4) को क्लबफुट के पुनरुत्थान के लिए एक झेझ दिया गया क्योंकि उन्होंने पहले के उपचार को बंद कर दिया था।

पोंसेटी तकनीक

CURE की राज्य प्रबंधक बेउलह विध्याकुमारी कहती है कि इसके विकासक, स्पैनिश ओर्थो पेडीशियन इग्नाशियो वी. पोंसेटी, के नाम पर नामित पोंसेटी तकनीक में हड्डी बिठाने के व्यवस्थित नियम, ढलाई और ब्रेसेस शामिल है ताकि जन्मजात क्लबफुट विकार को सही किया जा सके।

पहले चरण में आहिस्ता से अस्थि-बंधन एवं नसों को बिठाकर पंजे से लेकर जांघ तक क्लबफुट से विकृत पैर पर प्लास्टर ऑफ़ पेरिस की ढलाई की जाती है। हड्डी बिठाने का यह काम हर हफ्ते किया जाता है, ताकि लचीले पैरों को आकार दिया जा सके, और प्लास्टर की ढलाई को आंशिक सुधार को बरकरार रखने एवं अस्थि-बंधन को नरम बनाने के लिए बदला जाता है। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे विस्थापित हड्डियों को यथोचित जगह पर लाती है। अधिकतम पैर अपावर्तन (सुधार) प्राप्त करने के लिए साधारण तौर पर लगभग 4-7 ढलाई लगती है, जिसके बाद एक स्थानीय एनेस्थेशिया के प्रभाव में चाकू के एक चीरे के माध्यम से कण्डरा पेशी पर एक त्वचीय चीरा लगाया जाता है जिसे 'टेनोटोमी' कहते है।

बच्चे को फिर विशेष जूते, एफएबी, पहनना चाहिए, दिन में 23 घंटे तीन महीनों के लिए और फिर, तीन सालों के लिए, जिसमें उपयोग रात भर और झपकी लेते समय तक सीमित हो जाता है। जूते एक दूसरे से डेनिस ब्राउन छड़ी से जुड़े होते है ताकि पैर के आकार को कायम रखा जा सके।

बेउलाह आगाह करती है कि खराब तरह से बिठाई गयी हड्डियाँ विकृति को अधिक पेचीदा बनाएगी। सुधार प्रक्रिया में नियमित जांच भी एक अहम् भूमिका निभाती है। ''वरना, यह विकृति लौट जाएगी। हमारे पास बहुत सारे ऐसे बच्चे है जिन्होंने पूरी प्रक्रिया वापस से शुरुआत से की है, लेकिन जैसे बच्चा बड़ा होता है, हड्डी बिठाने की प्रक्रिया कठिन हो जाती है क्योंकि हड्डियां उतनी कोमल नहीं होती है, वह कहती है।''

दिल्ली के क्लब क्लबफुट से पीड़ित बच्चों को पहचानकर उन्हें इन क्लीनिकों में भेजने में मदद करते है और उनके इलाज का प्रयोजन करते है, जिसका खर्च लगभग रु. 10,000 प्रति बच्चे का पड़ता है। ''सबसे महत्वपूर्ण, हम इस तथ्य को प्रकाशित करते है कि यह विकार पूर्णतः ठीक हो सकता है अगर इलाज जल्दी शुरू हो जाए तो।'' कई माता-पिता इस विकार से अनभिज्ञ है और यहाँ तक कि वे क्लबफुट को पोलियो समझने की भूल कर बैठते है। जबकि पोलियो से बचा जा सकता है पर उसका इलाज नहीं किया जा सकता, क्लबफुट का बचाव नहीं किया जा सकता लेकिन इसका इलाज किया जा सकता है। उपेक्षित किया हुआ क्लबफुट आजीवन विकलांगता की ओर ले जाता है।

वह कहते है, ''आदर्श रूप से, बच्चे के जन्म के 7-10 दिन के भीतर ही उपचार शुरू किया जाना चाहिए क्योंकि उस वक्त बच्चे की हड्डिया कोमल और लचीली होती है। पूरी प्रक्रिया में लगभग 5 वर्ष लगते है, लेकिन एक बार उपचार पूर्ण हो जाने पर, बच्चा अन्य आम लोगों की तरह ही सामान्य रूप से चल सकता है, बिना किसी उपकरण या सहारे के।'' ■

मंडल 3250 की बदली हुई फ़िज़ा

टीम रोटरी न्यूज़

मंडल 3250 के गवर्नर विवेक कुमार की नियुक्ति के अवसर पर, रोटरी क्लब पटना सिटी सम्राट ने 11 जरूरतमंद व्यक्तियों को रु 1.1 लाख प्रति कीमत के 11 ई-रिक्शा बांटे, प्रत्येक व्यक्ति से केवल रु 2,500 का एक नाममात्र का योगदान लेकर।

सहायक गवर्नर सुशील वी. पोद्दार ने कहा कि ''प्रत्येक रिक्शे में उसके आगे और पीछे दोनों तरफ एक रोटरी पहिया है, ताकि 11 व्यक्तियों को रोजगार देने के अलावा, यह परियोजना रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि भी करेगी जब वाहन शहर भर से गुजरेंगे। यह प्रदूषण को नियंत्रित करने में भी सहायक होगी।''

क्लब के अध्यक्ष प्रकाश बर्नवाल ने घोषणा की कि उनका क्लब, अन्य रोटरी क्लबों एवं डीडीएफ कोष के सहयोग से, 2017-18 में जरूरतमंद लोगों को ऐसे 300 ई-रिक्शे वितरित करेगा। पोद्दार ने आगे कहा कि नियुक्ति कार्यक्रम में 100 रोटरी क्लबों के 600 रोटेरियनों की मौजूदगी को, एवं व्यावसायिक सेवा परियोजना को करने के लिए मंडल रोटेरियनों के मध्य उमंग को देखकर, टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने कहा ''इस बार मंडल 3250 की फ़िज़ा कुछ बदली-बदली सी है!'' ■

टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता, डीजी विवेक कुमार और पत्नी वर्षा एक स्कूल के छात्र के साथ ई-रिक्शा पर सवारी करते हुए।

डी जी विवेक कुमार (चरम दाएं) और पत्नी वर्षा (चरम बाएं), टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता और रोटरी क्लब पटना सिटी सम्राट के अध्यक्ष प्रकाश बरनवाल के साथ ।

इस बार मंडल 3250 की फ़िज़ा कुछ बदली-बदली सी है!

टीआरएफ ट्रस्टी
सुशील गुप्ता

हमारे नए वैश्विक विज्ञापन अभियान को शुरू करने में मदद कीजिये

रोटरी क्या है?

हालाँकि बहुत से लोगो ने रोटरी के बारे में सुना है, बहुत कम लोग वास्तव में समझते है कि रोटरी क्लब करते क्या है। असल में, 35 प्रतिशत लोग किसी भी रोटरी कार्यक्रम से अपरिचित है जिसमें उनके स्थानीय क्लब शामिल है। इसलिए रोटरी ने एक नया वैश्विक विज्ञापन अभियान बनाया जिसका नाम है पीपल ऑफ़ एक्शन। डाउनलोड करने के लिए विज्ञापन *Rotary.org/brandcenter* पर उपलब्ध है, जहाँ आपको प्रत्येक तत्व के इस्तेमाल एवं उसे स्थानीय बनाने के दिशा-निर्देश भी मिलेंगे, जिससे कि दुनिया के किसी भी क्लब के लिए उसकी कहानी को एक सुसंगत एवं सम्मोहक तरीके से कहना आसान हो जाता है।

आपके जानने लायक कुछ बातें

हम किस तक पहुँचने का प्रयास कर रहे है?

यह अभियान उन लोगों के लिए है जो यह नहीं जानते कि रोटरी क्या है या यह क्यों उनसे संबद्ध है। हम आशा करते है कि अभियान संभावित सदस्यों से अपील करेगा जो उनके समुदायों में एक परिवर्तन लाना चाहते है, जो रोटरी के सिद्धांतों में रूचि रखते है, और जो उनके समुदायों में अन्य लोगों के साथ संबंध स्थापित करने की तलाश में है।

पीपल ऑफ़ एक्शन

हमारी छवि को मजबूत बनाने के लिए रोटरी का एक नया वैश्विक विज्ञापन अभियान है, और इसकी शुरुआत करने के लिए हमें आपकी मदद चाहिए। करने के लिए निम्न कार्य है:

- *Rotary.org/brandcenter* पर जाइए और पीपल ऑफ़ एक्शन अभियान सामग्रियों को डाउनलोड कीजिये - आपको अभियान दिशा-निर्देश, वीडियो, सामाजिक मीडिया ग्राफ़िक्स, छपाई विज्ञापन, लोगो और भी बहुत कुछ मिलेगा।
- इसे अपने क्लबों में अन्य लोगों के साथ साझा कीजिये - विशेषरूप से पेशेवर प्रचारकों के साथ जो विज्ञापनों को स्थानीय स्तर पर रखने में मदद कर सकते है।
- अतिरिक्त दिशा-निर्देशों के लिए अपने मंडल सार्वजनिक छवि समन्वयक को सहयोग दे।
- अभियान के वीडियो एवं ग्राफ़िक्स को साझा करने के लिए सामाजिक मीडिया का इस्तेमाल कीजिये।
- रोटरी के मार्केटिंग दल को *pr@rotary.org* पर सफलता की कहानियों भेजने या सवालों को पूछने के लिए ईमेल कीजिये।

अभियान की विषय-वस्तु "पीपल ऑफ़ एक्शन" क्यों है?

रोटेरियन उनके समुदायों एवं विश्व को बेहतर बनाने हेतु कार्यवाही करने के लिए एक अनूठा जोश साझा करते है। जहाँ अन्य लोग समस्या देखते है, हम समाधान देखते है। यह हमारा अवसर है, दूसरों को यह दिखाने का कि कैसे रोटेरियन देखते है कि उनके समुदायों में क्या संभव है और यह चिन्हांकित करने का कि हम क्या हासिल कर सकते है जब समुदाय के अधिक नेतृत्वकर्ता रोटरी से जुड़ते है।

क्या सामग्री उपलब्ध है?

Rotary.org/brandcenter पर, आप वीडियो, सामाजिक मीडिया ग्राफ़िक्स और छापने एवं डिजिटल के लिए विज्ञापन पाएंगे। सामग्रियों को स्थानीय बनाने में मंडलों एवं क्लबों की मदद के लिए अभियान दिशा-निर्देश भी प्रदान किये गए है।

अभियान में दर्शाए गए परियोजनाएं/लोग कौन है?

अभियान में पहला विज्ञापन कोलोराडो और ब्राज़ील के असल रोटेरियनों को दर्शाता है, और दिखाई गयी कहानियाँ वास्तविक परियोजनाओं से प्रेरित थी। रोटेरियनों की अधिक कहानियों को आने वाले विज्ञापनों में दर्शाया जाएगा।

क्या क्लब या मंडल अभियान-सामग्री में उनकी परियोजनाओं की तस्वीरों द्वारा बदलाव ला सकते है?

हाँ। *Rotary.org/brandcenter* पर मंडलों एवं क्लबों की मदद के लिए दिशा-निर्देश दिए गए है ताकि वे उनके समुदायों की तस्वीरों के माध्यम से अभियान को स्थानीय बना सके।

क्या विज्ञापन के लिए तस्वीरें खींचने के लिए कोई दिशा-निर्देश है?

हाँ। *Rotary.org/brandcenter* पर एक परीक्षण सूची है और ऐसी तस्वीरों को खींचने की जानकारी है जो संपर्कों एवं समुदाय पर केन्द्रित हो।

अभियान को स्थानीय स्तर पर रखने के लिए कुछ तरीके क्या है?

Rotary.org/brandcenter पर अभियान को स्थापित करने की प्रक्रिया की युक्तियाँ है। सामग्रियों का इस्तेमाल करने के अन्य तरीके भी है - क्लब और मंडल की वेबसाइट पर अभियान के ग्राफ़िक्स को लगाने, सामाजिक मीडिया पर पोस्ट करने, और कार्यक्रमों में विज्ञापन को प्रदर्शित करने के बारे में विचार कीजिये।

उन सदस्यों को किस प्रकार का समर्थन प्रदान किया जाएगा जो नहीं जानते है कि विज्ञापनों को कैसे खरीदना है या दान दी गयी जगह को कैसे सुरक्षित करना है?

Rotary.org/brandcenter पर मीडिया योजनाओं को विकसित करने, विज्ञापन खरीदने एवं विज्ञापन के लिए दान दी गयी जगहों को सुरक्षित करने के दिशा-निर्देश रोई प्रदान करता है। इसके साथ ही, रोई का मार्केटिंग संचार दल वेबिनारों की एक श्रृंखला आयोजित करेगा ताकि मीडिया नियोजन में क्लब एवं मंडल नेतृत्वकर्ताओं की मदद की जा सके।

कैसे यह अभियान ज्वाइन लीडर्स, "शेयर आइडियाज" और "टेक एक्शन" की मौजूदा रोटरी ब्रांड स्थितियों के साथ काम करेगा?

पीपल ऑफ़ एक्शन अभियान रोटरी ब्रांड को जीवित करता है इस बात को चिन्हांकित करके कि क्या होता है जब समुदाय के नेतृत्वकर्ता रोटरी के भीतर एक साथ आते है, उनकी परिकल्पनाएं साझा करते है, समाधानों के बारे में विचारों का आदान-प्रदान करते है और फिर उसे एक वास्तविकता का रूप देने के लिए कार्यवाही करते है।

इस अभियान के बारे में सवालों के लिए मैं किससे संपर्क करूं?

कृपया पीपल ऑफ़ एक्शन अभियान से संबंधित हर सवाल को *pr@rotary.org* पर भेजिए।

© The Rotarian

अच्छाई की राजधानी

वेनेस्सा ग्लाविन्स्कस

वर्ष 2018 सम्मेलन के शहर की यात्रा एक ही बात प्रकट करती है: टोरंटो की स्वागत करने की भावना।

हम खो गए है। मेरे फ़ोन की बैटरी कम है, इसलिए मैं गूगल मैप की मदद लेकर इसे समाप्त करने का जोखिम नहीं उठाती हूँ। इसके बजाय, हम एक कॉफी की दुकान में जाते है और मैं एक कागज़ी नक्शा निकालती हूँ जबकि मेरी नौ साल की बेटी एक गर्म चाकलेट आर्डर करती है। क्लर्क मुस्कराती है और पूछती है कि हम कहाँ जाने की कोशिश कर रहे है। कागज़ के एक छोटे टुकड़े पर, वह उस इलाके का नक्शा बनाना शुरू करती है – कुछ जगहों के निशानों के साथ – ताकि मैं पता लगा सकूं कि कैसे केंसिंग्टन मार्केट जाना है। यह मुझे रिक स्टीव्स की हाथ से बने नक्शों की गाइडबुक की याद दिलाता है। मैंने उसका धन्यवाद किया, और जैसे ही हम बाहर निकले, मेरी बेटी कहती है, वाह, ''कनाडा में लोग कितने अच्छे है।''

> **रोटरेक्ट की 50वीं सालगिरह**
>
> वर्ष 1968 से रोटरी के सबसे बड़े युवा कार्यक्रमों में से एक 'रोटरेक्ट', 18 से 30 साल की उम्र के युवाओं को सेवा, मित्रता और विकास के अवसर प्रदान कर रहा है। अगले वर्ष टोरंटो में रोटरेक्ट की सालगिरह का उत्सव मनाने में मदद कीजिये।

यह सच है। 2018 रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मेज़बानी करने वाले टोरंटो शहर की हमारी यात्रा पर वहाँ के लोगों ने हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया। टोरंटो को स्वरुप अप्रवासियों द्वारा दिया गया है, जिन्होंने अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के साथ-साथ नयी भाषाओं, रिवाजों एवं व्यंजनों को शामिल किया। डाउनटाउन की गगनचुम्बी इमारतों के अलावा, टोरंटो शहर इलाकों का एक विशाल तंत्र है, जिसमें विशिष्ट सांस्कृतिक परिक्षेत्रों जैसे छोटे इटली और छोटे भारत से लेकर बोहेमियाई कैफ़े वाले केंसिंग्टन मार्केट एवं पोस्टकार्ड-परफेक्ट विक्टोरियन घरों वाला यॉर्कविल इलाका शामिल है। परन्तु इसके आकार के बावजूद भी, टोरंटो शहर सुरक्षित एवं आवागमन में सरल है। सड़कें साफ़ है। और शहर के 2.8 मिलियन रहवासी – जिनमें से आधे अन्य देशों में पैदा हुए – 140 से अधिक भाषाएं बोलते है। परिणामस्वरुप एक सांस्कृतिक मिलान हुआ जिसके कारण टोरंटो में घर जैसा अनुभव होता है फिर चाहे आप कही से भी आए हो।

जैसे ही आप पियर्सन अंतर्राष्ट्रीय एअरपोर्ट पर उतरते है, आप शहर जाने के लिए करीब 55 डॉलर में एक टैक्सी, 35 डॉलर में एक उबर, या फिर सीधे मेट्रो टोरंटो कन्वेंशन सेंटर (एमटीसीसी) के पास यूनियन स्टेशन के लिए 12 डॉलर में यूनियन पियर्सन एक्सप्रेस पकड़ सकते है। सवारी 25 मिनट की है; हर 15 मिनट में ट्रेन चलती है और मुफ्त वाईफ़ाई प्रदान करती है। यदि आप पोर्टर एयर से यात्रा करते है, तो आप टोरंटो टापूओं पर उतरेंगे, जहां डाउनटाउन से नौका की एक छोटी यात्रा करके पहुँचा जाता है (बशर्ते आप नयी पैदल यात्रियों की सुरंग नहीं चुनते है, जो पैदल चलने वाले रास्तों और स्वचालित सीढ़ियों से भरी हुई है, जो पूरी यात्रा को लगभग छह मिनट का बनाती है।)

सम्मेलन के दोनों स्थलों: एमटीसीसी और एयर कनाडा सेंटर, जो एक दूसरे से 10-मिनट की पैदल यात्रा की दूरी पर है, के समीप पर्याप्त होटलें है। केवल जल्दी बुक करने का ध्यान रखें: टोरंटो एक सम्मेलन चुम्बक है, और गर्म मौसम में कमरे जल्दी भर जाते है। एमटीसीसी और एयर कनाडा सेंटर टोरंटो की ओंटोरियो झील के किनारे के नजदीक है, जहाँ का वाटरफ्रंट ट्रेल (तटीय मार्ग) साइकिल चालकों के लिए मशहूर है और तट पर बना ब्रॉडवाक उन लोगों को आकर्षित करता है जिन्हें पानी के किनारे टहलना पसंद है। शहर के आसमान के दृश्यों को पेश करने वाले नौका विहार या टोरंटो टापुओं के लिए जहाज हार्बर-फ्रंट सेंटर से निकलते है। लेकिन मुख्य आकर्षण सीएन टॉवर है:

सीएन टॉवर

सीएटल में स्थित स्पेस नीडल की तरह, यह टोरंटो के आसमान की व्याख्या करता है।

वर्ष 1976 में खोला गया यह टॉवर जरुरत का परिणाम था: इस फैलते हुए शहर में नई गगनचुम्बी इमारतों ने टीवी स्टेशनों के लिए अपने सिग्नलों को प्रसारित करने में परेशानी खड़ी कर दी थी। टॉवर को उस परेशानी को दूर करने के लिए बनाया गया था, परन्तु यह और भी बहुत कुछ का प्रतीक था – इसने दुनिया के सबसे ऊँचे टॉवर, एक उपाधि जो इसके पास 30 से भी अधिक सालों तक थी, के रूप में कैनेडियाई उद्योग की ताकत को प्रस्तुत किया।

एक पर्यटक आकर्षण के रूप में, सीएन नार्थ अमेरीका का पहला टॉवर था जिसने कांच के फर्श का अनुभव करवाया था – 113 मंजिल नीचे सड़क को सीधे देखने का अत्यंत रोमांचक दृश्य। संकेत पर्यटकों को विश्वास दिलाते है कि कांच ''14 दरियायी घोड़ों'' को संभालने लायक मजबूत है, फिर भी मेरे लिए उस पर जाने का जोखिम लेना साहसिक कार्य था। परन्तु यह वह जगह है जिसे बच्चे पसंद करते है। वे सेल्फी लेने के लिए उछलते, कूदते और लेटते है।

जब रोई अध्यक्ष इयान रिसले ने मई में टोरंटो का भ्रमण किया, तो उन्होंने केवल कांच के फर्श पर कदम ही नहीं रखा। उन्होंने किनारे पर चहलकदमी भी की: कल्पना कीजिये उपकरणों से सुसज्जित होकर टॉवर के छोटे कगार के चारों और चलना, बिना रेलिंग के, ज़मीन से 1,168 फीट की ऊँचाई पर। दिल दहला देने वाला लगता है? या आनंदित करने वाला? जो भी हो, आपके हेलमेट पर लगा एक गोप्रो कैमरा सब कैद कर लेता है ताकि आप उसका बाद में भी अनुभव कर सके।

एलीस हेल्सन

रिपले का एक्वेरियम

ज़मीन पर वापस आने पर, एक अन्य आकर्षण ठीक बगल में है। कनाडा का रिप्लेस एक्वेरियम व्यावहारिक अनुभवों की संख्या प्रदान करने के मामले में दूसरे बड़े मछ्लीघरों से अलग है। 99 कनाडियाई डॉलर में, आप एक परदे के पीछे का दौरा बुक कर सकते है जिसमें वेटसूट पहनकर स्थानीय स्टिंगरे मछलियों को खिलाना शामिल है, जिसमें उत्साही लैब्राडोर कुत्तों के ध्यान की तरह ही आपके ध्यान की मांग होती है। (आरक्षण करना अनिवार्य है।) कांच की सुरंग पर्यटकों को सबसे बड़े टैंक में से ले जाती है। सभी को चक्कर आ जाते है जब शार्क सर के ऊपर से बहती है, और टैंक में पीली पूँछ वाली स्नैपर मछली, टार्पोन, एक विशाल गोलिअथ ग्रूपर, समुद्री कछुएं, और प्रभावशाली हरी सॉफिश की भरमार है। मेरी नौ साल की आँखें फाड़ती हुई बच्ची के शब्दों में कहा जाए तो, ''यह समंदर में होने जैसा था!''

रास्ते में, टोरंटो ब्लू जेस रोजर्स सेंटर में बेसबॉल खेलते है। मैदान में तकरीबन 50,000 प्रशंसक बैठ सकते है और यह इसकी विशाल (पेटेंट करायी हुई) खींचने योग्य छत के लिए जाना जाता है जिसे सुहावने दिनों में खोला जा सकता है और रूखे मौसम में प्रशंसकों को गर्म एवं सूखा रखने के लिए बंद किया जा सकता है। यह स्थल संगीत गोष्ठियों और अन्य कार्यक्रमों की मेज़बानी भी करता है।

सैंट लॉरेंस मार्केट, एमटीसीसी से फ्रंट स्ट्रीट पर 20 मिनट की पैदल यात्रा पर स्थित, ने सूची में प्रथम स्थान पाया जब मैंने स्थानीय लोगों से उनके पसंदीदा दोपहर के भोजन के स्थल के बारे में पूछा।

अंदरूनी सलाह

यदि आप कम से कम तीन बड़े आकर्षणों को देखने की योजना बना रहे है, तो टोरंटो सिटीपास सबसे बढ़िया सौदा है। वयस्क *citypass.com/toronto* पर 60 डॉलर का भुगतान ऑनलाइन करते है।

नेशनल जियोग्राफिक ने इसे दुनिया के 10 सर्वश्रेष्ठ भोजन बाज़ारों में शामिल किया है।

इसके अंदर, रंगबिरंगे स्टालों का जमावड़ा बेकन के लिए विभिन्न संकेतों के साथ आपका स्वागत करते है। सटीक तौर पर, पीमील बेकन के संकेत। सूअर की पीठ से काटे गए इस पतले मांस को उपचारित किया जाता है और फिर मक्के के आटे में लपेटा जाता है। कटा हुआ, भुना हुआ, और सैंडविचों में परोसा जाने वाला, यह बाज़ार की मशहूर चीज़ है – यहाँ तक कि बारबरा स्ट्रेसैंड ने भी उनके सहायक को एक सैंडविच के लिए भेजा था जब उन्होंने टोरंटो में अभिनय किया था।

कारौसल बेकरी में पीमील बेकन सैंडविच को एकत्रित करते हुए विक्रेताओं के दूसरी तरफ, कार्निसेरोस बुरिटो और अन्य मेक्सिकाई भोजन पेश करता है। इसके पास में, भारी मात्रा में तुर्किश डिलाइट बेचा जाता है। सीढ़ियों से नीचे, यूक्रेनी पिएरोगी को लासान्ना की ट्रे के बाजू से बांटा जाता है। समान परिवारों के कई लोगों ने इन स्टालों को अनेक पीढ़ियों से संचालित किया है, और इनके द्वारा पेश किया जाने वाला वैश्विक भोजन आपको याद दिलाता है कि टोरंटो की जनसंख्या कितनी विविध है।

लेकिन सैंट लॉरेंस बाज़ार में संस्कृतियों का यह असाधारण मिश्रण टोरंटो के निवासियों के लिए उनकी ज़िंदगी का एक नियमित हिस्सा है। ''हमारे शहर की विविधता कुछ ऐसी है जो सबसे ख़ास है,'' मिशेल गाय कहती है, जो माइकल कुक्से के साथ टोरंटो मेजबान संगठन समिति की सह-अध्यक्ष है।

कुक्से आगे कहते है, ''सम्मेलन में आकर आपको लग सकता है कि आपने दुनिया घूम ली है।''

एलीस हेन्सन

सेंट लॉरेंस मार्केट में एक चीज़माँगर।

सेंट लॉरेंस मार्केट, दुनिया के शीर्ष 10 खाद्य बाज़ारों में से एक है।

दिन की सैर

नियाग्रा जलप्रपात और नियाग्रा-ऑन-दी-लेक

नार्थ अमेरीका के सबसे प्रसिद्ध प्राकृतिक अचरज़ों में से एक, नियाग्रा जलप्रपात, टोरंटो से केवल 90 मिनट की दूरी पर स्थिति है। आप झरने को ज़मीन से, हवा से (हेलीकाप्टर द्वारा) या पानी से (स्पीडबोट की सैर पर्यटकों को फुहारों के विशाल पर्दे में भिगो देती है) निहार सकते है। नियाग्रा-ऑन-दी-लेक, ओंटारियो के अंगूर के बगीचों के मध्य स्थित 19वीं सदी का यह निकटवर्ती गाँव, घोड़ा गाड़ी, विक्टोरियन बी एंड बी होटल और मनभावन बुटीक प्रस्तुत करता है।

ओंटारियो का मदिरा गाँव

दक्षिणी ओंटारियो लगभग उसी अक्षांश पर स्थित है जिस पर दक्षिणी फ्रांस है, और यह क्षेत्र उसी की तरह अंगूर के बागों का घर है।स्थानीय लोगों की सबसे पसंदीदा है बर्फ वाइन, एक मीठी शराब जो अंगूर की बेलों पर जम चुके अंगूरों को तोड़कर बनाई जाती है। *winecountryontario.ca* पर ओंटारियो वाइनशालाओं के दौरे की योजना बनाइये।

मस्कोका

प्राकृतिक खूबसूरती एवं आपेक्षिक एकांतता ने मस्कोका को अमीर (और अक्सर प्रसिद्ध) लोगों के खेल का मैदान बनाया है। ख्यातिप्राप्त व्यक्ति, खिलाड़ी, और अन्य करोड़पती लोग टोरंटो के बाहर तीन बड़ी झीलों - मस्कोका, जोसफ और रिस्सो- पर हाल के वर्षों में संपत्ति खरीद रहे है। यह ऐसी जगह है जो आपको एक अवधि के लिए एक कुटिया किराये पर लेकर उपन्यास लिखने के लिए मजबूर करती है। यह लगभग दो दर्जन गोल्फ कोर्स का ठिकाना भी है। जैसा न्यू यॉर्क के लिए हेम्पटन्स है, वैसे ही टोरंटो के लिए मस्कोका है।

गाय की पसंदीदा जगहों में से एक है बाल्डविन स्ट्रीट स्थित कैफ़े ला गैफ, एकांत में स्थित एक छोटा रेस्टोरेंट जिसमें फ्रेंच-प्रेरित मेन्यू है, दिखती हुई ईंटों की दीवारें है, और एक इंडी प्लेलिस्ट है। बहुत से पर्यटक नजदीक के केंसिंग्टन मार्केट में भी खाते और खरीदी करते है। सैंट लॉरेंस के विपरीत, केंसिंग्टन मार्केट वास्तव में एक बाज़ार नहीं है, बल्कि एक इलाका है। अप्रवासन की लहरों ने इस इलाके को आकार और पुनः आकार दिया है, जिसे इसका नाम 1920 के दशक में मिला जब यह मुख्य रूप से एक यहूदियों का इलाका था और परिवार उनके घरों के सामने के चबूतरे से सामान बेचते थे। आज भी यह अप्रवासियों का एक समुदाय ही है, अब अधिकतर चीनियों का, और कलाकारों एवं कार्यकर्ताओं का एक केंद्र है। अच्छे भोजन को रास्ता पास्ता में, जो इतालवी और जमैकाई व्यंजनों का सम्मिश्रण करता है; एमेड्यूस में, इसके ग्रूपर के लिए जाना जाने वाला एक पुर्तगाली स्थल; और हिबिस्कस में, जहाँ मेन्यू शाकाहारी, लासा मुक्त और जैविक होता है, में पाया जा सकता है। मीट खाने वालों को बर्गरनेटर पसंद आएगा, जहाँ आप चेडर पनीर, एक तले हुए अंडे, कुकुरमुत्ते, शक्कर में भुनी गयी प्याज, सलाद एवं टमाटर से परिपूर्ण बर्गर प्राप्त कर सकते है।

खाने और खरीददारी की अपनी तरह की एक इकलौती जगह शहर का डिस्टिलरी हिस्टोरिक डिस्ट्रिक्ट

एलीस हेरमन

केंसिंगटन मार्केट में एक कलाकार।

एलीस हैन्सन

केंसिंग्टन मार्केट में बर्गरिटर में कैप्टन जर्क बर्गर ।

है, जो अब कला एवं मनोरंजन का एक मक्का है। मेजबान समिति यहाँ पर सम्मेलन में उपस्थित होने वालों के लिए खाने एवं मनोरंजन की एक शाम की योजना बना रही है; अधिक जानकारी के लिए *rotary2018.org* पर जाएं।

2003 में, औद्योगिक परिसर जिसमें एक समय गूडरहैम और वोर्ट्स मद्यशाला स्थित थी को पुनर्विकसित किया गया। न्यू यॉर्क के सोहो की याद दिलाने वाला लेकिन अधिक आरामदेह, यह केवल पैदल यात्रियों का क्षेत्र है जिसमें 80 स्वतंत्र फुटकर विक्रेता घर की सजावट के सामान से लेकर गहनों तक सब कुछ बेचते है। हम हील बॉय पर रुके, पालतू जानवरों के एक महंगे बुटीक की आशा करते हुए (जो वास्तव में जूते बेचता है), और कॉर्कटाउन डिज़ाइन्स पर, जो दुनिया भर के डिज़ाइनरों के आधुनिक गहनें पेश करता है। अधिक खरीददारी के लिए, इटन सेंटर सभी प्रमुख फुटकर विक्रेताओं को एक आरामदायक मॉल जैसे समायोजन में प्रस्तुत करता है जबकि यॉर्कविल एक संपन्न इलाका है जो महंगे बुटीकों एवं ठाठ-बाठ वाले रेस्टोरेंटों से भरा हुआ है। (वन रेस्टोरेंट का आँगन लोगों को निहारने के लिए बढ़िया है।)

लेकिन डिस्टिलरी डिस्ट्रिक्ट केवल खरीददारी के लिए ही नहीं है। इसका किसी जमाने का घटिया अतीत भी जानने योग्य है। गो टूर्स पर रुकिए और ''शराब, मौत और हैज़ा'' की सैर बुक कीजिये और जानिये कैसे गूडरहैम और वोर्ट्स दुनिया की सबसे बड़ी मद्यशाला बनी (आखिरकार हिरम वॉकर कंपनी में विलय करके), शराबबंदी के दौरान यूएस का अधिकतर बाज़ार नियंत्रित करते हुए।

टोरंटो के इतिहास के बारे में और अधिक जानने के लिए, कासा लोमा जाइये, नार्थ अमेरीका का एकमात्र पूर्ण आकार का महल। इसे सर हेनरी पेलेट द्वारा 1900 के दशक के प्रारंभ में तब बनवाया गया था जब उन्होंने कनाडा में बिजली लाकर अपना भाग्योदय किया था: जब 1911 में महल का निर्माण शुरु हुआ तब उनकी संपत्ति 17 मिलियन डॉलर थी। यूरोप की उनकी यात्राओं ने उन्हें उनका स्वयं का एक महल बनाने के लिए प्रेरित किया, और सजावट के अधिकतर सामान आयात किये गए थे। उन्होंने अपने अध्ययन के लिए नेपोलियन की लेखन मेज़ की नक़ल तैयार करवायी। अपने शयन कक्ष में, उन्होंने गर्व के साथ शेर की खाल का कालीन बिछाया।

हालाँकि, सबकुछ योजना अनुसार नहीं हुआ। पेलेट और उनकी पत्नी, लेडी मैरी, 15 वर्ष से भी कम समय कासा लोमा में ठाठ से बिता पाए जब तक उनकी कंपनी ने बिजली पर उसका एकाधिकार खो ना दिया। आखिरकार, पेलेट दिवालिया हो गए, उनकी अधिकतर संपत्ति नीलाम हो गई। महल एक होटल में बदल गया, जो 1929 में बंद हो गई। 1937 में, किवानिस क्लब ऑफ़ वेस्ट टोरंटो द्वारा इसे एक पर्यटक आकर्षण के रूप में ले लिया गया, जो इसका अभी तक संचालन कर रहा है। मेज़बान समिति के कुक्से कहते है कि कासा लोमा जरुर देखना चाहिए, इसलिए समिति रोटेरियनों के मनोरंजन के लिए कासा लोमा के बगीचों, जहाँ से शहर का अच्छा नज़ारा दिखता है, में एक सिम्फनी संगीत कार्यक्रम की एक शाम आयोजित करने की योजना बना रही है।

अन्य शहरों की तरह, टोरंटो में दर्जनों संग्रहालय है। इनमें सबसे बड़ा है रॉयल ओंटारियो, एक प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय जिसमें डायनासोर से लेकर कला तक की प्रदर्शनीय वस्तुएं है और हर साल यह एक मिलियन से भी अधिक दर्शकों को आकर्षित करता है। लेकिन उसी सड़क पर आगे एक शांत, विचित्र विकल्प है - बाटा शू म्यूज़ियम। यह केवल जूते पसंद करने वाले लोगों के लिए नहीं है। यह एक विश्व इतिहास का दौरा है जिसे जूतों के शीशे से देखा जाता है। उदाहरण

खाने के लिए अधिक

स्थानीय रोटेरियन उनके पसंदीदा रेस्टोरेंट साझा करते है

स्कारमूच

''यह टोरंटो के खूबसूरत नज़ारे वाला एक उत्तम रेस्टोरेंट है। यहाँ पर एक और भी सादा बार क्षेत्र है, जहाँ अद्भुत पास्ता मिलता है।''

कैफ़े डिप्लोमेटिको

''बढ़िया इतालवी खाना, शानदार लोगों का पर्यवेक्षण, पारिवारिक व्यवसाय, बड़ा आँगन।''

आलो

''जरूरी है यदि आपका बजट है।''

हाउस ऑफ़ चेन

''टोरंटो के सबसे विवध रेस्टोरेंटों में से एक जो लाजवाब मांस की टिकिया और बछड़े के मांस के साथ उत्कृष्ट चीनी व्यंजनों जैसे स्वादिष्ट भुनी हुई सेमन और उत्कृष्ट एग फू यंग परोसता है।''

बुका

''आपका सामान्य इतालवी भोजन नहीं। ... शहर भर में खाने के शौकीनों की पसंद और लगातार टोरंटो के शीर्ष रेस्टोरेंटों में से एक के रूप में प्रमाणित किया गया।''

सोरेल

''भिन्न मेन्यू जिसमें सभी के लिए कुछ है, सब कुछ अच्छी तरह से पकाया हुआ। ताज़ी मछली, पास्ता, बतख, ओएस्टर, मांस की टिकिया, और अनोखी फ्राइड चिकन।''

कासा लोमा, उत्तरी अमेरिका में एकमात्र पूर्ण आकार वाला महल।

के लिए, ''शाहबलूत तोड़ने वाली खड़ाऊँ,'' जो उसके 2 इंच की नुकीली कीलों के साथ डरावने लगते है लेकिन वास्तव में यह शाहबलूत छीलने का 19वीं सदी का एक फ्रांसिसी औजार है। काले चमड़े के जूतों की एक जोड़ी ऐसी लगती है जैसे कि यह कोई बच्चे द्वारा पहने जाते थे परन्तु वे चीन में सीमित पैर वाली महिलाओं के लिए बने थे। संग्रहालय के संस्थापक सोंजा बाटा ने कनाडियाई आर्कटिक एवं अन्य क्षेत्रों में क्षेत्र-अनुसंधान के लिए धन दिया है ताकि स्वदेशी लोगों द्वारा बनाये गए जूतों, जैसे कि संकर्षण के लिए जूते के तले में रेनडियर के रोएँ लगे जूतों, को रिकॉर्ड किया जा सके। संकलन प्रसिद्द जूतों के उस हिस्से को भी प्रस्तुत करता है - जिनमें एल्टन जॉन द्वारा 1970 के दशक में मंच पर पहने गए चमकदार ऊँची एड़ी के जूते शामिल है।

हॉकी की बात किये बिना टोरंटो से जाना असंभव है। कनाडा ने इस खेल के कुछ सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी दिए है, और हॉकी हॉल ऑफ़ फेम देश के खेल नायकों के लिए एक तीर्थस्थान है। जब 1961 में यह खुला, तब प्रधानमंत्री जॉन डिफेनबेकर ने कहा, ''राष्ट्रीय एकता लाने के लिए हॉकी से बढ़कर और कुछ नहीं है।'' यह हॉल एमटीसीसी से थोड़ी दूर की पैदल यात्रा पर स्थित है और पारस्परिक अनुभवों को पेश करता है जैसे कि प्रसिद्द गोलकीपरों कैरी प्राइस और हेनरिक लुंदक्विस्ट के कंप्यूटर द्वारा उत्पन्न संस्करण के खिलाफ आभासी शूटआउट करना, जो आपके गोल को रोकने का प्रयास करते है। इसमें 18,000 वर्ग फीट में हॉकी की यादगार वस्तुएं भी रखी हुई है जो दुनिया का सबसे बड़ा संकलन है।

एक ऐसे शहर में जिसकी पहचान संस्कृतियों का मिश्रण करने वाले के रूप में है, यह स्थान 100 प्रतिशत कनाडियाई है। लेकिन टोरंटो के अंदाज़ में, सभी का स्वागत है।

© The Rotarian

बाटा शू संग्रहालय में फ्रेंच बोडोइर चप्पल की एक जोड़ी।

आज ही पंजीकरण

कीजिये और बचाइए

15 दिसंबर तक, 2018 सम्मेलन के लिए पंजीकरण पर बचत कीजिये। अभी *riconvention.org* पर पंजीकरण कीजिये।

Welcome to Rotary Institute 2017

Ian Riseley
RI President 2017–18

RI Director C Basker
Convener

PDG R Theenachandran
Chairman

Innovation is the key

Transformation is what happens to a drop of water when it is touched by the magic of sunlight. It becomes a rainbow. It is what happens to a seed when it starts the journey to become a mighty banyan tree. The banyan tree is not an improved seed, just as a butterfly is not an improved caterpillar or a rainbow an improved drop of water.

Man's loftiest wishes and dreams have become reality through creativity and innovation. A 100 years ago who would have believed that humans could fly or that men could walk on the moon? Innovation is about putting foundations under the dream castles we build in the air.

In its 112 years history, Rotary International has always been evolutionary and sometimes revolutionary. This has been achieved by involving Rotary's RI officers in a time honoured system of meeting every year to discuss the future of Rotary. Rapid change is the nature of the world today. Rotary too needs to respond in order to be relevant.

The Annual Institute of Rotary officers in the sub-continent will be held this year for the Zones 4,5 and 6A in Malaysia at the Sunway Resort City, Kuala Lumpur, on December 1–3, 2017. Almost a 1,000 RI officers from the region are expected to participate in an interactive process that will involve present, past and future RI leaders, in a process of innovation that will recreate our movement.

One of the highlights of the Institute is the training of our DGs, DGNs and DGEs. They go through a clearly developed syllabus with trained facilitators. This ends with an inspiring graduation ceremony.

Have you Registered?

Rotary Institute 2017
KUALA LUMPUR
1-3 Dec '17 | Zone 4, 5 & 6A
UNITE TO SERVE

For Registrations contact:
PDG R Theenachandran
Chairman - Rotary Institute 2017
Devi House, 281-4 Sivagangai
Main Road, Gomathipuram
Madurai - 625 020
Tamil Nadu, India

M: +91 94430 53301
E : theena3000@gmail.com
Alternative Contact:
+91 73977 44371 / 73977 44372
www.rotaryinstitute2017.org

Eminent Speakers

Steve Rodgers, a business and lifestyle consultant, and a best-selling author. He sees himself as a "leader, helping others discover and maximise their highest good and purpose in life and business." He lives by the personal code: help individuals and companies unlock their full potential.

Mitty Chang, grew his entrepreneurial roots when he built his first website in 1998. He was in the fourth grade at that time. By the time he was 13, he had already begun his career in freelance web designing.

Swami Sukhabodhananda, is not only one of the most respected spiritual leaders of the country, he is also nicknamed the 'Corporate Guru'. His expertise lies in synthesising ancient wisdom of the east and modern vision of the west appealing to both young and old from a wide spectrum of society.

Mahatria Ra
T T Rangarajan or Rajan or "Mahatria" is a New Age Guru with a captivating style. Mahatria embarked on a mission to awaken humanity on the path of holistic abundance. Since then, his singular pursuit has been to enable living from the highest practical pedestal possible.

Bobby Cash
An extremely talented country music artist from India — Bobby Cash, known as 'The Indian Cowboy', is a charismatic character. Tall, good looking, dressed in black leathers and a Stetson — he is a Star!

Speakers from Rotary International

Rajendra K Saboo
Past RI President

Kalyan Banerjee
Past RI President

K R Ravindran
Past RI President

Sushil Gupta
TRF Trustee

Paul A Netzel
TRF Trustee Chair

John C Matthews
RI Director

Serious fun!

Rotary should be serious fun, says RI President Ian Riseley. With his infectious smile and zestful energy, he exhorted Rotarians to enjoy the Institute as it is an important part of a leader's Rotary journey. "Plan your year through interactive discussions. Celebration and the inspiration you gain from the Institute will help you to make an even greater difference in your club and community," he says.

"Training is the most important thing we do in the Rotary year," says President Riseley. The work of Rotary is not done on the 18th floor of the Rotary Building in Evanston. We make a difference in the world because of the work done in over 35,000 Rotary clubs around the world.

As leaders, we need the Institute to make our work more efficient and focussed. We can then ensure that each year's goals are achieved at the club level. Team work ensures that we are united in the common purpose of making a difference.

"As Rotarians, we need to understand our responsibility to the planet," he says. "As an accountant, I want to see two figures this year — the total value of money spent on Rotary projects and the number of volunteer-hours spent. I am sure that this same measure will help you keep track of your contribution to our Movement."

Riseley and Juliet believe in walking the talk. A keen proponent of environmental sustainability, they live on a 7-acre property, where they practise their ideas in a very personal way. They want every Rotarian to plant a tree.

Visioning tomorrow

The webinar where a large cross section of Rotarians participated, was a trendsetter. It was high tech, interactive — a lot of listening and sharing happened. Virtual Reality hit us at the Atlanta Convention. Tomorrow has arrived in Rotary. The Malaysian Institute is your chance to put your stamp on Rotary's future. You too can leave your footprints on Rotary. Discussions, sharing and building networks will be the core elements of our annual family get-together, which the Institute really is.

We want you to take innovation and flexibility right down to the club level. As Rotary leaders, we need more Rotary in every Rotarian. We need to keep our flock together. Let us aim for the impossible — 100 per cent retention. Let us use all our powers to mentor, support and care for our people and keep them in Rotary.

Sam Owori had a vision of an India with 1.2 million Rotarians. What we need is a quantity of quality Rotarians. Let us meet at Sunway Resort City, Kuala Lumpur. Let us think, talk, plan and participate in the trendsetting year ahead.

Today everyone is looking for instant success, instant fame, instant friendship. There is nothing instant in this world. Except instant coffee and even that does not taste so good. Let us unite, to put together, to create a braver, better, brighter Movement.

C Basker
RI Director 2017–19

Refreshing experience

This Rotary Institute is an experience by itself. The delegates get all the entertainment besides the Institute programmes. For three days, delegates live in an exciting environment with all home comforts, which will certainly be a very refreshing, memorable lifetime-experience.

PDG R Theenachandran
Chairman – Rotary Institute 2017

ओसवाल्डो ब्यूनोस आयर्स में
बारबेक्यू तैयार करते है।

काउच है, तो यात्रा होगी

अदिति डे

हमारे परिवार में से कभी कोई दक्षिणी अमेरिका नहीं गया। तुम्हें जाना चाहिये, लेकिन तुम वहाँ रहोगी कहाँ? वर्ष 2013 में माँ ने उत्सुकता से पूछा। ''क्या तुम 99 दिनों में 7 देशों में ठहरी? क्या तुम्हें अच्छे होटल मिले? क्या उस महाद्वीप में तुझे अच्छे दोस्त मिले?''

उत्तर बहुत ही स्पष्ट है, ना। कई बार नहीं। माँ जानती है कि मैं एक लेखक के रूप में मेरी रचनात्मक बैटरी को चार्ज करने के लिए घूमती रहती हूँ। एक विलासिता पूर्व आवारा या पर्यटक की तरह नहीं बल्कि मानवीय स्पर्श की तलाश वाले एक यात्री की तरह। चेहरे और कहानियाँ हमेशा चैक लिस्ट और स्मारकों पर जीत जाती है। एक बार 22 उड़ान और कई वीजा कवर होने के बाद भी मेरा बजट होटल या ठहरने के अन्य स्थलों तक नहीं खिंचता है, लेकिन अचानक कुछ हो तो जवाब देना होता है।

करीब 28 ठहराव के बाद दो विकल्पों को मिलाया जाना कारगार प्रतीत होता है। यूथ होस्टल इन्टरनेशनल, जो पीढ़ीयों का मिलन कराता है, जो 2001 से स्कॉटलैण्ड और आयरलैण्ड से पीठ पर थैला डालने से शुरू हुआ। दूसरा, वर्ष 2004 में सेनफ्रांसिस्कों में स्थापित काउच सर्फिंग। काउच सर्फिंग का मतलब ऑनलाईन रह कर लागत रहित अतिथेय का आदान-प्रदान इसकी अभी विश्वव्यापी सदस्य संख्या करीब 14 मिलियन है। यह एक अकल्पनीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान का पुल है। इसलिये दोस्ती बिना किसी बड़ी कल्पना के करो।

काउच सर्फिंग के लिए साधारण की प्रमाणित एकल, कही भी जाने को स्वतंत्र, आयु करीब 60 वर्ष, लिखने और पढ़ने की रूचि, कला वे थियेटर, संगीत और नृत्य, टैक्सटाइल्स और क्राफ्ट।

ब्यूनस आयर्स में लोकं रंजन कैसा है? मेरा पहला पड़ाव .... और जवाब ... 20 से भी अधिक 21 से 65 की उम्र के बीच अर्जे टाइन काउच सर्फ करने वालों ने अपना घर ऑफर कर दिया। भरोसेमन्द मेजबान की जाँच के बाद मैं 32 वर्षीय कारपोरेट कर्मचारी मैगाली बारले, के साथ ठहरी। वह अपने माता-पिता के साथ रहती है। क्या मैं उनके लिए भारतीय भोजन बनाऊँ, जिसके साथ टोरटा ट्रेस लेचेस, एक स्वादिष्ट दक्षिण अमेरिकी केक, जिसे मैने बैंगलोर में बनाना सीखा। हाँ।

काउच सर्फिंग को गति देने के लिए मैने वर्ष 2013 में ताइवान की एक 18 वर्ष की लड़की रीटा को अपना अतिथि बनाया। यह रीटा की प्रथम भारत यात्रा थी। आगे बढ़ती उम्र में हम कथाकार और श्रोता के बंधन में बंध गये। हम खाना खाने

और नौका चालन के लिए गये। हमने बैंगलोर मेट्रो की यात्रा की। हमने दोपहर का भोजन एक कलाकार दोस्त के घर किया। हमने रंगा शंकर थियेटर में अस्पष्ट उच्चारण वाले बच्चों के नाटक में भाग लिया। रीटा का कथन था, ''हरेक ने मुझे कहा कि बैंगलोर एक नीरस सा आई टी शहर है, लेकिन मैं तुम्हारी लाइफ पसंद करती हूँ, तुम्हारा खूबसूरत घर, तुम्हारे साथ खाना पकाना आदि।'' हम आज भी सम्पर्क में है।

जहाँ तक मेरा सवाल है, मेरे ब्यूनस आयर्स का भ्रमण चार साल बाद भी सजीवता पूर्वक मुझे याद है। अक्टूबर 2013 में पिस्तारणी एयरपोर्ट पर रात को 9:40 बजे का समय विभिन्न शक-संदेह मुझ पर आक्रमण कर रहे थे। क्या मैं अपने मेजबान को काउच सर्फिंग प्रोफाइल से पहचान जाऊँगी? अर्जेन्टीना में -ढच् को कैसे चलाया जाता है?

क्या मैं अपनी टूटी फूटी स्पेनिश से अजनबियों को मदद के लिए बुला सकूँगी? मैगाली की चमकती मुस्कान ने मेरी सभी शंकाओं को दूर कर दिया। अगली सुबह उसने अपना बस-पास मेरे हवाले कर दिया। उसके पापा ओस्वाल्डो ने मेरे अमरीकी डॉलर अर्जेन्टीना की मुद्रा 'पेसो' में परिवर्तित करवा दिए। उनकी राजधानी का प्रभाव अभी भी नृत्य कर रहा था। ऐतिहासिक प्लाजा डे मेयो में पेरोनिस्ता (अर्जेन्टीना का प्रसिद्ध राजनीतिक आन्दोलन) का वफादारी प्रदर्शन कोलकाता के विद्रोह की याद दिलाता है। यह एक आवाज थी बेघरों के लिए, नागरिक अधिकारों के लिए और 1982 के मालनिवस (फॉकलैण्ड द्वीप समूह) युद्ध के अपंग वरिष्ठ लोगों के लिए न्याय के लिए।

राजधानी अवेनिडा कॉर्डोबा पर 11,000 वर्ग मीटर बने हुए गैलेरियास पेसिफ़िओडो के भीतर एक और पहलू को दिखाता है। वर्ष 1889 में भवन में बने घर की आकर्षक छत की हमने प्रशंसा की हैं। मेगाली और उसके दोस्तों ने अर्जेन्टीना ब्राण्ड स्टाईल की तरफ इशारा किया जिसमें एड्रियन कॉन्सटैंटीनी, मारिया चेर और एल बॉयरो शामिल है। इनसे भारतीय स्टाईल की तुलना करते हुए पुराने स्कार्फ और मोती लगे बैगों की तुलना करते हुए हम हँसते-हँसते फुटपाथ पर लगभग गिरने वाले थे।

अचानक, जुलिएटा ने ध्यान भंग करते हुए बताया कि ''एक फिल्म समूह 1987 में यहाँ एक डॉक्यूमेंटरी की शूटिंग कर रहा था। उन्होंने तहखाने में भयावह नज़ारा देखा। पुराने समय के इस यातना गृह की दीवारों पर सहायता के लिए उंगुलियों के नाखून उकेरे हुए नजर आ रहे थे। वर्ष 1976 से 1983 में फौजी तानाशाहों ने अर्जेन्टीना पर शासन किया जो बहुत निर्दयी थे। उस दौरान करीब 30 हज़ार लोग गायब हुए थे। हमारे जीवन की यह कहानी हमें चुप्पी में भी डरा देती है।

इनजेबोर्ग वेलपारेसो में स्वादिष्ट चिली के सेविच के साथ।

भारत से मेरे घर से दूर आने के बाद अर्जेन्टीना के लोगों ने यह साबित कर दिया था कि वे भी पारीवारिक केन्द्रित होते हैं। मेगाली ने मुझे अपना खूबसूरत शयनकक्ष उपलब्ध कराया। ओसवाल्डो ने परम्परागत रूप से रविवार को बार-बे क्यू मांसाहार (जिसे ''असाडो'' कहा जाता है) की विशेष व्यवस्था की। मदर्स-डे के दिन हमने माँ अनालिया के साथ प्यूरटो मदेरा के मार्केट में स्थित गोरमेट पारेटेनों रेस्तारां में शैम्पैन के साथ आनन्द उठाया। इस रेस्तरां के पास रियो डे ला प्लाटा नदी बहती है।

छः दिन बाद जब मैनें आकर्षक आईग्वाजू झरनों को देखने के लिए सामान दुबारा बाँधा तो हमने हमारे अनुभवों को गहराई से साझा किया। किस तरह से मैनें मेगाली और अनानिया को शवासन सीखाने की कोशिश की और किस तरह उनके झबरे कुत्ते ब्रियाना ने वहाँ शामिल होकर व्यवधान किया। अनालिया के बार-बार आग्रह पर किस तरह मैने बड़े ही आराम से परम्परागत *हर्बल यरबा मैट* को पिया। देर रात 2 बजे उन्होंने मुझ पर उपहारों की बौछार कर दी जिनमें डोरी लगा हुआ हाथ का बना हुआ पोस्टर भी था जिस पर लिखा था ''अपने सपनों का अनुसरण करो।''

काउच सर्फिंग की मेरी कहानी उत्तरी मध्य अर्जेटीना के मेंडोजा में भी जारी रही। एकल माँ और शेफ मिलाग्रोज ने मुझे अपना अतिथि बनाया। उन्होंने किसी तरह जोड़ तोड़ करके मैपू शराब क्षेत्र में अवस्थित बोडेगा जुकार्डी की निःशुल्क यात्रा का बंदोबस्त किया जहाँ शराब बनाने की बड़ी-बड़ी कुण्डियां, लकड़ी के कनस्तर और पुरस्कृत विंटेज बोतले थी। वहाँ के स्टाफ ने पीढ़ी दर पीढ़ी पुराने रहस्यों की झलक दिखाई। जैतून के तेल की आइसक्रीम पर हम इस बात को मान गये कि उनकी सांता जुलिया माल्बेक पूरी दुनियां की सर्वश्रेष्ठ शानदार रेड वाईन के बराबर है।

मिलाग्रोज की 16 वर्ष की बेटी ऑगस्टिना जे कृष्णामूर्ति के दर्शनशास्त्र (स्पेनिश अनुवाद) में तल्लीन हैं। वे मुझे प्रश्नों में उलझाकर जोश दिलाती हैं, क्या सारे भारतीय आध्यात्मिक हैं? बिंदी का अर्थ क्या है?, यदि मैं गोमांस खालूंगी तो क्या अपना पासपोर्ट खो दूंगी, क्या मैं भारत में 24 घण्टे 7 दिन साड़ी पहने रहती हूँ। रात्रभर चलने वाला वार्तालाप उन लोगों की गलत धारणाओं को समाप्त कर देता था।

करीब 44 पहाड़ियों से घिरे चिली के सुरम्य बंदरगाह वालपेरेजियो में मैनें एक अद्भुत सा

चयन किया। यह एक युवा वस्त्र डिजाइनर इनजेबोर्ग था जिसने हमारे पंसदीदा कवि पैब्लोनेरूडा के गीतों की लाईन को अपने हाथ पर टेटू के रूप में गुदवा रखा था। उसके पिता मैरिन इंजीनियर हैंस ने मुंबई की यात्रा कर चुके थे। उसकी माँ ग्लेडिस इन्टरनेट पर कम्प्यूटरों की मरम्मत करती है, लेकिन निः सन्देह इस परिवार का मुख्य आकर्षण हैंस की माँ एग्नेस है, जो 82 वर्ष की आयु में भी आकर्षक है। वह दादा हेक्टर, जो कि उसके लगातार बहस में सहयोगी रहे हैं, से मिलने से पहले के अपने पुरूष मित्रों के किस्से मजाक के रूप में सुनाती है। वह बहुत ही हिम्मत के साथ प्राचीन पत्थरों से बनी हुई सीढ़ी पर उपर और नीचे जाकर देखने लायक आकर्षक दृश्यों को दिखाती है।

एक दोहपर हम नेरूदा के वालपराइजो के खूबसूरत घर के पीछे अगले दरवाजे पर रहने वाली पेट की बीमारी से जूझ रही एग्नेस से मिलने गये। कुछ समय बाद एग्नेस ने मुझे एक उपहार वाले कागज में लिपटा हुआ काले रंग का हैंड बैग दिया। उसने मेरे बड़ी साईज के किपलिंग बैग की ओर इशारा करते हुए कहा ''तुम मेरी तरह बहुत छोटी हो, तुम्हारा बैग सजा हुआ नहीं है, बड़ा है.... बड़ा है'' उसने कहा ''तुम इजेबोर्ग की तरह मेरी पोती हो, यह वादा करो मेरे मरने से पहले तुम दुबारा मुझसे मिलने आओगी।'' हमने एक दूसरे को बाँहों में भर लिया।

साओ पाउलो में मेरे मेज़बान - फैबियो जो एक बैंकर है और गिजेले जो ब्राजील साहित्य में प्रोफेसर है। उनको मेरे जीवन के एक स्वप्न की जानकारी थी। ब्राजील के मैदान पर फुटबाल का मैच देखना। हमने परम्परागत बुनाई, ज्वैलरी, चमकीले काच, परम्परागत मिट्टी की मूर्तियाँ देखने एम्बु तक की यात्रा की। हम विला मेडालिना की आकर्षक कलापूर्ण गलियों में घूमे।

मेरे 6 काउचसर्फिंग मेजबानों ने अपना घर और दिल मुझे दिया। क्या कोई होटल या हॉस्टल इस तरह की आत्मिक उदारता और मुझे मिले शानदार क्षणों का मुकाबला कर सकता है। उन सबको धन्यवाद।

फंडाएसी मारिया लुइसा ई ऑस्कर अमेरिकनो, जो एक समय *चा एस्टेट* (जिसे हम चाय कहते हैं) थी जहाँ बेशकिमती मेडल और पिस्तौल है, वहाँ औपनिवेशिक पाठ देखने को मिलता है, मुख्य रूप से वर्ष 1822 से 1831 तक ब्राजील के बादशाह रहे डॉम पेड्रो-ख (पुर्तगाल के राजा जॉन-तख के पुत्र) के समय का। बाद में हमने फैबियो के ननिहाल में शानदार मक्केका मछली के स्टू जिस पर भूरी शक्कर एवं केक की शानदार टोपिंग, का आनन्द लिया। उसी दौरान फैबियो ने कहा कि ''अदिति लंच के बाद हम लोग एस्टेडियो डो कैनेंडे जा रहे हैं, जहाँ कोरिन्थियन और पुर्तगालियों के बीच मैच है...'' लेकिन यह सुनकर मुझे रोना आ गया क्योंकि मेरी बैंगलोर के लिए मेरी फ्लाईट 12 घण्टें से भी कम समय में उड़ने वाली थी।

फैबियो जब तक गिसेले से नहीं मिला तब तक उसने अपने आपको फुटबाल से दूर रखा। उसका परिवार कोरिन्थियन टीम को पसन्द नहीं करता था। गिसेले ने हमारा साथ चुना (''हम इन खूंखार प्रशंसकों के पास तुम्हें नहीं छोड़ सकते'') हम बच्चों और हम लाल और हरे पुर्तगाली रंग में

इनजेबोर्ग और उसके परिवार के साथ वाल्पाराइसो में खाने के बाद।

बच्चों और दादाओं के बीच घिरे हुए थे और वहाँ पड़े ढ़ेर सारे मूंगफली के छिलकों के बीच ताली बजाकर उत्साहवर्द्धन किया। इस बात से ज्यादा फर्क नहीं पड़ता कि मांसल कोरिन्थियन ने हमारी टीम को हरा दिया। वहाँ स्टैण्ड पर ब्राजीलियों के लहराते हाथ के बीच जो वातावरण था, वो मेरे दिमाग में आज भी अंकित है। मैनें जैसे ही साओ पाउलो में म्यूजिओ डो फुटबाल देखन का कार्यक्रम बनाया गिसेले ने मेरे हाथ में एक नोट लिखकर रख दिया। यह नोट बस कण्डक्टर या संग्राहक के लिए था, जिसमें लिखा था 'मेरी दोस्त अदिति भारत से है उसको पुर्तगाली नहीं आती, कृपया इस बात का ध्यान रखें कि वह ऑबरीगेडो के फुटबाल म्यूजियम देखने के लिए सही स्थान पर उतरें'। हट्टे कट्टे बस वाले ने उसको पढ़ा और मुस्काया और इस बात को सुनिश्चित किया कि मैं सही रास्ते पर जाऊँ।

दक्षिण चिली के पंटा एरेना में मुझे फ्रांसिस्को (एक अंग्रेजी बोलने वाला नक्शानवीस, जिसका अस्तव्यस्त सा घर था) ने बताया किस तरह 40 से भी अधिक भारतीय परिवारों ने मिलकर किस तरह स्ट्रेस मेगलैन के मिलिट्री डेस में हिन्दू मन्दिर का निर्माण किया ''यह 1904 में शुरू हुआ जब भोजराजमल नन्दवानी स्टीमर लेकर ब्रिटिश भारत से चिली पेटोगोनिया पहुँचे। उनके सिंधी उत्तराधिकारियों ने हमारे 1.50 लाख आबादी के कस्बे मे सबसे बड़ी टोयोटा डीलरशिप ले रखी है।''

मगली अपनी भतीजी अंबर के साथ।

दूसरा शहर, दूसरी कहानी उशुआइया, जो कि अर्जेंटीना के टेरेरा डेल फ्यूगो में पृथ्वी के सर्वाधिक दक्षिण वाला शहर है, वहाँ मेरा दिल प्रिय कार्ला जो कि पत्रकार से राजनेता बनी, के घर रात्रि का भोजन करने के लिए धड़क रहा था। रात्रि के खाने पर शानदार किंग क्रेब के साथ कार्ला की दोस्त एन्ड्रियाज की कहानी सुनकर दुख हो रहा था उसने बताया ''जब हम 18 वर्ष के थे तो हमें 74 दिवसीय मालविनर्स युद्ध के लिए जबर्दस्ती सैना में शामिल किया गया। हम युद्ध के लिए प्रशिक्षित नहीं थे, जब हमने आत्समर्पण किया तब एक ब्रिटिश ग्रेनेड मेरे दोस्त पर आकर गिरा, उसका खून और चिथड़े मेरे उपर आकर गिरे। उसकी मृत्यु हो गई।'' 31 वर्ष बाद भी उसके घाव हरे थे।

कार्ला अपने बेटे पेड्रो के साथ उशुआइया में अपने घर में है।

अर्जेंटीना, चिली और ब्राजील में मेरे छः काउचसर्फिंग मेजबानों ने अपना घर और दिल मुझे दिया। ''क्या कोई होटल या हॉस्टल इस तरह की आत्मिक उदारता और मुझे मिले शानदार क्षणों का मुकाबला कर सकता है।'' उन सबको धन्यवाद। कभी भी ऐसा संभव नहीं है।

माँ जो 2015 में हमें छोड़ गई, ने हमेशा मेरे साहसिक काउचसर्फिंग को हमेशा पसन्द किया और मेरे मेजबानों की हमेशा जानकारी ली। आत्मिक रूप से मैं जिस तरह दुनियां की खोज करती हूँ आत्मिक रूप से वह उसे स्वीकार करेगी।

काउच है, तो यात्रा होगी वरना मैं दुनियां का आलिंगन कैसे करूंगी।

चित्र : *अदिती डे ; एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा*

आपके गवर्नरों से मिलिये

जयश्री

महिलाओं का सशक्तीकरण

आशा प्रसन्ना कुमार,

बिल्डिंग मैनेजमेंट, रोटरी क्लब टुमकुर ईस्ट, मंडल 3190

रशीदा भगत

डीजी विश्वास करती है कि कोई भी बाधा महिलाओं को महान सफलता तथा सम्मान प्राप्त करने से नहीं रोक सकती है, यदि वह दृढ़-संकल्पित, समर्पित और मेहनती हो;'' उनका लक्ष्य युवा पीढ़ी की महिलाओं के लिए स्वयं को एक आदर्श मॉडल के रूप में प्रस्तुत करना है। आशा प्रसन्ना कुमार, पहली पीढ़ी की एक महिला उद्यमी, को कर्नाटक चैंबर ऑफ़ कॉमर्स द्वारा वीमेन इंटरप्रेन्योर अवार्ड से सम्मानित किया गया है। वह एक एकेएस सदस्य चुनी गई, इसके बावजूद कि वह एक डीजीएन थी।

वह उत्साहित होते हुए कहती है कि इस वर्ष के शुरूआत से संपूर्ण मंडल में 2,000 से अधिक नन्हें पौधें लगाए गए है, और इसे मीडिया में व्यापक कवरेज प्राप्त हुआ। "हमें खुशी है कि पृथ्वी की हरीतिमा को बढ़ाने के हमारे प्रयासों ने हमारी सार्वजानिक छवि को बेहतर बनाया है।'' आशा ने लगभग संपूर्ण मंडल में विभिन्न रक्त दान शिविरों के माध्यम से 6,500 यूनिट रक्त एकत्र करते हुए, चिकित्सा शिविरों के माध्यम से 2,700 लोगों का उपचार करते हुए और नेत्र जाँच शिविरों के माध्यम से 3,700 बच्चों के नेत्रों की जाँच करते हुए, इस वर्ष की धमाकेदार शुरूआत की - और इन कार्यों में उसकी उत्साह और उत्तेजना स्पष्ट है। वह कहती है कि, "इस वर्ष हमारी योजना तीन लाख पेड़ लगाने और एक लाख बच्चों के नेत्रों की जाँच करना है।''

उनकी अन्य योजनाओं में युवा महिलाओं को एंकर, आरजेएस, एमसीएस आदि, शिल्प उन्मुख कौशल, बेकार वस्तुओं से उपयोगी वस्तुओं का निर्माण, आदि में 10 केंद्रों के माध्यम से व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना है। "हमने महिलाओं को केले के रेशे तथा अखरोट का पत्तियों का उपयोग कर पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों का निर्माण करना सिखलाया है - क्योंकि ऐसे स्रोतों से प्राप्त सामग्रियों की लागत कम होती है और उनके लिए न्यूनतम निवेश की आवश्यकता होती है।''

सरकारी स्कूलों में WinS घटकों को स्थापित करने में मदद करने के लिए एक निधि-एकत्र करने के लिए मैराथन आयोजित करना भी इस वर्ष उनके कार्यक्रमों का हिस्सा है।

टीआरएफ. के योगदान के लिए उनका लक्ष्य 2.2 मिलियन है और सदस्यता में 20 प्रतिशत से अधिक वृद्धि करना है। उनके सम्मेलन का पंजीकरण पहले से ही फुल हो चुका है ''लगभग 1,000 से अधिक पंजीकरण हो चुका है जबकि हॉल में बैठने की क्षमता 1,200 है।"

आशा 1985 के बाद से एक इनर व्हील सदस्य रहते हुए, वर्ष 2005 में रोटरीयन बनी। उनके पति प्रसन्ना कुमार भी एक रोटेरियन हैं।

सकारात्मकता उनके नाम में है

मंडल 3230 से अलग होकर नवनिर्मित हुए इस मंडल का गवर्नर तमिल भाषा के जानकार है, और प्रसिद्ध तमिल साहित्य, *तिरुक्कुरल* के दोहे धारा प्रवाह बोलते है। ''मैं किसी भी समय एक बार में 500 दोहों का पाठ कर सकता हूँ। मैं इन अमूल्य दोहों के माध्यम से लोगों को प्रोत्साहित करता हूँ। मैं अपने टीम को जरूरतमंदों की अधिक से अधिक मदद करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ, क्योंकि यही सबसे बेहतर तरीका है जिसके माध्यम से हम ईश्वर को उनके द्वारा हमें दिए गए सभी सुख-सुविधाओं के लिए हृदय से धन्यवाद कर सकते है,'' जवरीलाल जैन कहते है।

वे वर्ष 1997 से एक रोटरियन रहें है, और उनका मानना है कि समाज सेवा करने के लिए रोटरी उनके लिए एक वरदान से कम नहीं है। वे कहते है, ''जब मैं अपने ओसीवीएस पर होता है, तब मैं यात्रा/आवास भत्ते के लिए दावा नहीं करता हूँ। ईश्वर ने मुझे पर्याप्त और अधिक प्रदान किया है।"

अपने मंडल के लिए उनके पास व्यापक योजनायें है - सदस्यों की मौजूदा संख्या को 2,500 से बढ़ाकर 4,500 करना; मौजूदा 66 की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए 20 से अधिक नए क्लबों की स्थापना करना और टीआरएफ के लिए 4.4 मिलियन डॉलर से अधिक की राशि एकत्र करना। ''अपने टीम के उत्साह को देखते हुए, मैंने अपने पूर्वर्ती लक्ष्य 2.2 मिलियन डॉलर को दुगुना कर दिया है,'' जैन कहते है। अभी तक उन्होंने एकेएस के लिए 280,000 डॉलर का योगदान दिया है और इस वर्ष 250,000 डॉलर के नए चेक के साथ तैयार है।

वे अविकसित देशों में क्लबों के साथ भागीदारी करने के इच्छुक है और वैश्विक अनुदान के अंतर्गत जनकल्याणकारी परियोजनाओं को लागू करना चाहते है। ''अभी तक हमने इतनी मदद प्राप्त किया है, अब वापस देने का समय आ चुका है।"

इस वर्ष की उनकी परियोजनों में 650 स्कूलों को गोद लेना और उनके आधारभूत सुविधाओं को बेहतर बनाना तथा मंडल के 65 सरकारी अस्पतालों में बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध कराना शामिल है। वह टिप्पणी करते हुए कहते है, ''इनमें से अधिकांश अस्पतालों में बदलने के लिए बिस्तर का चादर भी उपलब्ध नहीं है।" उनका विचार 25 वाहन खरीदने और उन्हें वॉटर टैंक और वृक्ष रक्षक से लैस करना है और उनमें छोटे-छोटे पौधों को जमा करना है ताकि उनका उपयोग आसानी से वृक्षारोपण के लिए किया जा सके। प्रकृति की हरियाली के प्रेमी, जैन जी अपनी व्यक्तिगत हैसियत से 5 लाख से भी अधिक पेड़ लगाए हैं। उन्हें राजश्री बिरला, रतन टाटा और सुब्रोतो बागची से प्रेरणा मिलती है, जिन पर *रोटरी समाचार* में आलेख प्रकाशित किया गया था वे आगे कहते है।

के जवरीलाल जैन

रीअल्टर, रोटरी क्लब गुडीयाट्टम, मंडल 3231

जयश्री

जयश्री

धर्मेश आर पटेल

टिम्बर पैकेजिंग, रोटरी क्लब होसुर मिड्टाउन, मंडल 2982

प्रत्येक वर्ष प्रत्येक रोटेरियन

मैं एक भाग्यशाली गवर्नर हूँ। मेरी टीम ने सभी महत्वपूर्ण परियोजनाओं को पूरा कर लिया है, जिसकी योजना अभी तक मैंने बनाई थी,'' यह गवर्नर अपना विचार व्यक्त करते हुए कहते है, जो 65 से अधिक क्लबों के 2,700 से अधिक रोटरियनों का नेतृत्व करते है। धर्मेश पटेल अपने स्वपनों की परियोजना को पूरा करने के मार्ग पर है - 2 अक्टूबर से पहले 1,20,000 पेड़ लगाना। वह कहते है, ''हमारा कार्य केवल पेड़ लगाने से ही पूरा नहीं हो जाता है, बल्कि हमें उन पेड़ों के लिए पोषण और सुरक्षा की भी व्यवस्था करनी चाहिए।"

पटेल फाउंडेशन में योगदान करने के ईआरईवाई के विचार का जोरदार समर्थन करते है। 5 लाख डॉलर के लक्ष्य के साथ, वह कहते है कि वह आसानी से 3 लाख डॉलर एकत्र कर सकते हैं, यदि उनके मंडल के सभी रोटेरियन 100 डॉलर का योगदान देते है और कमी को प्रमुख दाताओं आदि के योगदानों के माध्यम से पूरा किया जा सकता है।

सदस्यता के मुद्दे पर, वह 15 प्रतिशत अधिक रोटेरियनों को शामिल करने और कम से कम तीन नए क्लबों की स्थापना करने के प्रति आश्वस्त है। ''सदस्यों को बनाए रखना कोई समस्या नहीं है। यह 90 प्रतिशत से अधिक है।'' वह उपयुक्त समय पर रोट्रैक्टर्स को रोटरियन बनने के लिए प्रोत्साहित करना चाहते है और वे आरआईडी सी भास्कर के विचार कि डीआरआरएस के लिए प्रशिक्षण सत्र को शामिल किया जाना चाहिए, का जोरदार समर्थन करते है।

वह WinS कार्यक्रम के साथ प्रगति पथ पर आगे बढ़ने के इच्छुक है और इसके लिए वे ''प्रत्येक क्लब को दो या तीन स्कूल आवंटित करना चाहते है और रोटरियन उन स्कूलों में वॉश के सभी घटकों को सफलतापूर्वक लागू करना सुनिश्चित करेंगे।"

वे रोटरी में वर्ष 2001 में अपने क्लब के चार्टर सदस्य के रूप में शामिल हुए थे, जो रोटरी के पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम से प्रभावित था। उनकी पत्नी रंजना भी उसी क्लब का सदस्या हैं और उन्होंने वर्ष 2008-09 में अध्यक्ष और 2010-11 में सहायक गवर्नर के रूप में कार्य किया है।

पति-पत्नि को सदस्य बनाना

व्यंकटेश विठ्ठल चन्ना
चार्टर्ड एकाउंटेंट, रोटरी क्लब सोलापुर एमआईडीसी, मंडल 3132

साक्षरता को प्रोत्साहित करना

मधु प्रसाद कुरुवाडी
चार्टर्ड एकाउंटेंट, रोटरी क्लब चित्रदुर्ग, मंडल 3160

जयश्री

वह पिछ्ले 12 साल से रोटेरियन रहे हैं और खुश हैं कि ''उन्हें जल्द ही गवर्नर के रूप में चुना गया।'' वह खुश हैं कि तिरुपति में उनकी मंडल के असेंबली को आयोजित करने का उनका विचार उनकी टीम के सदस्यों को अच्छा लगा है, क्योंकि इसके लिए ''शीघ्र जोरदार पंजीकरण" प्राप्त हुआ।

व्यंकटेश चन्ना को ''मंडल अधिकारी'' के माध्यम से क्लबों से बेहतर समन्वय प्राप्त करने के प्रति आश्वसत है, एक पद जिसका निर्माण इस वर्ष उन्होंने 11 राजस्व मंडलों में से प्रत्येक में किया है; वे अपने विचारों को आगे बढाना चाहते है। ''इस तरह यह एक व्यक्ति का कार्यक्रम नहीं होगा और काम को प्रभावी ढंग से पूरा किया जा सकेगा।''

वह अपने मंडल को हरे रंग की आवरण को बढाने की आशा कर रहे हैं, और उन्होंने 110 क्लबों में से प्रत्येक को 200 पौधा लगाने का कार्यभार सौंपा हैं। रोटरी को बेहतर प्रचार देने के लिए वह एक 'जन मैराथन' भी आयोजित करना चाहते है। मंडल में एक मेगा हेल्थ कैंप का आयोजन भी उनके एजेंडे में शामिल है। वह सितंबर में रवांडा में एक चिकित्सा मिशन का भी हिस्सा बनना चाहते है।

सदस्यता के मुद्दे पर, जबकि उनका ध्यान सदस्यों को बनाएं रखने पर है, वह 10 प्रतिशत तक सदस्यों की संख्या बढाने का भी लक्ष्य निर्धारित किया है, वह याद करते हुए कि कहते है कि पिछले साल सदस्यता के मामलें में दुनिया में उसका मंडल सबसे ऊपर था। टीआरएफ योगदान के लिए उनका लक्ष्य 3 लाख डॉलर है और अभी तक, उन्होंने 50,000 डॉलर एकत्र किया है।

चन्ना की पत्नी, लता, भी एक रोटरीयन हैं और एक फैशन डिजाइनर के रूप में, वह गुड़िया और आभूषण बनाने, फैशन डिजाइनिंग आदि में रोटरियनों की पत्नियों और अन्य युवाओं को स्थानीय इलाके में दो घंटे का प्रशिक्षण प्रदान किया जबकि क्लब के सदस्यों अपने ओसीवी पर गवर्नर के साथ बैठक में व्यस्त थे। "यह अच्छा है कि यदि पति /पत्नी भी एक रोटरीयन है, क्योंकि इससे हमें भाग लेने के लिए दोगुना प्रेरणा प्राप्त होगी," अपने भाग लेने के प्रयास में।

उनका मानना है कि अमीर-गरीब असमानता को केवल शिक्षा के माध्यम से ही समाप्त किया जा सकता है और वे अपने मंडल में साक्षरता स्तर को सुधारने के लिए अपनी इच्छा पूरी करने के लिए उत्सुक है। मधु प्रसाद ने परियोजनों की एक श्रृंखला की सूची तैयार की है, जिसका उद्देश्य साक्षरता को बढावा देना है - 100 हैप्पी स्कूलों का लक्ष्य, 6,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित करना, ई-लर्निंग की सुविधा के संचालन के लिए वैश्विक अनुदान और WinS गतिविधि के तहत स्कूलों में शौचालयों और वॉश स्टेशनों के निर्माण/पुनर्निर्माण करना शामिल है।

उनकी अन्य परियोजनाओं में ग्रामीण महिलाओं में स्तन कैंसर और अस्पतालों में डायलिसिस इकाइयों को स्क्रीन करने के लिए एक मोबाइल मैमोग्राम इकाई की व्यवस्था करना शामिल है। ''हमारे पास एक विशाल डीडीएफ है, करीब 2 लाख डॉलर और हम इसका इस्तेमाल समाज को अधिकतम लाभ देने के लिए करेंगे'', वह कहते है।

सदस्यता के विषय पर, गवर्नर का ध्यान कमजोर क्लबों को मजबूत करने और बनाए रखने पर है; ''हमारे पास 10 ऐसे क्लब हैं जिनमें 20 से कम सदस्य हैं।'' वह छः से आठ नए क्लबों की स्थापना करना चाहते हैं, 2,300 की मौजूदा सदस्य संख्या में 300 से अधिक सदस्य जोड़ना चाहते है और 50 रोटरेक्ट क्लबों को भी चार्टर में जोड़ना चाहते हैं।

कुरुवाडी टीआरएफ के लिए 2.65 लाख डॉलर के अपने योगदान के लक्ष्य को बढाना चाहते है। ''यदि प्रत्येक रोटरीयन 100 डॉलर का योगदान देता है, तो इस लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है,'' वे कहते हैं। वे और तीन अन्य रोटरियनों ने अलग-अलग 10,000 डॉलर टीआरएफ में दान किया है और इस प्रकार अपने स्थापना दिवस पर प्रमुख दाताओं की सूची में शामिल हुए है।

वे 27 वर्ष की आयु में रोटेरी में शामिल हुए थे। उनके पत्नी, सुधा माधुरी, भी एक रोटरीयन हैं। उन्हें आशा किरण परियोजना के अंतर्गत 150 बच्चों को वापस स्कूल में भेजने और स्कूलों में स्वयंसेवक के रूप में पढाने के लिए सम्मानित किया गया।■

शब्दों की दुनिया

इस अंक के साथ हम उस जादुई दुनिया पर एक स्तंभ शुरू कर रहे हैं जहाँ सिर्फ़, और सिर्फ़, पुस्तकें ही हमें ले जा सकती हैं।

गर्मी का जादू

संध्या राव

वह समय जब हम सिर्फ़ पुस्तकें पढ़ना चाहते थे।

गर्मी के जिस खुशगवार मौसम में पुरुषों की भारतीय क्रिकेट टीम ने होम सिरीज़ में ऑस्ट्रेलिया के विरुद्ध यादगार जीत हासिल की थी, मेरे 11 साल के बेटे को उसी वक्त चिकेन पॉक्स हो गया था। जैसा होना लाजिमी था, जल्दी ही मैं भी उसकी गिरफ़्त में आ गयी, और चूँकि घर में हम दोनों ही थे, मेरी आँटी बुआ हमारी मदद के लिये हमारे साथ रहने आ गयीं।

तब तक *हैरी पॉटर* श्रंखला की पहली चार पुस्तकें बाज़ार में आ चुकी थीं और हमारे घर की गरिमापूर्ण सदस्य बन चुकी थीं - दरअस्ल एक हाथ से दूसरे मैले हाथ में पहुँचने की क्रिया में वे गंदी हो चुकी थीं लेकिन फ़िर भी थीं हम सबकी बहुत प्यारी। तो जैसे ही जनाब ने जाना कि उसकी प्रिय सुमना आजी अपने सामान के साथ हमारे घर रहने आ गयी हैं, उसका उनसे पहला सवाल था: ''क्या आपने *हैरी पॉटर* की किताबें पढ़ी हैं?''

सच पूछो तो वे नहीं जानती थीं कि हैरी पॉटर दुनिया में किस बला का नाम है। तो जैसे ही उन्होंने मेरे बेटे को इंकार किया, बस उसने आव देखा न ताव, सीधे जगह-जगह अपने अँगूठे की छापवाली *हैरी पॉटर एंड द फ़िलॉसॉफ़र्स स्टोन* उनके हाथ में थमा दी और कहा: ''पढ़िये।'' बुआ हँस पड़ीं और बोलीं, ''ठीक है।'' उनका उसे

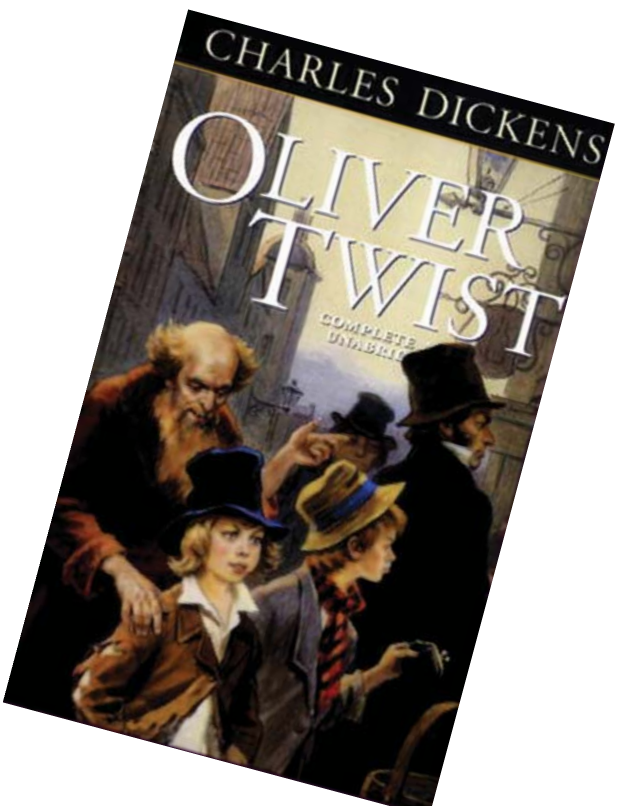

पढ़ने का कोई इरादा नहीं था लेकिन उन्होंने अपने सीरपव पशहिशु के साथ कोई बहस भी नहीं की। हर शाम बिना भूले वह *फ़िलॉसॉफ़र्स स्टोन* की बारीकियों पर उनसे जिरह करता, यह जानने के लिये कि उन्होंने आखिर कितने पन्ने असलियत में पढ़े थे। वह उनसे इतने अनवरत सवाल पूछता कि फ़िर चाहे इसे उनकी शर्मिंदगी समझिये या मेरे बेटे की खुशामदी, वे उन पन्नों को मजबूरन पढ़तीं। जब तक हमारा ख्याल रखने की उनकी ज़िम्मेदारी समाप्त हुई, उन्होंने यह किला लगभग फ़तह कर ही किया था।

मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं है कि आप में से बहुतों के पास पुस्तकों, पढ़ने और पुस्तकों के दीवानों से संबंधित ऐसे कई किस्से बताने के लिये होंगे। उदाहरण दूँ तो इतने उम्दा लेखकों, ग़ज़ब की पुस्तकों के खज़ाने और पढ़ने के प्रति अपने प्रेम के लिये मैं हर रोज़ ब्रह्मांड को धन्यवाद देती हूँ। सच पूछिये तो मैं नहीं जानती कि यदि पुस्तकें न होतीं तो मैं क्या करती।

क्या आपको भी ऐसा लगता है? क्या आपको भी यह सोचकर कि यदि पुस्तकें, पुस्तकालय, पुस्तकों की दुकानें, सैकंडहैंड पुस्तकों का खज़ाना, हिग्गिन्बॉथम न होते तो मैं क्या करती, डिप्रैशन होता है?

पश्चिम बंगाल के एक छोटे कस्बे में बड़े होने के दौरान मेरे दोस्तों और मैंने अपनी बेशकीमती पुस्तकें दान करके एक लाइब्रेरी बनाई थी और उधार ली गयी हर पुस्तक के लिये हम कुछ पैसे शुल्क लिया करते थे। यह उस समय की बात है जब हमें किसी भी बात की कोई भी जानकारी नहीं थी, फ़िर आय के अर्थशास्त्र, व्यय और निवेश की बात तो आप छोड़ ही दीजिये। लेकिन हम यह ज़रूर जानते थे कि हमें और पुस्तकें चाहिये थीं और वयस्कों के हस्तक्षेप के बिना अपनी स्वयं की पूँजी तैयार करना ही इसके लिये सबसे बढ़िया तरीका था। तब, साठ के दशक में, एक एनिड ब्लाइटन लगभग ढाई रुपये की आती थी। तो हमारा लक्ष्य भी यही था - जितनी बार ढाई रुपये जमा कर सकें, उतना ही अच्छा। यह तभी हो सकता था जब हमारे सब दोस्त और उनके दोस्त हमारी लाइब्रेरी से पुस्तक उधार लें। तो हमने जुनून की हद तक रिचमल क्रॉम्प्टन, एलिनोर ब्रेंट डायर, सूज़न कूलिज, एंजेला ब्रज़ील, डब्ल्यू ई जॉन्स, लूईसा मे एलकॉट, एल एम मॉंटगॉमरी और हर वो लेखक पढ़ा जिस पर हम हाथ डाल सकते थे। इनमें इलस्ट्रेटेड क्लासिक्स, फ़ैंटम और मैंड्रेक भी शामिल थे। पुस्तकें हासिल करने, मार्केटिंग और प्रचार के लिये हमारा मार्गदर्शन हमारी जानकारी के बजाय हमारे तर्क ने किया।

वह लाइब्रेरी हमने हमारी कॉलोनी में रहनेवाले एक ऋअंकलऋ के घर में एक आरामदायक जगह से चलाई। मुझे अब एहसास होता है कि वे अंकल कितने उदार और प्रोत्साहित करनेवाले थे।

बाद में जब हम किशोरावस्था में पहुँचे तो रमोनाज़ एवम् रविराज जैसे पुस्तकें उधार देनेवाले स्थानीय पुस्तकालयों ने पुस्तकें पढ़ने की हमारी कभी न बुझनेवाली प्यास को शांत रखा। मेरे दोस्तों और मैंने लुईस लमोर, ज़ेन ग्रे, एड्गर वॉलेस, पेरी मेसन, एगथा क्रिस्टी, टेलर कॉल्डवेल, जॉर्जेट हेयर, आइन रैंड, एलेन ड्रूरी, बारबरा कार्टलैंड, रिचर्ड गॉर्डन, एलैक्स हेयली, लिऑन यूरिस, अर्विंग स्टोन को पढ़ा और सब जगह व्यापक एवम् लोकप्रिय मिल्स एंड बून को भी। वर्षों के साथ-साथ पढ़ना भी ऋउत्तेजकऋ होता गया।

ब्रिटिश काउंसिल लाइब्रेरी और यूएसआईएस की लाइब्रेरी भी हमने नहीं छोड़ीं। चार्ल्स डिकेंस, जेन ऑस्टेन, व्लादिमीर नाबोकोव, डोरिस लेस्सिंग, सॉमर्सेट मॉम, अर्नेस्ट हैमिंग्वे, दोस्तोयेव्स्की, ट्रूमैन कपोटि, एफ़ स्कॉट, फ़िट्ज़जैरेल्ड, लिओ टॉल्स्टॉय, एल्बर्ट कैम्यू को पढ़ने के साथ-साथ वातानुकूलित वातावरण था और कभी-कभी दादा-दादी के बड़े प्रिंट के संस्करण भी आ जाते थे। हम अपनी छुट्टियाँ पढ़ने, पढ़ने और पढ़ने में बिता देते थे; नयी और रोमांचक दुनिया में खो कर। हम शब्दों की उड़ान भरते थे। हम कल्पना के घुमेरदार रास्तों पर यात्रा करते थे। हम वक्त को भूल जाते थे। हमने राजा राओ और आर के नारायण, कमला मार्कण्डेय और अनीता देसाई, नयनतारा सहगल और प्रेम चंद से मुलाकातें कीं, *रामायण* और *महाभारत* पढ़ीं, साथ ही *बाइबल* की उन मुफ़्त में मिलनेवाली और रंगीन पुस्तिकाओं से भी कहानियाँ पढ़ीं जिन्हें लोकप्रिय बना दिया गया था।

वे पौराणिक कथाएँ जिन्हें मेरी दादी अनेकों स्त्रोतों से बटोरकर, हमारे लिये बुनती थीं, ध्वनि और रोष लिये हुए होती थीं। वे रक्तरंजित और भयंकर होती थीं, और अलौकिक तरीकों से मोड़ और करवटें लेती थीं। उन कथाओं के लिये मेरे चचेरे भाई-बहनों और मेरी तृष्णा कभी शांत ही नहीं होती थी।

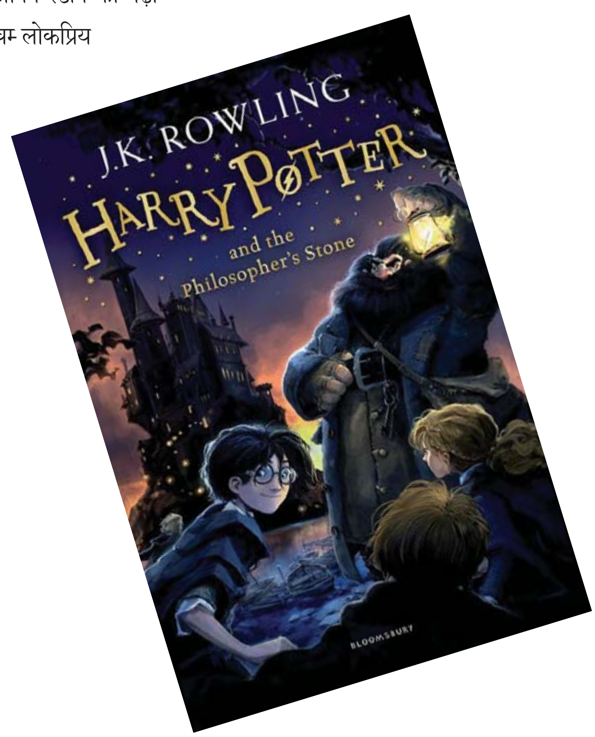

लेकिन सबसे उत्तम पौराणिक कथाएँ तो वे थीं जिन्हें मेरी दादी अनेकों स्रोतों से बटोरकर, दिन या रात के किसी भी समय, हमारे लिये बुनती थीं। उनमें ध्वनि और रोष होता था, वे रक्तरंजित और भयंकर होती थीं, और अलौकिक तरीकों से मोड़ और करवटें लेती थीं। उन कथाओं के लिये मेरे चचेरे भाई-बहनों और मेरी तृष्णा कभी शांत ही नहीं होती थी। वे कभी नहीं थकती थीं; वे सबसे स्वादिष्ट भोजन बनाती थीं और कभी-कभी जब हम उनके इर्द-गिर्द बैठे होते थे तो गोले बना-बनाकर हमें खिलाती भी जाती थीं। साथ-साथ वे आँखों में एक चमक लिये हुए दिल को छूनेवाली अनंत कहानियों का शब्दों से चित्रण करती जाती थीं। हम फ़टी-फ़टी आँखों से, सम्मोहित से बैठे हुए सत्य और कल्पना के हर निवाले को बिना किसी प्रश्न के निगलते जाते थे। कहानियाँ ऐसा प्रभाव डालती हैं।

स्वीडन की मेरी एक सहेली जो धर्म और आध्यात्मिकता में शैक्षिक रुचि रखती हैं एक बार अपनी छोटी बेटी, जो तब आठ या नौ वर्ष की रही होगी, से ईश्वर और मृत्योपरांत जीवन पर चर्चा कर रही थीं। अचानक उस नन्हीं बच्ची ने कहा, ''मैं ईश्वर में विश्वास नहीं करती। मैं एस्ट्रिड लिंडग्रेन में विश्वास करती हूँ।'' जैसा कि आप में से बहुत लोग जानते होंगे स्वीडेन

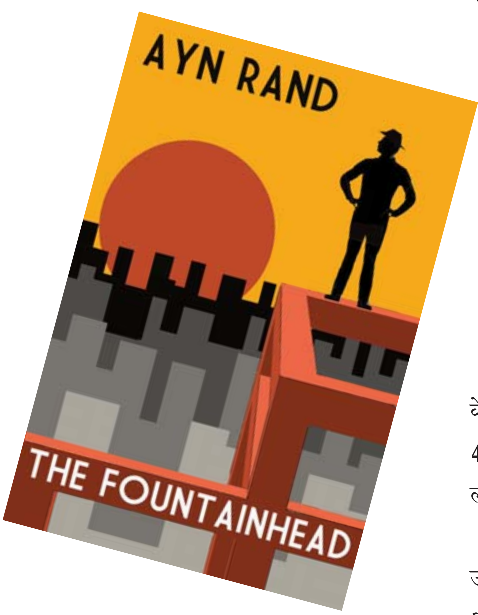

एस्ट्रिड ने अपनी सम्मोहक और व्यापक कहानियों से कई पीढ़ियों के पाठकों को आनंदित किया है। उनकी कहानियों का काफ़ी अनुवाद किया गया है । कई तो आज भी साहित्य में उन्हें पुरस्कार न देने के लिये नोबेल पुरस्कार समिति को माफ़ नहीं कर पाते। वे असाधारण थीं।

की संपादिका एवम् लेखिका एस्ट्रिड लिंडग्रेन वाकई एक अद्भुत हस्ती हुआ करती थीं। विश्व भर के चहेते अपने प्रिय पात्र पिप्पी लाँगस्ट्रंप (लाँगस्टॉकिंग) की रचना करने के लिए सबसे ज़्यादा प्रसिद्ध एस्ट्रिड ने अपनी सम्मोहक और व्यापक कहानियों से कई पीढ़ियों के पाठकों को आनंदित किया है। उनकी कहानियों का काफ़ी अनुवाद किया गया है और वे दुनिया भर में बहुत चाही जाती हैं। कई तो आज भी साहित्य में उन्हें पुरस्कार न देने के लिये नोबेल पुरस्कार समिति को माफ़ नहीं कर पाते। वे असाधारण थीं।

'एस्ट्रिड लिंडग्रेन स्पोक, पीपल लिसंड' (एस्ट्रिड लिंडग्रेन ने कहा, लोगों ने सुना) शीर्षक के अपने एक लेख के तहत ब्रिटिश पत्रकार डेविड वाइल्स ने लिखा है, ''68 वर्ष की आयु में उन्होंने स्वीडन के एक अखबार *एक्सप्रेस्सेन* को स्वीडन की कर प्रणाली में कर देने से बचाव के रास्तों पर एक लेख भेजा। इसका मतलब यह था कि उन्हें, जो कि पेशे से एक स्वनियोजित लेखिका थीं, खुद अपनी आय पर 102 प्रतिशत कर भरना पड़ता। लिंडग्रेन ने वह लेख परियों की एक कहानी के रूप में लिखा, और उसका फ़ौरन असर हुआ। *पाँपेरिपोस्सा इन मोनिस्मेनिया,* जो 1976 में प्रकाशित हुआ, अखबारों की सुर्खी बन गया। उससे न सिर्फ़ कर के कानून में बदलाव आया बल्कि उसके कारण 44 वर्षों से शासन करती आ रही सामाजिक लोकतांत्रिक सरकार भी अन्ततः ढ़ह गई।''

एस्ट्रिड लिंडग्रेन बोलीं और क्या खूब बोलीं, उन्होंने व्यवस्था को चुनौती दी, वे प्रबुद्ध थीं और उनका शब्द आखिरी शब्द हुआ करता था।

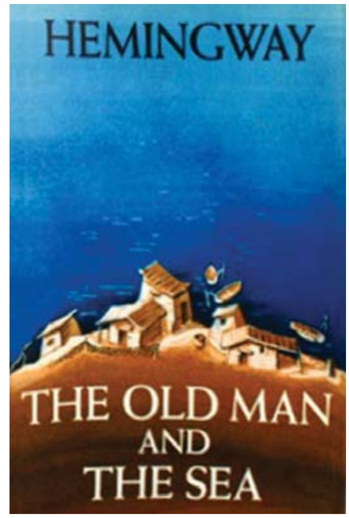

यदि लेखक ग्रैहम ग्रीन की मुलाकात स्वामी (*स्वामी एंड फ्रेंड्स*) से न हुई होती और वे उसके प्रेम में न पड़ते तो कौन जाने हमें आर के नारायण को खोजने में कितना वक्त लग जाता! जे के रोलिंग कहती हैं कि आखिर में ब्लूम्सबैरी के हामी भरने से पहले उन्होंने अपनी पहली *हैरी पॉटर* पुस्तक12 विभिन्न प्रकाशकों को भेजी थी। और वह एक हामी प्रकाशक के मुनाफ़े में कितना अजीबोगरीब अंतर ले आई! बहुत पहले एक इंटरव्यू में नाइजेल न्यूटन, जो उस वक्त ब्लूम्सबैरी पब्लिशिंग के चेयरमैन थे, ने कहा था कि रोलिंग द्वारा उन्हें दिया हुआ हैरी पॉटर का पहला अध्याय पढ़ने के बाद उनकी आठ साल की बेटी एलिस आगे की कहानी पढ़ने के लिये मचल गई थी। न्यूटन ने खुद पढ़ने के बजाय वह अध्याय एलिस को दे दिया था जो उससे इतनी मुग्ध हुई कि वह आगे क्या हुआ जानने के लिये उत्सुक हो उठी।

स्वामी एंड फ्रेंड्स सबसे पहले 1935 में प्रकाशित हुई थी। वह आज भी छपती है और पढ़ी जाती है। *पिप्पी लाँगस्टॉकिंग* सबसे पहले 1945 में छपी थी। और यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि *हैरी पॉटर* ने तो ब्लूम्सबैरी को बना दिया।

सच पूछिये तो सत्य कल्पना से ज़्यादा जादुई है।

समीक्षक एक बच्चों की लेखिका है और वरिष्ठ पत्रकार भी।

एस कृष्णाप्रतीश द्वारा रूपरेखा

गतिशीलता का उपहार

टीम रोटरी न्यूज़

पीआरआईपी गैरी सी के हुआंग एक लाभार्थी के साथ। चित्र में (दाये से) डी जी अभय गढगिल, पी डी जी दीपक शिखरपुर और (चरम बाये) पी डी जी दीपक पुरोहित भी शामिल है।

गौतम मांझरे बिना एक पैर के जीवन जी रहे हैं मजब से मैं पैदा हुआ था उनका जन्म एक शारीरिक विकृति के साथ हुआ था। लेकिन मकृत्रिम अंग का ''यह उपहार प्रदान करने के लिए रोटरी को धन्यवाद देने के लिए अब उनके पास शब्द नहीं है। मेरा जीवन अब परिवर्तित हो जाएगा।'' रोटरी क्लब पुणे मगरपट्ठा शहर, रोटरी क्लब्स खाद्की, पुणे कल्याणी नगर और मंडल 3131 के 5450 लोकमान्य नगर, रोटरी क्लब लेक्सिंगटन, मंडल 7620, मैरीलैंड, रोटरी क्लब डेनवर, मंडल 5450, कोलोराडो, और टीआरएफ के साथ, 53,488 की राशि एकत्र की गई है ताकि परियोजना 'गिफ्ट ऑफ मोबिलिटी' के अंतर्गत 372 एप्युटेस को घुटने के नीचे मॉड्यूलर कृत्रिम अंग उपलब्ध कराया जा सके।

रोटरी क्लब पुणे मगरपट्ठा शहर ने एक वर्ष पहले इस परियोजना को शुरू किया था। परियोजना के प्राथमिक संपर्क सूत्र हेमांग कुलकर्णी कहते हैं, ''हमने पहले एक ऑनलाइन अभियान शुरू किया था, जिसमें अंग विच्छेदन के मूल कारणों और इसे कैसे रोका जा सकता है, पर प्रकाश डाला गया था। आज अभियान 1,00,000 लोगों तक पहुंच चूका है।'' 2016 में, क्लब ने 23 एप्युटट लोगों के लिए एलएन 4 कृत्रिम हाथों को प्रायोजित किया, और अधिक शारीरिक रूप से विकलांग लोगों तक पहुंचने के लिए एक वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन भी किया है। अगस्त में टीआरएफ ट्रस्टी गैरी हुआंग द्वारा डीजी अभय गाडगील, डीआरएफसी दीपक शिकारपुर और रोटरी क्लब पुणे मेगरपट्ठा सिटी के अध्यक्ष सूर्यकांत चौधरी की उपस्थिति में अगस्त में इस परियोजना का शुभारंभ किया गया था।■

राजकोट में अंग दान के लिए ग्रीन कॉरिडोर

टीम रोटरी न्यूज़

अंगों के परिवहन के लिए ग्रीन कॉरिडोर में एक मॉक ड्रिल रचा गया।

रोटरी क्लब राजकोट,मंडल 3060, ने मुंबई और पुणे में अंगों के परिवहन के लिए दो ग्रीन कॉरिडोर का निर्माण सफलतापूर्वक किया है जो निकटतम चिकित्सा केन्द्र हैं जहाँ अंग का प्रत्यारोपण क़ानूनी रूप के लिए से किया जा सकता है। क्लब के सदस्य संदीप गांधी कहते है, कि ''हमने राजकोट से इन चिकित्सा केन्द्रों तक अंगों को पहुंचाया है और अब तक 22 सफल प्रत्यारोपण किया जा चुका हैं।''

क्लब, जीवदान फाउंडेशन के सहयोग से, विभिन्न मंचों और आयोजनों के माध्यम से अंग दान के लिए कार्य करता रहा है और अंग दान की प्रक्रिया मदद करते हुए शव रोगियों के परिवारों के समर्थन में सक्रिय रूप से शामिल रहा हैं।

राजकोट में वॉकहार्ट अस्पताल और स्टर्लिंग अस्पताल से दो कॉरिडोर का निर्माण किया गया था। मोक्क ड्रिल जिसमें 370 पुलिस कर्मियों को शामिल किया गया, को राजकोट हवाई अड्डे तक पहुंचने में क्रमश 5:22 मिनट और 5:16 मिनट का समय लगा। गांधी जी कहते हैं, ''यह कॉरिडोर विशेष रूप से हृदय के परिवहन के लिए बनाया गया है, क्योंकि हृदय प्रत्यारोपण महत्वपूर्ण और समयबद्ध तरीके से करना आवश्यक है।'' शहर के यातायात पुलिस ने इन कॉरिडोर को स्थापित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी कारण से एसीपी (ट्रैफिक) जे के ज़ाला कहते है कि ''रोटरी के साथ सहयोग करने में हमें बहुत खुशी होती है। दिन या रात हो, जब भी हमें 'एसओएस' मिलता हैं तो असाइन किए गए पुलिस कर्मचारी कॉरिडोर में अपने स्थान पर आ जाते है।''■

मंडल गति

रोटरी क्लब नागपट्टिनम विंग्स - मंडल 2981

नागपट्टिनम के वेलीपल्लयम सरकारी स्कूल में विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करके क्लब ने तमिलनाडू के पूर्व मुख्यमंत्री के. कामराज के जन्मदिवस, 15 जुलाई, का स्मरण किया।

रोटरी क्लब जलकंदपुरम - मंडल 2982

क्लब ने एक सरकारी स्कूल में रोटास्पोर्ट्स, विद्यार्थियों के लिए एक खेल प्रतियोगिता, का आयोजन किया। विजेताओं को पदकों एवं प्रशस्ति-पत्रों से पुरस्कृत किया गया। क्लब अध्यक्ष आर. के. जगनाथन कहते है, ''बच्चे इस वार्षिक आयोजन की बड़ी उत्सुकता से राह देखते है।''

रोटरी क्लब नासिक वेस्ट - मंडल 3030

रोटरी क्लब बेल्थान्गड़ी, मंडल 3181, के साथ क्लब ने बेल्थान्गड़ी के समीप तीन स्कूलों में ई-शिक्षण किट प्रदान किये। परियोजना की लागत रु 1.2 लाख थी। वोल्टेज में उतार-चढ़ाव की समस्या के समाधान के लिए किट सोलर बैटरियों से संचालित है।

रोटरी क्लब कोठापेटा - मंडल 3020

क्लब ने उसके सामुदायिक भवन में रोटरी के संस्थापक पॉल हैरिसन की एक प्रतिमा स्थापित की है। पूर्व अध्यक्ष डी. राजकुमार वुदायर, एक मूर्तिकार, ने प्रतिमा बनायी है। इस अवसर पर क्लब अध्यक्ष के. सुधाकर एवं पीडीजी डी. वरादारेड्डी मौजूद थे।

विधियाँ

रोटरी क्लब भुज फ्लेमिंगो - मंडल 3051

WinS परियोजना के अंतर्गत क्लब ने भुज के सरकारी नेत्रहीन विद्यालय में मंडल अनुदान के निधीकरण से हाथों की धुलाई के स्टेशनों की स्थापना की।

रोटरी क्लब सूरत राउंडटाउन - मंडल 3060

दक्षिण गुजरात के पल्सर जिले के एक पिछड़े क्षेत्र दौंग में, लेखन सामग्रियों के अवाला, रोटेरियनों ने 6,000 किताबें एवं 500 बरसातियाँ बांटी। परियोजना की कुल लागत रु 2 लाख थी।

रोटरी क्लब राजपुरा ग्रेटर - मंडल 3090

क्लब ने सईदखेड़ी गाँव के सरकारी उच्च विद्यालय में एक पौधारोपण शिविर आयोजित किया और विभिन्न प्रजातियों के 250 पौधे रौंपे।

रोटरी क्लब आगरा वेस्ट - मंडल 3110

जर्मन क्लेफ्ट चिल्ड्रन ऐड सोसाइटी का तीन सदस्यीय प्रतिनिधि दल, जिसने जय देवी अस्पताल का दौरा किया, ने रु 16 लाख कीमत की एक बेहोश करने की मशीन दान दी ताकि चेहरे की विकृतियों वाले बच्चों के होठों एवं तालू की सर्जरियाँ की जा सकें। क्लब जरूरतमंद बच्चों को ढूंढकर उनकी अस्पताल में सर्जरी करवाने में मदद करता है।

रोटरी क्लब देओबंद - मंडल 3080

हैप्पी स्कूल परियोजना के हिस्से के रूप में क्लब ने दो सरकारी स्कूलों में लड़के-लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालयों का निर्माण किया। स्वच्छता परियोजना से लगभग 500 लड़के एवं लड़कियों को फायदा होगा।

मंडल गति

रोटरी क्लब लखनऊ बरादरी - मंडल 3120

क्लब सदस्यों ने लखनऊ के एक झुग्गी के घर में स्थित मार्टिन-का-पूर्व स्कूल को गोद लिया है। उन्होंने बच्चों को लेखन सामग्रियाँ और किताबें बांटी ताकि उन्हें कक्षाओं में नियमित रूप से आने के लिए प्रेरित किया जा सकें।

रोटरी क्लब धोने- मंडल 3160

शहर में एक फ्लाईओवर के नीचे एक रोटरी गार्डन का उद्घाटन किया गया। क्लब ने शहर को हरा भरा रकने और सुन्दर बनाने के लिए इस परियोजना को अंजाम दिया। डी जी श्रीरामा मूर्ति और नगरपालिका की अध्यक्ष गायत्री देवी उद्घाटन में मौजूद थे। उद्यान की कीमत रु1.60 लाख है।

रोटरी क्लब मूदबिदरी - मंडल 3181

विशेषाधिकार के इसके 50वें वर्ष को याद करने के लिए, क्लब ने शहर भर में एक स्वच्छता मुहिम चलाई। अनेट्स ने अनेक मोहल्लों में अत्यधिक जोश के साथ पौधे रौंपे।

रोटरी क्लब बैंगलोर विजयनगर - मंडल 3190

शहर के एक अनाथालय में रह रहे 100 बच्चों के लिए रोटेरियनों ने एक पिकनिक का आयोजन किया। बच्चों ने मेट्रो ट्रेन की सवारी का मज़ा लिया और बेंगलुरु के प्रतिष्ठित स्थानों का दौरा किया। उन्हें खाना, खेल एवं एक जादू का खेल पेश किया गया।

रोटरी क्लब धारवाड़ सेंट्रल - मंडल 3170

क्लब ने कर्नाटक विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में एक रोटरी मैगज़ीन सेल स्थापित की है जहाँ रोटरी संबंधित सामग्रियाँ जिनमें *रोटरी समाचार* शामिल है रखे जायेंगे। एआरपीआईसी गणेश भाट ने कहा, विश्वविद्यालय के लगभग 25,000 विद्यार्थी अब रोटरी के कार्यक्रमों एवं परियोजनाओं के बारे में जान पाएंगे।

विधियाँ

रोटरी क्लब तिरुपुर गांधीनगर - मंडल 3202

इसकी हैप्पी स्कूल परियोजना के हिस्से के रूप में, क्लब ने विद्यार्थियों को लेखन सामग्रियाँ एवं तिरुपुर के समीप स्थित दो सरकारी स्कूलों को रु 1.6 लाख की लागत की कक्षाओं की अन्य आधारभूत सुविधाएं दान दी।

रोटरी क्लब गया सिटी - मंडल 3250

क्लब ने इसके गोद लिए गाँव, गया जिले के आजादबीघा में ऐसे लोगों को 12 सोलर किट बांटी जो बिजली का कनेक्शन नहीं लगवा सकते। प्रत्येक किट में एक रिचार्जेबल बैटरी, सोलर रिचार्ज इकाई, तीन सीएफएल बल्ब और एक पंखा शामिल है। इस अवसर पर डीजी विवेक कुमार उपस्थित थे।

रोटरी क्लब बेरहामपुर - मंडल 3262

क्लब ने शहर के एक व्यस्त इलाके में रु 1.75 लाख की लागत से एक बस आश्रय खड़ा किया। नियमित आने-जाने वाले लोगों को झुलसा देने वाली गर्मी से राहत पहुँचाने के अलावा, यह सुविधा रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि करने में भी मदद करेगी।

रोटरी क्लब क़स्बा - मंडल 3291

उसकी साक्षरता एवं WinS परियोजनाओं के हिस्से के रूप में, क्लब ने दो स्कूलों में एक कंप्यूटर एवं अंग्रेजी भाषा की कक्षा शुरू की और क़स्बा में एक अन्य प्राथमिक स्कूल के शौचालयों की मरम्मत की।

रोटरी क्लब धुलिखेल - मंडल 3292

विद्यार्थियों की कंप्यूटर शिक्षा में मदद के लिए, क्लब ने दो स्कूलों- श्री पंचकन्या स्कूल और श्री सरस्वती माध्यमिक स्कूल - को कुर्सी एवं मेज़, प्रोजेक्टर एवं प्रिंटर सहित 20 कंप्यूटर प्रदान किये।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित

एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

Membership Summary

As on August 1, 2017

RI Zone	RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract	Interact	RCC
5	2981	110	4,355	186	56	223	172
5	2982	65	2,764	76	58	109	43
5	3000	127	5,156	413	287	627	194
4	3011	73	3,114	593	46	102	28
4	3012	86	3,564	764	66	123	55
5	3020	102	4,385	215	110	460	351
4	3030	93	4,969	600	74	285	164
4	3040	95	2,156	233	52	109	135
4	3053	76	2,947	463	16	36	93
4	3054**	126	5,914	930	88	290	471
4	3060	97	3,907	372	59	114	129
4	3070	106	2,976	235	64	151	54
4	3080	77	3,309	212	65	213	106
4	3090	77	2,043	80	32	36	122
4	3100*	71	1,607	60	10	71	146
6	3110	113	3,854	239	51	49	104
6	3120	74	2,954	261	36	50	50
4	3131	133	5,179	967	90	265	74
4	3132	110	4,392	474	61	183	137
4	3141**	91	5,230	1,057	111	241	86
4	3142**	77	2,739	377	61	182	69
5	3150	100	3,626	347	92	227	108
5	3160	69	2,336	103	21	44	81
5	3170	128	5,374	363	54	295	160
5	3181	72	3,056	202	29	168	104
5	3182	79	3,164	229	27	265	92
5	3190	132	5,118	562	135	337	48
5	3201	139	5,168	292	92	123	46
5	3202	131	4,843	228	97	425	44
5	3211	136	4,283	247	11	85	123
5	3212	95	3,741	181	108	261	126
5	3231**	67	2,567	82	53	175	235
5	3232**	95	3,737	465	121	287	82
6	3240	87	2,965	331	59	145	146
6	3250	95	3,658	653	38	198	176
6	3261	70	2,389	206	16	101	42
6	3262	97	3,327	373	42	73	75
6	3291	150	3,839	732	66	129	580
India Total		**3,721**	**1,40,705**	**14,403**	**2,554**	**7,257**	**5,051**
5	3220	72	1,912	238	80	192	77
6	3271	77	1,443	230	44	16	13
6	3272	152	2,765	424	37	36	36
6	3281	202	5,704	771	227	84	186
6	3282	136	3,804	294	133	36	40
6	3292	116	4,397	663	119	106	106
S Asia Total		**4,476**	**1,60,730**	**17,023**	**3,194**	**7,727**	**5,509**

**Non-districted　　**Newly formed districts from mergers/bifurcations.　　Source: RI South Asia Office*

Now you can reach

Rotary News

on the mobile number

+91 98400 78074

Change of Address, or any subscription issues? SMS or WhatsApp to this number.

Made electronic transfer of subscription dues? Please communicate to us on this number.

Rotary at a glance

Rotarians : 12,13,516

Clubs : 35,699

Districts : 539

Rotaractors : 2,41,845*

Clubs : 10,515*

Interactors : 5,02,366*

Clubs : 21,842*

RCC members: 2,23,606*

RCC : 9,722*

* As on August 1, 2017

जीवन को बचाने के लिए मदद करना

के टी पी राधिका

रक्त की कमी को पूरा करने,और रक्त दान को बढ़ावा देने के लिए, मंडल 3030 ने जुलाई के प्रथम सप्ताह में, संपूर्ण मंडल में विशाल रक्तदान शिविरों का आयोजन किया। रोटरियनों और उनके परिवार के सदस्यों, रोट्रैक्टर्स और आम जनता ने इन शिविरों में भाग लिया, जिसके कारण 1,000 से अधिक यूनिट रक्त प्राप्त करने में मदद मिली।

मंडल गवर्नर के एस राजन ने कहा कि, ''इन सभी शिविरों का आयोजन अखिल भारतीय स्तर के रक्त दान कार्यक्रम का एक भाग के रूप में किया गया था, जो हमारे आरआई निदेशक की एक महत्वाकांक्षी परियोजना का हिस्सा है।'' मंडल के सभी 96 क्लबों ने परियोजना में भाग लिया।

रो ई निदेशक सी भास्कर नागपुर में एक शिविर में रक्त दाताओं को एक प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रस्तुत करते हुए।

नागपुर में इस परियोजना का उद्घाटन करते हुए आरआई के निदेशक सी बास्कर ने कहा, ''रक्त दान देश की प्रमुख जरूरतों में से एक है।हम रोटरियनों को इस बहुमूल्य कार्य के लिए रोल मॉडल के रूप में अपनी सेवा देनी चाहिए और अपने आस-पास के लोगों को भी रक्त दान करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।''

क्लबों ने सार्वजनिक जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया और विभिन्न क्षेत्रों में ब्लड बैंकों और भारतीय चिकित्सा संघ के साथ सहयोग करते हुए रक्त एकत्र किया। राजन ने कहा, ''हमने ब्लड बैंकों से अपील की है कि वे आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत रक्त जमा करें।'' ग्रामीण क्षेत्रों में भंडारण अभी भी एक समस्या है। मंडल उन स्थानों पर रक्त भंडारण सुविधाओं की व्यवस्था करने के लिए वैश्विक अनुदान की योजना बना रही है।

अन्य स्वास्थ्य देखभाल पहल

इस वर्ष, मंडल, जीओआई और डब्ल्यूएचओ के साथ मिलकर 'क्षय रोग मुक्त भारत' अभियान पर काम कर रहा है। ''हम रोटरी के पोलियो उन्मूलन अभियान के समान मॉडल के अनुसार कार्य करेंगे,'' राजन ने कहा कि जिन्होंने मंडल में अनेक पोलियो प्लस परियोजनाओं के लिए भी काम किया है। ''भारत में, टीबी के कारण हर मिनट एक व्यक्ति की मौत हो रही है। पोलियो के विपरीत, वर्तमान समय में इस रोग के लिए कोई भी टीका उपलब्ध नहीं है। इलाज भी एक कठिन प्रक्रिया है इसलिए, हमें रोकथाम पर ध्यान देना चाहिए और यह कार्य जागरूकता पैदा करके ही किया जा सकता है।'' ■

नया आईएफआरपी प्रमुख

टीम रोटरी न्यूज़

जतिन शरद पटेल (47), रोटरी क्लब बम्बे नार्थ वेस्ट-मलाड, मंडल 3141 के एक रोटरियन है, वर्तमान समय में इंटरनेशनल फेल्लोशिप ऑफ़ रोटरियन फोटोग्राफर्स (आईएफआरपी) अध्यक्ष है जिसके 390 सदस्य है। बोर्ड के अन्य सदस्यों में उपाध्यक्ष टी सरवनराज और कोषाध्यक्ष मधुमिता बिष्णु भी शामिल है- और दोनों भारतीय रहने वाले है।

गुजरात के श्रवण-बधिर स्कूल की एक कक्षा की तस्वीर को *द रोटरियन* द्वारा आयोजित तस्वीर प्रतियोगियता में विजेता घोषित किया गया और उसे पत्रिका में भी प्रकाशित किया गया

आईएफआरपी प्रमुख जतिन शरद पटेल

समान विचारधारा वाले लोगों को एक साथ जोड़ने के उद्देश्य से, वे प्रतियोगिता, कार्यशाला, व्याख्यान और प्रदर्शनी आयोजित करने की योजना बना रहे है।

वे अमेरिकन स्प्रिंग एंड प्रेसिंग वर्क्स, मुंबई के तकनीकी निदेशक है। पांच वर्ष पहले फोटोग्राफी के शौक विकसित होने के बाद, उन्होंने कार्यशालाओं में भाग लिया और नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, मगुजरात से 'नेचर एंड विल्फलाइफ फोटोग्राफी' में एक लघु -अवधि का पाठ्यक्रम किया। ■

महिलाएं क्या चाहती है

शीला नंबीयार

मनोविश्लेषण के पिता के नाम से प्रसिद्द, 18वीं सदी के ऑस्ट्रियाई न्यूरोलॉजिस्ट सिगमंड फ्रायड ने सुविदित रूप से यह सवाल पूछा था, महिलाएं क्या चाहती है? उनके पास कोई जवाब नहीं था। उनके पास केवल अनुमान थे।

सरल शब्दों में - महिलाएं चाहती है - खाना, कहना, प्यार

खाना

महिलाएं कुछ भी खाना चाहती है और वज़न नहीं बढ़ने देना चाहती!

अनंतकाल से, सुन्दरता प्राथमिकता रही है। आज हमारे पास नवीनतम प्रचलित आहार, तंदुरुस्त रहने की सनक और सौन्दर्य प्रसाधन है जो बेमिसाल सुन्दरता प्रदान करने का वादा करते है। हममें से अधिकतर अतिसंवेदनशील है जो शानदार काया से लेकर अनंत यौवन तक सब कुछ देने की गारंटी देते है।

हालाँकि खाना केवल 'भौतिक' चीज़ की तरह प्रतीत हो सकता है, पर भोजन हमेशा शारीरिक भूख से जुड़ा नहीं होता। भावनात्मक भूख जैसी भी कोई चीज़ होती है।

कई महिलाएं भोजन में तसल्ली ढूंढती है ताकि उस भावनात्मक भूख को शांत किया जा सके जिसका सामना करना उन्हें काफी हद तक नहीं आता है। *ऐसा लगता है कि सभी चीज़ों के लिए हमारे जवाब फ्रिज में है।* हम भोजन में शरण लेते है, और बिना आश्चर्य के; बचपन में हमें सिखाया जाता है कि हमारे आसपास मौजूद लगभग हर कीमती चीज़ भोजन से करीब से जुड़ी है: हमें अच्छा बनने के लिए भोजन का लालच या सजा के तौर पर हमें हमारे पसंदीदा भोजन से दूर कर दिया जाता है।

शारीरिक भूख को संतुष्ट करने के अलावा, खाना भावनाओं के साथ पेचीदगी से गुंथा हुआ है। यह आसानी से उपलब्ध है (शराब और नशीली चीज़ों के विपरीत), सामाजिक रूप से स्वीकार्य और अच्छे से खाना (अधिक पढ़िए) भी आम बात ही लगती है।

हालाँकि खाने का बड़ा भावनात्मक संबंध है, फिर भी यह अकेलेपन, अवसाद, चिंता और तनाव की समस्याओं को नहीं सुलझा सकता। असल में यह उन्हें मिश्रित कर सकता है।

परन्तु हम जो चाहे वह नहीं खा सकते (जितनी चाहे उतनी मात्रा में नहीं खा सकते) और वजन बढ़ना नहीं रोक सकते! यह वैज्ञानिक रूप से संभव नहीं है। ऊर्जा संतुलन समीकरण ऐसा नहीं होने देता है।

हालाँकि, हम व्यायाम और गतिविधियों द्वारा अनुकूलतम खर्च कर अपने सेवन को संतुलित कर सकते है। अत्यधिक खाने से पहले समझदारी से काम लें और छोटे टुकड़ों को खाए। खाने को सही जगह दे और सबसे महत्वपूर्ण, उसे ग्रहण करने वाले हमारे शरीर का सम्मान करें। हम जो भी खाते है उसके प्रति सचेत रहना चाहिए एवं तनाव, जिन्हें गलती से शारीरिक भूख का संकेत समझा जा सकता है, के विपरीत हमारे शरीर द्वारा दिए जाने वाले भूख और संतृप्ति के संकेतों को सुनना चाहिए।

और फिर हम 'कहना' चाहती है

महिलाएं जो विश्वास करती है, सोचती है और महसूस करती है उसे कहना चाहती है और सबसे महत्वपूर्ण, वे चाहती है कि उन्हें सुना जाए।

क्यों महिलाओं को अलग रखा जाता है, बल्कि 'अधिक बात करने' को लेकर उनका मजाक उड़ाया जाता है? क्या हमारे पास कहने के लिए कुछ महत्वपूर्ण नहीं होता है?

हमें पैदा होने से पहले ही क्यों मार दिया जाता है? क्यों कन्या भ्रूण हत्या की दर अब भी इतनी ऊँची है? क्या हम महत्वपूर्ण नहीं है?

क्या इस दुनिया में हमनें बहुमूल्य योगदान नहीं दिया है?

बेशक, हमनें दिया है!

भारतीय साहित्यों ने महिलाओं को सम्माननीय दर्जा दिया है। औरत को *शक्ति* का स्वरुप समझा जाता है, और सद्गुण, *बुद्धि, त्याग* और *करुणा* उसके स्वभाव में है। दूसरों की देखभाल एवं उनका पालन-पोषण करने की उनकी क्षमताओं के कारण अधिकांश महिलाओं को पूजा जाता है।

तो फिर क्यों हमारे देश में जहाँ कथित रूप से स्त्री स्वरुप को पूजते है, महिलाओं को अपमानित किया जाता है? क्यों घरेलु हिंसा, कन्या भ्रूण हत्या और बलात्कार की दरें इतनी ऊँची है? क्यों अक्सर महिलाएं अपने विचार या भावनाओं को प्रकट करने में हिचकिचाती है?

इसका बहुत बड़ा कारण सामाजिक परिस्थितियाँ है। प्रतिबंधों में रहने के लिए बाध्य किया जाता है और जिसे स्त्रीत्व समझा जाता है उससे संयमित किया जाता है।

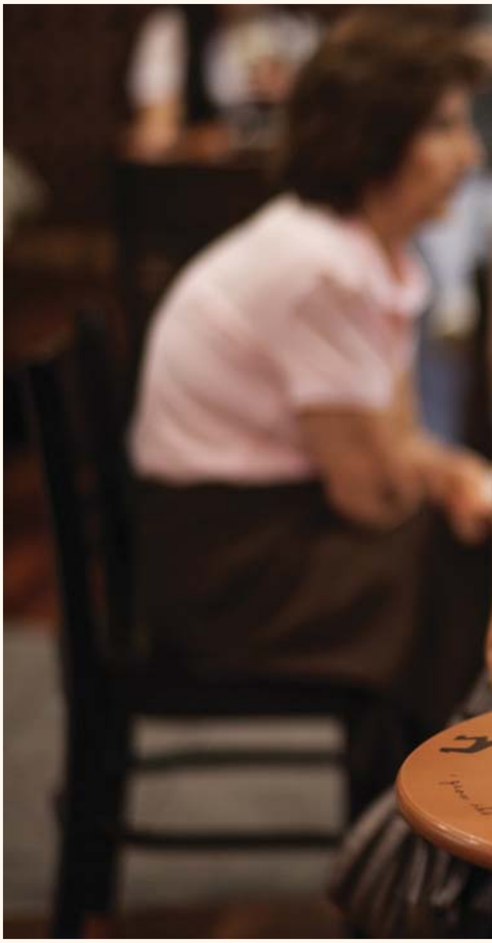

एक औरत, जो खुलकर अपने विचार रखती है या कोई प्रचलित मान्यता का विरोध करती है, को अस्त्रियोचित या अत्यंत आक्रामक समझा जाता है। अक्सर, हम यह देखते है कि एक महिला ही दूसरी महिला को दबाती है, उसे चुप करती है।

हर महिला के पास कहने के लिए एक कहानी होती है। एक कहानी जो उसकी अकेले की होती है। उसे उस कहानी के साथ काम करने के काबिल होना चाहिए ताकि वह उसकी तमन्नाओं की ज़िंदगी की रचना कर सकें। इसके कोई मायने नहीं है कि उसे जो कहना है वह चिंताजनक है या विरोधात्मक है या कष्टदायक है। यदि उसकी एक गुप्त ज़िंदगी है जिसे वह साझा करना चाहती है, या एक शर्मनाक अनुभव जिसे वह पीछे छोड़ना चाहती है, वह जो कहना चाहती है उसे कहने के काबिल उसे होना चाहिए और उसे सम्मानपूर्वक सुना जाना चाहिए।

वह जो कहती है उसके परिणाम हो सकते है, जो जरूरी नहीं हमेशा सुखद ही हो। लेकिन, यदि एक औरत किसी चीज़ में विश्वास करती है, तो उसे अभिव्यक्त करने की काबिलियत ही अपने आप में सशक्त बनाने योग्य होती है।

कहने का अर्थ है जहाँ जरूरत हो वहाँ मुझे ''क्षमा करें'' कहने के काबिल होना; ''मैं आपकी सराहना करती हूँ, धन्यवाद'' या ''मुझे तुमसे प्यार है कहना।'' अपने विचारों को रख पाने के लिए आवश्यक है ें। एक औरत को दूसरी औरत का एवं उसकी कहने की, सुने जाने की और वास्तव में सुनने की इच्छा का समर्थन करना चाहिए।

और फिर प्यार है

महिलाएं चाहती है कि उन्हें प्यार किया जाए; वे प्यार किये जाने एवं चाहने के प्रभाव में फलती-फूलती है। यह एक स्वाभाविक आवश्यकता है। कई मनोविज्ञानी तो यह तक भी कहते है कि पुरुषों से ज्यादा महिलाओं को प्यार की अधिक जरूरत होती है।

गृहिणी एवं पालन-पोषण करने वाली का उसका पारंपरिक किरदार उसे इस मनोभाव की तरफ अधिक झुकने के लिए सहज रूप से प्रेरित करता है।

लेकिन यह पुरानी सोच जो महिलाओं को गृहिणी और पुरुषों को कमानेवाले के रूप में चित्रित करती है, कुछ वर्षों में परिवर्तित हुई है। एक औरत भावनात्मक सुरक्षा से कुछ अधिक चाहती है। वह कार्यक्षेत्र में उसके योगदान के लिए पहचाने जाना चाहती है।

और रूढ़िवादी पृष्ठभूमि से ऐसी महिलाएं भी है जिन्हें घर पर गृहिणी और कार्यालय में एक पेशेवर की भूमिका को एक साथ संभालना पड़ता है। मैं ऐसी महिलाओं को जानती हूँ जिन्हें उनके काम के लिए उनकी शादी की बलि देनी पड़ी। यह वास्तव में एक बहुत कठिन चुनाव है। मैं ऐसी महिलाओं को भी जानती हूँ जिन्हें उनके परिवार के खातिर काम को छोड़ना पड़ा। यह भी एक कठिन चुनाव है। मैं ऐसी महिलाओं को जानती हूँ जो दोनों तरीको में जीतना जानती है। वे सभी आगे बढ़ने का रास्ता खोजने की कोशिश कर रही है।

प्यार और समर्थन निश्चित ही एक महिला के प्रयासों को आगे ले जाएंगे। इन महिलाओं में से एक आपकी बहन, माँ या दोस्त हो सकती है। उसे प्यार करना हमेशा आसान नहीं हो सकता, लेकिन निश्चित ही यह उन्हें सशक्त बनाएगा जैसा और कोई नहीं बना सकता।

आज महिलाओं के लिए पूरा जीवन का अनुभव चुनौतीपूर्ण है। ऐसा विशेषरूप से तब होता है जब उन्हें उनके आसपास के लोगों का समर्थन नहीं मिलता है। आख़िरकार प्यार निश्चित तौर पर पहिये को घुमाता है। पैसा, शोहरत, ताकत और सफलता केवल सजावट है, जिनका कोई मोल नहीं है यदि इन्हें प्यार से विभूषित ना किया जाए।

बदले में, हमें प्यार करने की भी आवश्यकता है। हमें ऐसे तरीके से प्यार करने की जरूरत है जो बदले में प्यार किये जाने को आसान बनाएं। हम जिनसे प्यार करते है उस पर ''अपेक्षाएं'' एवं दबाव डालते है। हम प्यार की खातिर प्यार कर सकें और बदले में, प्यार पा सकें।

एक महिला को मुख्य रूप से स्वयं से प्यार करना चाहिए और बाकि सब कुछ समझ में आ जायेगा।

लेखक, एक प्रसूति-विज्ञानी और स्त्रीरोग-विशेषज्ञ, एक तंदरुस्ती एवं जीवनशैली सलाहकार है, और इन्होंने दो किताबें: गेट साइज़ वाइज; गेन टू लूज़ प्रकाशित की है।

www.drsheela.nambiar.com

अच्छा करने के लिए इकट्ठा होना

के. टी पी. राधिका

कैसे क्राउडफंडिंग (जन सहयोग द्वारा दान के लिए धन संचयन) भारत में परोपकार एवं सेवा को बदल रहा है।

कुछ वर्ष पहले, चेन्नई के फैशन टेक्नोलॉजी के एक छात्र अमित ओंकार के साथ एक भयानक दुर्घटना घटी। जब वह सक पार कर रहा था तो उसे एक ट्रक ने टक्कर मार दी, जिससे उसके मस्तिष्क में गंभीर रक्तस्राव होने लगा। उसे शीघ्र ही बेंगलुरु के कोलंबिया एशिया अस्पताल लाया गया जहाँ डॉक्टरों ने उसके परिचितों से कहा कि यदि एक आपातकालीन सर्जरी नहीं की गयी, जिसका खर्च रु 20 लाख आयेगा, तो उसके बचने की संभावना कम है।

अमित के मध्यमवर्गीय परिवार के पास इतनी बी राशि नहीं थी। तब ही अमित के करीबी मित्र एल्बिन जोस को क्राउडफंडिंग के माध्यम से पैसा इकठ्ठा करने का विचार आया। एल्बिन ने तुरंत ही एक क्राउडफंडिंग पोर्टल केट्टो' पर अमित की गंभीर अवस्था का वर्णन करते हुए एक अभियान चलाया। ''कुछ ही दिनों के अंदर, अभियान को 800 दानकर्ताओं का समर्थन मिला और उससे करीब रु 10 लाख इकठ्ठा हुए।'' एक संतुष्टि की मुस्कुराहट के साथ एल्बिन कहता है, ऐसा होता है जब भी कुछ अच्छा करने के लिए इकठ्ठा होती है।

एल्बिन अकेला नहीं है। बहुत से व्यक्ति एवं गैर सरकारी संगठन पैसा इकठ्ठा करने के लिए अब क्राउडफंडिंग का रास्ता अपना रहे है, सुविधाओं से वंचित बच्चों की शिक्षा, नारी सशक्तिकरण या सामुदायिक विकास परियोजनाओं के लिए। एक दिल्ली स्थित क्राउडफंडिंग मंच बिटगिविंग' की सीईओ इशिता आनंद कहती है, ''एक विचार के रूप में, क्राउडफंडिंग को भारत में पिछले दो वर्षों से स्वीकृति मिलना शुरू हो गयी है। और इसने परोपकार के क्षेत्र में एक नयी लहर को जन्म दिया है।''

नए ज़माने का अनुदान संचय

कुछ अधिक संपत्ति वाले लोगों (एचएनआई) के विशाल योगदान या किसी संस्था के एक बे अनुदान पर निर्भर रहने के बजाय क्राउडफंडिंग में पैसा, आम जनता द्वारा दी गयी छोटी राशियों के माध्यम से आता है। वास्तव में, यह विचार नया नहीं है; पुराने समय में लोग गाँवों एवं कस्बों में एक दूसरे की मदद करने के लिए इकठ्ठा होकर पैसा जमा करते थे। ऑनलाइन मंचों, के आगमन के कारण क्राउडफंडिंग के विचार में एक क्रांति देखने को मिल रही है।

अब ऑनलाइन मंच दान देने वाले एवं प्राप्तकर्ता के मध्य एक मध्यस्थ की भूमिका निभाता है। इशिता कहती है, ''केवल अधिक संपत्ति वालों में ही नहीं बल्कि वहाँ लोगों में अत्यधिक सामर्थ्य है जो रु 100 से लेकर रु 10,000 तक का योगदान देते है।'' सामाजिक कल्याण हेतु वर्तमान में भारत में एक दर्जन से अधिक क्राउडफंडिंग मंच मौजूद है जैसे मिलाप, केट्टो, फण्डड्रीम्सइंडिया, बिटगिविंग, लेट्ज़चेंज के सीईओ एवं निदेशक राहुल चोव्वा कहते है, ''खूबसूरती यह है कि केवल अपने घर या दफ्तर में बैठकर, और अपने सामाजिक मीडिया सम्पर्को की मदद से, आप बी राशि इकठ्ठा कर सकते है।''

क्राउडफंडिंग अनुसंधान संस्था माससॉल्यूशन' के अनुसार, विश्व भर में यह उद्योग वर्ष 2013 में 6.1 बिलियन डॉलर से बकर वर्ष 2015 में 34 बिलियन डॉलर का हो गया है। इसमें से, एक बा हिस्सा परोपकारिक निधीकरण के लिए जाता है। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट कहती है कि वर्ष 2025 तक यह उद्योग 93 बिलियन डॉलर का हो जायेगा। बाज़ार विशेषज्ञ कहते है कि भारत में क्राउडफंडिंग

(साल दर साल) 100 प्रतिशत से अधिक की बोत्तरी कर रही है। चैरिटी ऐड फाउंडेशन' (सीएएफ) भारत की रिपोर्ट कहती है कि दो वर्षों के अंदर देश भर का 20 प्रतिशत दान ऑनलाइन होगा और 10 वर्षों में 50 प्रतिशत।

चोव्वा कहते है, ''परोपकार के लिए क्राउडफंडिंग पश्चिमी देशों में बहुत आम है। हालाँकि, यह विचार भारत में अभी-अभी उभर रहा है। विमुद्रीकरण के बाद एवं सरकार की डिजिटल इंडिया पहलों के कारण, डिजिटल भुगतान मंचों में भारी वृद्धि देखी गयी है। इसकी झलक परोपकारी संगठनों के ऑनलाइन अनुदानों में भी दिख रही है।''

युवा दानकर्ता

आज, क्राउडफंडिंग दानकर्ताओं में अधिकांश लोग युवा है। इशिता कहती है, ''ऑनलाइन क्राउडफंडिंग मंच युवा पीढ़ी को परोपकार के लिए आकर्षित कर रहे है। हमारे दानकर्ताओं में से लगभग 90 प्रतिशत 20-35 वर्ष की आयु के है। यहाँ अनुदानों पर नज़र रखना आसान है एवं प्रक्रिया है। आमतौर पर हमारे दानकर्ता विशेष परियोजनाओं को ढूँढते है और दान देते है। पारदर्शी निधीकरण व्यवस्था दानकर्ताओं को उनके पैसे के विषय में विश्वसनीयता एवं जानकारी दोनों प्रदान करती है।''

परोपकार के लिए केवल 12%

इसके बावजूद भी कि भारतीय उदार होते है, हमारे दान धार्मिक प्रयोजनों के लिए अधिक होते है। सीएएफ की रिपोर्ट के अनुसार, 84 प्रतिशत भारतीय, उनके समाजिक स्तर की परवाह किये बिना, दान देते है, परन्तु 72 प्रतिशत दान धार्मिक निधीकारण के लिए जाता है और बाकि परोपकार के लिए। चोव्वा कहते है, ''ऐसा इसलिए क्योंकि हम धार्मिक स्थानों पर दान देने के लिए सांस्कृतिक रूप से प्रतिबद्ध है लेकिन परोपकार के लिए नहीं।''

क्राउडफंडिंग के चरण

- अपनी कहानी बनाइये। क्राउडफंडिंग में कहानियाँ ही सब कुछ है।
- अपना आलेख लिखिए। तस्वीरें एवं वीडियो और भी आकर्षित करेंगे।
- इसे एक क्राउडफंडिंग मंच पर प्रस्तुत कीजिये।
- फेसबुक, ट्विटर, इत्यादि जैसे सामाजिक मीडिया पर इसे फैलाइए।
- अपने करीबी दोस्तों एवं रिश्तेदारों को शामिल करके प्रारंभिक दानकर्ता ढूंढिए।
- अपने आंकों को तैयार कीजिये।
- जन संपर्क करके लोगों तक पहुँचिये।
- जमा कीजिये।

दिल्ली के एक केंद्रीय सरकारी कर्मचारी 53-वर्षीय मुकेश वर्मा सहमत होते है। वर्मा पिछले 30 वर्षो से नियमित परोपकारी दानकर्ता है। वर्मा कहते है, ''मैं निजामुद्दीन के आस-पास के कुछ गैर सरकारी संगठनों में दान दिया करता था, जो पिछे वर्ग के बच्चों के उद्धार के लिए कार्य करते थे, नकद या चेक के माध्यम से। कुछ वर्ष पहले, एक बंद हो गया और उनमें से कुछ ने अपने दफ्तर बदल लिए्। उसके बाद कुछ दलाल पैसा लेने के लिए आना शुरू हो गए्। मैं दलालों को पैसा देने से संतुष्ट नहीं था।''

वर्मा के बेटे, जो अनेक क्राउडफंडिंग अभियानों से सम्बद्ध है, ने उन्हें परोपकार के इस ऑनलाइन माध्यम से परिचित करवाया। वर्मा कहते है, ''इस फरवरी, मैंने क्राउडफंडिंग मंच पर बाल विकास के एक अभियान के लिए दान दिया। हालाँकि मुझे अच्छे से कंप्यूटर चलाना नहीं आता, फिर भी प्रक्रिया पारदर्शी, सरल एवं समय की बचत करने वाली है। और आपको वहीं के वहीं रसीद मिल जाती है।''

वर्मा जैसे लोग ही नहीं, बल्कि गैर सरकारी संगठन भी अब परोपकार के इस ऑनलाइन रास्ते पर चल रहे है। चोव्वा कहते है, ''यह गैर सरकारी संगठनों के जीवित रहने के लिए अत्यावश्यक है।'' इसी बात को दोहराते हुए, केट्टो के संस्थापक वरुण सेठ कहते है, ''हमनें वर्ष 2012 में मुट्ठी भर गैर सरकारी संगठनों के साथ शुरुआत की थी। अब हमारे साथ 5,000 से अधिक गैर सरकारी संगठन है। भी द्वारा दान के रूप में दी गयी सकारात्मक प्रतिक्रिया के कारण और भी कई गैर सरकारी संगठन क्राउडफंडिंग का रास्ता अपना रहे है।''

विश्वास ही कुंजी है

उपलब्धियों के बावजूद, ऑनलाइन क्राउडफंडिंग आसान नहीं है, क्योंकि भरोसा प्रमुख है। सेठ कहते है, ''चूंकि यह एक आभासी विचार है, लोगों को भरोसा दिलाना पता है।'' ऐसा बहु-सोपानों वाली सत्यापन प्रक्रियाओं के माध्यम से किया जाता है। और यह सुनिश्चित करके की अभियान वास्तविक एवं विश्वसनीय हो। एल्बिन कहता है, ''यहाँ सामग्री ही महत्वपूर्ण है। और इसी के कारण हमें इतने सारे लोगों का समर्थन प्राप्त हुआ। उन सभी को धन्यवाद जिन्होंने योगदान दिया, अब अमित खतरे से बाहर है।'' ■

संक्षेप में

सांकेतिक भाषा में राष्ट्रीय गान

भारतीय सरकार ने सांकेतिक -भाषा में राष्ट्रीय गान का 3.35 मिनट का वीडियो पेश किया है। फिल्म निर्माता गोविंद निहलानी द्वारा निर्देशित, वीडियो में फिल्म स्टार अमिताभ बच्चन लाल किले की पृष्ठभूमि में अलग-अलग बच्चों के साथ सांकेतिक भाषा में राष्ट्र गान गाते हुए दिखाई देते है। दिल्ली के अतिरिक्त, वीडियो को गोवा, भोपाल, चंडीगढ.और कोल्हापुर में भी पेश किया गया था।

'बिजली'-विहीन विद्यालय

देश के केवल 62.81 प्रतिशत विद्यालयों में बिजली की सुविधा उपलब्ध हैं। 19 प्रतिशत विद्यालयों में बिजली की सुविधा के साथ झारखंड इस सूची में सबसे निचले पायदान पर है, जबकि दिल्ली, चंडीगढ, दादर और नगर हवेली, दमन और दीव, लक्षद्वीप और पुडुचेरी अपने सभी विद्यालयों में बिजली की सुविधा प्रदान करते हुए इस सूची में शीर्ष पर है। असम के 25 प्रतिशत विद्यालयों में बिजली का कनेक्शन हैं जबकि मेघालय में 28.5 प्रतिशत विद्यालयों में बिजली की सुविधा उपलब्ध हैं। इस सूची में बिहार (37.78), मध्य प्रदेश (28.8), मणिपुर (39.27), ओड़िशा (33.03) और त्रिपुरा (29.77) शामिल हैं।

सौर-उर्जा चालित ट्रेन

भारतीय रेलवे ने दिल्ली में सफदरजंग रेलवे स्टेशन से एक सौर-ऊर्जा चालित डीईएमयू (डीजल इलेक्ट्रिकल मल्टीपल यूनिट) ट्रेन शुरू किया है। यह ट्रेन दिल्ली में सराय रोहिल्ला और हरियाणा के फरुख नगर के बीच चलती है। इस ट्रेन के छह कोच में कुल 16 सौर पैनल फिट किया गया है, जिसमें से प्रत्येक 300 डब्ल्यूपी उत्पादन विद्युत का उत्पादन करने में सक्षम हैं। ट्रेन में एक पॉवर बैक-अप भी है और यह कम से कम 72 घंटे तक बैटरी पर चल सकती है। वर्तमान समय में गैर-एसी कोचों पर स्थापित सौर पैनल, एक दिन में लगभग 17 यूनिट बिजली उत्पन्न करते हैं जिसका उपयोग कोच में प्रकाश व्यवस्था के लिए किया जाता है। सौर ऊर्जा 2.7 लाख टन कार्बनडाइक्साइड उत्सर्जन को समाप्त करने और प्रति वर्ष रुपये 672 करोड.की बचत कर सकता है।

बंदर वेटर

जापान में कयाबुकिया सराय में बंदर ग्राहकों की सेवा करने के लिए इंतजार करते हैं। वदीधारी मैकाक, यट-चान और फुकु-चान, प्रमाणित रेस्तरां कर्मचारी हैं। जबकि फुकु-चान रेस्तरां में भोजन करने वाले ग्राहकों को हाथों को साफ करने के लिए तुरंत एक गर्म तौलिया उपलब्ध कराता है, जबकि बारह वर्षीय यट-चान भीड़-को खुश करने वाला हैं क्योंकि वह ग्राहक के टेबलों के बीच तीव्र गति से चलते हुए उनका आर्डर लेता हैं। यदि वे अच्छा काम करते हैं तो टिप्स के रूप में उन्हें सोया बीज दिया जाता है और उनका वेतन केले के रूप में दिया जाता हैं। रेस्तरां के मालिक कारू ओत्सुका ऐसे ही कार्यों के लिए तीन और बच्चे बंदरों को प्रशिक्षित कर रहे हैं।

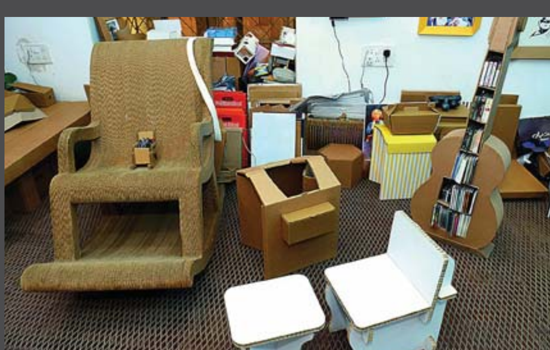

कार्डबोर्ड फर्नीचर

क्राउन से लेकर ताबूतों तक, और उनके बीच प्रत्येक फर्नीचर का निर्माण मुम्बई स्थित 'पेपर शेपर', एक कार्डबोर्ड मैन्युफैक्चरिंग कंपनी करती ह कंपनी द्वारा कार्डबोर्ड से निर्मित इन फर्नीचरों का शेल्फ-लाइफ सात वर्षों तक होता है, साथ ही ये टिकाऊ, हल्के, पुनर्चक्रण करने योग्य और पर्यावरण के अनुकूल होता है। ये पर्यावरण-अनुकूल फर्नीचर, लकडी, धातु और प्लास्टिक के विकल्प है, तथा पोर्टेबल, टिकाऊ, इकठ्ठा करने और स्टोर करने में सुविधाजनक है, और इनका पुनर्चक्रण किया जा सकता हैं। इनकी कीमत रुपये 3,000 से शुरू होती है।

के. टी पी. राधिका द्वारा संकलित, एस कृष्णप्रथीश द्वारा रूपरेखा

पीआरआईपी बेनर्जी पाकिस्तान के राष्ट्रपति से मुलाकात करते है

अगस्त 17 को, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी ने, पाकिस्तान के एनपीपीसी चेयर अज़ीज़ मेमन, डीजी (मंडल3272) ओवैस कोहरी और डीजी (मंडल3271) फैज़ा खमर के साथ इस्लामाबाद में पाकिस्तान के राष्ट्रपति ममनून हुसैन से पोलियो उन्मूलन पर किये जा रहे कार्यों पर चर्चा करने एवं समर्थन देने के लिए मुलाकात की। इसके स्वामित्व एवं एक मुश्किल परिस्थिति में पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम के प्रति प्रतिबद्धता के लिए पाकिस्तानी सरकार को धन्यवाद देते हुए, बेनर्जी ने कहा कि पोलियो को मिटाने के लिए पाकिस्तान ने एक लम्बा रास्ता तय किया है।

पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी ने पोलियो उन्मूलन में रोटरी की भूमिका पर एक पुस्तक पाकिस्तान के राष्ट्रपति ममनून हुसैन को प्रस्तुत की, चित्र में पाकिस्तान के राष्ट्रीय पोलियोप्लस समिति के अध्यक्ष अज़ीज़ मेमन भी शामिल हैं।

पीडीजी मेमन ने दर्शाया कि आज मुख्य चिंता यह है कि पोलियो कार्यक्रम पटरी से नहीं उतरना चाहिए, जैसा कि पिछले चुनाव में हुआ था। डॉक्टर राणा सफ़दर, राष्ट्रीय आपातकालीन ऑपरेशन केंद्र (एनईओसी) के समन्वयक, ने रोटरी को उसके समर्पण के लिए धन्यवाद दिया और कहा कि सभी राजनैतिक दलों के साथ समझौता हो गया है कि चुनाव के दौरान, पोलियो टीकाकरण कार्य ज़ारी रहेगा और उसे सभी राजनैतिक दलों का समर्थन प्राप्त होगा। मेमन ने आगे कहा कि क्वेटा खण्ड पर विशेष देने ध्यान की आवश्यकता है क्योंकि अस्थायी जनसंख्या पाक-अफ़ग़ान सीमा पार करती रहती है।

उन्होंने आगे कहा कि कराची एक अत्यंत परिवर्तनशील शहर है, और इसलिए कि पिछले 23 महीनों में कोई भी नया मामला दर्ज नहीं हुआ है, हम नज़रें नहीं हटा सकते या लापरवाह नहीं हो सकते, क्योंकि लगभग 23 मिलियन की जनसंख्या के साथ इसमें समुदायों का एक जातीय सम्मिश्रण है।

पीआरआईपी बेनर्जी ने पाकिस्तान के राष्ट्रपति को पोलियोप्लस स्मारक की एक नक्काशीदार नक़ल एवं पोलियोप्लस इतिहास की एक किताब भेंट की। ■

बाएं से : मंडल 3272 की डीजी फ़ैज़ा खमर, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी, पाकिस्तान के राष्ट्रपति ममनून हुसैन, एनईओसी नेशनल समन्वयक डॉ राणा सफदर, एनपीपीसी अध्यक्ष अज़ीज़ मेमन और मंडल 3271 के डीजी ओवैस ए कोहारी।

Regn. No. TN/CCN/359/2015-2017 Licensed to post without prepayment No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2015-2017
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/5271 Rotary Samachar Published on 1st of every month
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: Rs 35